

Reform or Restore?

Randolph Dunn

Chapter 1

Reformation Movement

The Renaissance 1517 – 1648 AD

Between 1118 and 1518 the Catholics and the German Emperor took turns (depending on who was in power) martyring Christians as they were discovered. About 4,000 (all throughout Central Europe [including Alsace-Lorraine in central Germany]) died as a result of persecution during these four centuries. Thus, these churches in Alsace-Lorraine are partially responsible for the influence that led Martin Luther to break from Catholicism. Luther likely never heard of their teachings, however he objected to the way the Christians were murdered by the Catholic Church. In fact, Luther was even suspected by Catholicism of being "in close connection with the heretical churches in Alsatia, (a region of Alsace)." Nevertheless, the Anabaptists churches in Europe faced persecution from both Catholics and Protestants.

The Renaissance popes were notoriously worldly. Abuses such as simony, nepotism, and financial excesses increased. The Catholic Church was riddled with venality [capable of being obtained for a price] and immorality. The sale of Indulgences was a particularly unfortunate practice because it impinged upon true spiritual repentance and improvement of life. At the same time a genuine upsurge of popular religiosity manifested itself and increased the disparity between the people's expectations and their ability to satisfy spiritual needs.

Martin Luther (1483- 1546)

Martin Luther's spiritual predecessors included men such as [John Wycliffe](#) (1328-1384) and [Johannes Hus](#) (1369-1415), who had attempted to reform the [Catholic] church along similar lines. In 1517 Luther nailed his [Ninety-Five Theses](#) to the door of the [All Saints' Church](#), in [Wittenberg](#) which served as a notice board for university-related announcements.^[1] These were points for debate that criticized the Church and the Pope. The most controversial points centered on the practice of selling indulgences and the Church's policy on [purgatory](#).

सुधार या पुनर्स्थापित करें

Randolph Dunn

अध्याय 1

सुधार आंदोलन

पुनर्जागरण 1517-1648 ई

1118 और 1518 के बीच कैथोलिक और जर्मन सम्राट ने बारी-बारी से (इस पर निर्भर करते हुए कि सत्ता में कौन था) ईसाइयों को शहीद कर दिया क्योंकि वे खोजे गए थे। इन चार शताब्दियों के दौरान लगभग 4,000 (पूरे मध्य यूरोप में [मध्य जर्मनी में अल्सेस-लोरेन सहित]) उत्पीड़न के परिणामस्वरूप मृत्यु हो गई। इस प्रकार, एल्सेस-लोरेन में ये चर्च उस प्रभाव के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार हैं जिसने मार्टिन लूथर को कैथोलिक धर्म से अलग होने के लिए प्रेरित किया। लूथर ने संभवतः उनकी शिक्षाओं के बारे में कभी नहीं सुना, हालाँकि उन्होंने कैथोलिक चर्च द्वारा ईसाइयों की हत्या के तरीके पर आपत्ति जताई। वास्तव में, लूथर को कैथोलिक धर्म द्वारा "अल्सतिया, (अल्सेस का एक क्षेत्र) में विधर्मी चर्चों के निकट संबंध" होने का भी संदेह था। फिर भी, यूरोप में एनाबैप्टिस्ट चर्चों को कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों से उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।

पुनर्जागरण के पोप कुख्यात रूप से सांसारिक थे। भाई-भतीजावाद, भाई-भतीजावाद और वित्तीय ज्यादतियों जैसे दुर्व्यवहार बढ़ गए। कैथोलिक चर्च में बिकाऊपन [कीमत चुकाने में सक्षम] और अनैतिकता का बोलबाला था। भोग की बिक्री एक विशेष रूप से दुर्भाग्यपूर्ण प्रथा थी क्योंकि यह सच्चे आध्यात्मिक पश्चाताप और जीवन के सुधार पर प्रभाव डालती थी। साथ ही लोकप्रिय धार्मिकता का एक वास्तविक उछाल प्रकट हुआ और लोगों की अपेक्षाओं और आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने की उनकी क्षमता के बीच असमानता में वृद्धि हुई।

मार्टिन लूथर(1483-1546)

मार्टिन लूथर के आध्यात्मिक पूर्ववर्तियों में पुरुष शामिल थे जैसे [जॉन विक्लिफ](#) (1328-1384) और [जोहान्स हस](#) (1369-1415), जिन्होंने [कैथोलिक] चर्च को इसी तरह से सुधारने का प्रयास किया था। 1517 में लूथर ने उसे ठोंक दिया [निन्यानबे थीसिस](#) के दरवाजे पर [ऑल सेंट्स चर्च](#), में [वितेनबर्ग](#) जो विश्वविद्यालय से संबंधित घोषणाओं के लिए नोटिस बोर्ड के रूप में कार्य करता था।^[1] ये बहस के बिंदु थे जिन्होंने चर्च और पोप की आलोचना की। सबसे विवादास्पद बिंदु भोग बेचने की प्रथा और चर्च की नीति पर केंद्रित [थेयातना](#)।

en.wikipedia.org/wiki/Protestant_Reformation

en.wikipedia.org/wiki/Protestant_Reformation

In 1520, Luther published three pamphlets that

- a. Described Rome's abuses
- b. Demanded reforms in morals and in dogma
- c. Attacked some of the sacraments, transubstantiation, and worship of the saints
- d. Insisted that the Bible alone constituted the final authority for a Christian.

therestorationmovement.com/lessons/chlesson03.htm

Luther espoused ¹ -- "What is not *against* Scripture is *for* Scripture, and Scripture for it."

REFLECTIONS by [Al Maxey](#) Issue #401, June 30, 2009 from wikisource.org/wiki/AnteNicene_Fathers/Volume_III//Apologetic_The_Chaplet,_or_De_Corona/Chapter_II

Luther was a threat [at least in Germany]. When he founded his "church" in 1520, Catholics knew they had a problem. The Anabaptist churches were mistakenly lumped together with them. Catholics were running scared, and killing everyone (Christian and protestant alike). Catholics were no longer satisfied with killing Christians as they were accidentally found; now they were actually hunted. In Alsace-Lorraine alone, out of nearly 100,000 members, about 42,000 were burned for not renouncing Christianity in favor of Catholicism. This massacre occurred from about 1525 to 1536. Circumstances were similar everywhere. By 1595, The Christians in Alsace-Lorraine numbered merely 1,000. Most congregations had been extinguished. Congregations in Moravia, though severely depleted in membership, managed to flee to Hungary, Poland, Ukraine, and Crimea. By 1799, Eulogius Schneider (a catholic priest) beheaded the last three martyrs for not participating with Napoleon in the French Revolution. (adapted from

1520 में, लूथर ने तीन पैम्फलेट प्रकाशित किए एक। रोम की गालियों का वर्णन किया बी। नैतिकता और हठधर्मिता में सुधार की मांग की सी। कुछ संस्कारों पर हमला किया, परिवर्तन, और संतों की पूजा डी। जोर देकर कहा कि केवल बाइबिल ही एक ईसाई के लिए अंतिम अधिकार का गठन करती है।

therestorationmovement.com/lessons/chlesson03.htm

लूथर ने समर्थन किया- "जो शास्त्र के विरुद्ध नहीं है, वह शास्त्र के लिए है, और शास्त्र उसके लिए है।"

प्रतिबिंब द्वारा [अल मैक्सी](#) अंक #401,30 जून 2009 wikisource.org/wiki/AnteNicene_Fathers/Volume_III//Apologetic_The_Chaplet,_or_De_Corona/Chapter_II

लूथर एक खतरा था [कम से कम जर्मनी में]। जब उन्होंने 1520 में अपने "चर्च" की स्थापना की, तो कैथोलिक जानते थे कि उन्हें कोई समस्या है। एनाबैपटिस्ट चर्चों को गलती से उनके साथ जोड़ दिया गया था। कैथोलिक डरे हुए थे, और सभी को मार रहे थे (ईसाई और प्रोटेस्टेंट समान)। कैथोलिक अब ईसाइयों को मारने से संतुष्ट नहीं थे क्योंकि वे गलती से मिल गए थे; अब वे वास्तव में शिकार किए गए थे। अकेले एल्सेस-लोरैन में, लगभग 100,000 सदस्यों में से लगभग 42,000 को कैथोलिक धर्म के पक्ष में ईसाई धर्म का त्याग नहीं करने के लिए जला दिया गया था। यह नरसंहार करीब 1525 से 1536 के बीच हुआ था। हर जगह परिस्थितियां एक जैसी थीं। 1595 तक, एल्सेस-लोरैन में ईसाइयों की संख्या केवल 1,000 थी। अधिकांश सभाओं को बुझा दिया गया था। मोराविया में मंडलियां, हालांकि सदस्यता में गंभीर रूप से कम हो गईं, हंगरी, पोलैंड, यूक्रेन और क्रीमिया में भागने में सफल रहीं। 1799 तक, (से अनुकूलित allexperts.com/q/Critics-Catholicism-3337/Questions-1.htm [मार्विन हावर्ड](#))

परिणाम यूरोप में चर्च का लगभग विनाश था।

उलरिच ज्विंगली (1484 -1531)

स्विट्जरलैंड में सुधार शुरू में ज्यूरिख में पुजारी उलरिच ज्विंगली के नेतृत्व में विकसित हुआ। ज्विंगली इरास्मस और ईसाई मानवतावाद से प्रभावित थे। वह बाइबल के अपने अध्ययन और लूथरन के साथ संपर्क से ईसाई धर्म की एक

¹ Refer to thebiblewayonline.com study Silence of the Scripture.

⁹ [Thebiblewayonline.com](http://thebiblewayonline.com) का संदर्भ लें पवित्रशास्त्र की चुप्पी का अध्ययन करें।

allexperts.com/q/Critics-Catholicism-3337/Questions-1.htm
Marvin Howard)

The result was the near extermination of the church in Europe.

Ulrich Zwingli (1484 –1531)

The Reformation in Switzerland initially developed in Zurich under the leadership of the priest Ulrich Zwingli. Zwingli had been influenced by Erasmus and by Christian humanism. He arrived at an evangelical understanding of Christianity from his study of the Bible and from contacts with Lutherans. On Jan. 1, 1519, he began a 6-year series of sermons on the New Testament that moved the city council and the people of Zurich toward reform. The favorable response to The Sixty-Seven Articles, which he prepared for public disputation with a papal representative in 1523, proved the popularity of his program. He called for the abolition of the Mass (and its replacement by a symbolic Lord's Supper), independence from episcopal control, and a reform of the city-state in which both priests and Christian magistrates would conform to the will of God.

mb-soft.com/believe/txn/reformat.htm

He attacked the custom of fasting during Lent, corruption in the ecclesiastical hierarchy, promoted clerical marriage, and attacked the use of images in places of worship.
en.wikipedia.org/wiki/Huldrych_Zwingli

Zwingli maintained that *anything*² "not enjoined or taught in the New Testament should be unconditionally *rejected*." REFLECTIONS by [Al Maxey](#) Issue #401, June 30, 2009 taken from

http://en.wikisource.org/wiki/AnteNicene_Fathers/Volume_III/Apologetic/The_Chaplet,_or_De_Corona/Chapter_II

Radical Reformation

Beginning in Switzerland and Germany, the Radical Reformation birthed many [Anabaptist](#) groups throughout [Europe](#). Historically, the radical reformers operated under several names.

इंजील समझ पर पहुंचे। 1 जनवरी, 1519 को, उन्होंने न्यू टेस्टामेंट पर उपदेशों की 6 साल की श्रृंखला शुरू की, जिसने नगर परिषद और ज्यूरिख के लोगों को सुधार की ओर अग्रसर किया। द सिक्सटी-सेवन आर्टिकल्स के अनुकूल प्रतिक्रिया, जिसे उन्होंने 1523 में एक पोप प्रतिनिधि के साथ सार्वजनिक विवाद के लिए तैयार किया, ने उनके कार्यक्रम की लोकप्रियता को साबित कर दिया। उन्होंने मास के उन्मूलन (और एक प्रतीकात्मक लॉर्ड्स सपर द्वारा इसके प्रतिस्थापन), एपिस्कोपल नियंत्रण से स्वतंत्रता, और शहर-राज्य में सुधार के लिए कहा, जिसमें दोनों पुजारी और ईसाई मजिस्ट्रेट भगवान की इच्छा के अनुरूप होंगे।

mb-soft.com/believe/txn/reformat.htm

उन्होंने लेंट के दौरान उपवास के रिवाज पर हमला किया, सनकी पदानुक्रम में भ्रष्टाचार, लिपिक विवाह को बढ़ावा दिया और पूजा स्थलों में छवियों के इस्तेमाल पर हमला किया।
en.wikipedia.org/wiki/Huldrych_Zwingli

ज़िंगली ने कहा कि कुछ भी¹⁰ नए नियम में शामिल या सिखाया नहीं गया बिना शर्त खारिज कर दिया जाना चाहिए।" प्रतिबिंब द्वारा [अल मैक्सी](#) अंक #401, 30 जून 2009 से लिया गया

http://en.wikisource.org/wiki/AnteNicene_Fathers/Volume_III/Apologetic/The_Chaplet,_or_De_Corona/Chapter_II

कट्टरपंथी सुधार

स्विटज़रलैंड और जर्मनी में शुरू होकर, क्रांतिकारी सुधार ने कई लोगों को जन्म दिया [पुनर्दीक्षादाता](#) पूरे [समूह यूरोप](#)। ऐतिहासिक रूप से, कट्टरपंथी सुधारकों ने कई नामों से काम किया।

ब्रदरन या स्विस ब्रदरन- के एक समूह थे [कट्टरपंथी इंजील सुधारक](#) जिसने शुरुआत में पीछा किया [उलरिच ज़िंगली](#) का [ज्यूरिख](#), लेकिन बाद में आंदोलन शुरू किया जिसे अब के रूप में जाना जाता है [अनाबपतिस्मा](#)। 1525 में, [फेलिक्स मंज़](#), [कॉनराड ग्रीबेल](#), [जॉर्ज ब्लौरॉक](#) और अन्य ने एक नया समूह बनाया, जिसे अस्वीकार कर दिया गया [शिशु बपतिस्मा](#) और प्रचार किया कि ब्रदरन ने जो दावा किया वह सच्ची ईसाई धर्म था। पर आधारित [सोला स्क्रिप्टुरा](#) [अकेले धर्मग्रंथ], स्विस ब्रदरन ने घोषणा की कि चूंकि बाइबिल में शिशु बपतिस्मा का उल्लेख नहीं है, इसलिए चर्च द्वारा इसका अभ्यास नहीं किया जाना चाहिए। इसे बाद में उलरिच ज़िंगली ने खारिज कर दिया था। नतीजतन, एक सार्वजनिक विवाद

² Refer to thebiblewayonline.com - Silence of the Scripture.

¹⁰ [Thebiblewayonline.com](http://thebiblewayonline.com) का संदर्भ लें - शास्त्र की चुप्पी।

Brethren or Swiss Brethren – were a group of [radical evangelical reformers](#) who initially followed [Ulrich Zwingli](#) of [Zürich](#), but later started the movement now known as [Anabaptism](#). In 1525, [Felix Manz](#), [Conrad Grebel](#), [George Blaurock](#) and others formed a new group, which rejected [infant baptism](#) and preached what the Brethren claimed was true Christianity. Based on [Sola Scriptura](#) [scripture alone], the Swiss Brethren declared that since the Bible does not mention infant baptism, it should not be practiced by the church. This was subsequently refuted by Ulrich Zwingli. Consequently, there was a public dispute, in which the council affirmed Zwingli's position. This crystallized the Swiss Brethren and resulted in their persecution by all other reformers as well as the Catholic Church.

It is important to note that the Anabaptists were first persecuted by the Protestants under Zwingli. They had arisen on his watch, in his town, and were his former disciples. Perhaps he was afraid that the existence of several rival versions of Protestant would irreparably harm his chances of accomplishing any reform. Perhaps... but nothing can justify his actions. He had the magistrate's ear; he was in charge of Reform. The council declared that rebaptizing was a capital crime, so let's enforce it.

Felix Manz became the first Anabaptist martyr in 1527, ten short years after Luther had nailed up his theses. He was drowned in the river right in the middle of Zurich. Other Anabaptists were beaten or banished. These became standard practices in Protestant territories.

Because of persecution by the authorities, many of these Anabaptists moved from Switzerland to neighboring countries. Some of the Swiss Brethren became known as [Mennonites](#) after the division of 1693, a disagreement between the [Jacob Amman](#) and [Hans Reist](#) groups.
en.wikipedia.org/wiki/Swiss_Brethren

[Mennonites](#) - an Anabaptist denomination named after the Frisian, Menno Simons (1496–1561). The teachings of the Mennonites were founded on their belief in both the mission and ministry of Jesus Christ, which they held to with great conviction

हुआ, जिसमें परिषद ने ज़िंगली की स्थिति की पुष्टि की। इसने स्विस ब्रदरन को क्रिस्टलीकृत किया और इसके परिणामस्वरूप अन्य सभी सुधारकों के साथ-साथ कैथोलिक चर्च ने उनका उत्पीड़न किया।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि एनाबैप्टिस्टों को सबसे पहले ज़िंगली के तहत प्रोटेस्टेंटों द्वारा सताया गया था। वे उसके पहरे पर, उसके नगर में उठे थे, और उसके पूर्व शिष्य थे। शायद उन्हें डर था कि प्रोटेस्टेंट के कई प्रतिद्वंद्वी संस्करणों का अस्तित्व किसी भी सुधार को पूरा करने की उनकी संभावनाओं को अपूरणीय रूप से नुकसान पहुंचाएगा। शायद ... लेकिन कुछ भी उसके कार्यों को सही नहीं ठहरा सकता। उसके पास मजिस्ट्रेट का कान था; वह सुधार के प्रभारी थे। परिषद ने घोषणा की कि पुनर्बपतिस्मा देना एक बड़ा अपराध है, तो चलिए इसे लागू करते हैं।

फेलिक्स मंज़ 1527 में पहला एनाबैप्टिस्ट शहीद बना, लूथर के शोध प्रबंधों को ठोकने के दस साल बाद। वह ज्यूरिख के ठीक बीच में नदी में डूब गया था। अन्य एनाबैप्टिस्टों को पीटा गया या भगा दिया गया। ये प्रोटेस्टेंट प्रदेशों में मानक अभ्यास बन गए।

अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न के कारण, इनमें से कई एनाबैप्टिस्ट स्विट्ज़रलैंड से पड़ोसी देशों में चले गए। कुछ स्विस भाइयों के रूप में जाना जाने लगा [मेनोनाइट्स](#) 1693 के विभाजन के बाद, के बीच एक असहमतिया [कूब अम्मान और हंस रिस्ट](#) समूह।
en.wikipedia.org/wiki/Swiss_Brethren

[मेनोनाइट्स](#) - फ़िसियाई, मेनो सिमोंस (1496-1561) के नाम पर एक एनाबैप्टिस्ट संप्रदाय। मेनोनाइट्स की शिक्षाओं को यीशु मसीह के मिशन और मंत्रालय दोनों में उनके विश्वास पर स्थापित किया गया था, जिसे वे विभिन्न रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राज्यों द्वारा उत्पीड़न के बावजूद बड़े विश्वास के साथ रखते थे। लड़ाई के बजाय, बहुसंख्यक पड़ोसी राज्यों में भागकर बच गए, जहाँ शासक परिवार वयस्क बपतिस्मा में अपने कट्टरपंथी विश्वास के प्रति सहिष्णु थे। en.wikipedia.org/wiki/Mennonite

[हटराइट्स](#)- मेनोनाइट्स और अमीश के साथ एनाबैप्टिस्ट के साथ एक सामान्य वंश साझा करें और तार्किक रूप से पालन करें, समान विश्वासों और सिद्धांतों को साझा करें। हटराइट्स एक प्रमुख पहलू में भिन्न हैं: वे अपनी संपत्ति को साझा करने में विश्वास करते हैं जैसा कि मसीह और उनके प्रेरितों द्वारा प्रदर्शित किया गया था और जैसा कि बाद में आगे परिष्कृत

despite persecution by the various Roman Catholic and Protestant states. Rather than fight, the majority survived by fleeing to neighboring states where ruling families were tolerant of their radical belief in adult baptism.
en.wikipedia.org/wiki/Mennonite

Hutterites – share a common ancestry with the Anabaptists, along with the Mennonites and Amish and as would logically follow, share many of the same beliefs and doctrine. Hutterites differ in one major aspect: they believe in sharing their possessions in common as demonstrated by Christ and His Apostles and as later further refined and described in the Book of Acts.
hutterites.org/HutteriteHistory/index.htm

Amish - The Amish movement descends from the 16th century fellowship known as the Swiss Brethren or Anabaptists, and part of the Radical Reformation. Anabaptist means "one who baptizes again"; a reference to those who had been baptized as infants, but later adopted a belief in "believer's baptism" and therefore were baptized as believing adults. The Amish movement takes its name from Jakob Ammann (c1656 –c1730), who believed Mennonites were drifting away from the teachings of Menno Simons and the 1632 Mennonite Dordrecht Confession of Faith. The Amish like the Swiss Anabaptists were scattered by persecution throughout Alsace.
wikipedia.org/wiki/Amish#History

But these Radical Reformers or Anabaptists referred to themselves as: Brethren and Believers and Christians.

In 1524, when the disputations at Zurich were still very recent, Balthasar Hubmaier (living in Catholic territory) published several articles representative of his theology. Those below are taken from Estep:

1. Faith alone makes us holy before God.
2. This faith is the acknowledgment of the mercy of God which he has shown us in the offering of his only begotten son. This excludes all sham Christians, who have nothing more than an historical faith.
3. Such faith cannot remain passive but must break out to God in thanksgiving and to

किया गया और अधिनियमों की पुस्तक में वर्णित किया गया।
hutterites.org/HutteriteHistory/index.htm

अमिश- अमीश आंदोलन 16वीं सदी की फेलोशिप से निकला है जिसे के रूप में जाना जाता है स्विस भाइयों या एनाबैप्टिस्ट, और का हिस्सा है कट्टरपंथी सुधार. पुनर्दीक्षादाता का अर्थ है "वह जो फिर से बपतिस्मा लेता है"; उन लोगों के संदर्भ में जिन्हें शिशुओं के रूप में बपतिस्मा दिया गया था, लेकिन बाद में उन्होंने "आस्तिक के बपतिस्मा" में एक विश्वास अपनाया और इसलिए विश्वास करने वाले वयस्कों के रूप में बपतिस्मा लिया। अमीश आंदोलन इसका नाम लेता है जेकब अम्मन (c1656 – c1730), जो मानते थे कि मेनोनाइट्स की शिक्षाओं से दूर जा रहे थे मेनो सिमंस और 1632 मेनोनाइट विश्वास की डॉक्ट्रिन स्वीकारोक्ति. स्विस एनाबैप्टिस्ट की तरह अमीश पूरे अल्सेस में उत्पीड़न से बिखर गए थे।
wikipedia.org/wiki/Amish#History

लेकिन इन कट्टरपंथी सुधारकों या एनाबैप्टिस्टों ने खुद को भाइयों और विश्वासियों और ईसाइयों के रूप में संदर्भित किया।

1524 में, जब ज्यूरिख में विवाद अभी हाल ही में हुए थे, बल्थासार हुबैयर (कैथोलिक क्षेत्र में रहने वाले) ने अपने धर्मशास्त्र के प्रतिनिधि कई लेख प्रकाशित किए। नीचे वे एस्टेप से लिए गए हैं:

8. केवल विश्वास ही हमें परमेश्वर के सामने पवित्र बनाता है।
9. यह विश्वास परमेश्वर की दया की स्वीकृति है जो उसने हमें अपने इकलौते पुत्र की भेंट में दिखाई है। इसमें सभी नकली ईसाई शामिल नहीं हैं, जिनके पास एक ऐतिहासिक विश्वास से ज्यादा कुछ नहीं है।
10. इस तरह का विश्वास निष्क्रिय नहीं रह सकता है, लेकिन भगवान को धन्यवाद देने के लिए और भाईचारे के प्यार के सभी प्रकार के कार्यों में मानव जाति के लिए टूटना चाहिए। इसलिए सभी व्यर्थ धार्मिक कार्य, जैसे मोमबत्तियाँ, खजूर की शाखाएँ, और पवित्र जल को अस्वीकार कर दिया जाएगा।
11. केवल वही कार्य अच्छे हैं जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने हमें दी है और केवल वे ही बुरे हैं जिन्हें उसने मना किया है।
12. सामूहिक बलिदान नहीं बल्कि मसीह की मृत्यु का स्मरण है। इसलिए, यह मृतकों या जीवितों के लिए भेंट नहीं है...

mankind in all kinds of works of brotherly love. Hence all vain religious acts, such as candles, palm branches, and holy water will be rejected.

4. Those works alone are good which God has commanded us and those alone are evil which he has forbidden.
5. The mass is not a sacrifice but a remembrance of the death of Christ. Therefore, it is not an offering for the dead or for the living...
6. As often as the memorial is observed should the death of the Lord be preached in the language of the people. . .
7. As every Christian believes for himself and is baptized, so each individual should see and judge by the Scriptures if he is rightly provided food and drink by his pastor.
ritchies.net/p4wk4.htm.

In February 1527 Michael Sattler, a Swiss Anabaptist, and others put forth the Schleitheim Confession. Its main points were:

1. Baptism was to be administered to believers only. Infant baptism, "the greatest and first abomination of the pope," is not to be practiced.
2. The "ban" [excommunication or withdrawal] should be observed by local churches against those who fall into sin, after a first and second private warning.
3. The bread and wine should only be broken with baptized believers, and no others.
4. True Christians should be separated from the world system, including its "church attendance", oaths, the sword, etc.
5. There should be shepherds among the flock, who will preach, etc., and will be supported by the church. If a pastor is taken from the flock, another should be ordained in his place.
6. The "sword," i.e., the magistracy or rulership, is outside of Christ's perfection and is to be left to the world to exercise. Christians should not exercise self-defense nor become magistrates, nor use the secular sword against spiritual offenses [government persecuted for being in the wrong religion].

13. जितनी बार स्मारक मनाया जाता है, उतनी बार लोगों की भाषा में प्रभु की मृत्यु का प्रचार किया जाना चाहिए। .

14. जैसा कि प्रत्येक ईसाई अपने लिए विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को शास्त्रों को देखना और न्याय करना चाहिए कि क्या उसे अपने पादरी द्वारा सही ढंग से भोजन और पेय प्रदान किया जाता है। ritchies.net/p4wk4.htm.

फरवरी 1527 में माइकल सैटलर, एक स्विस एनाबैप्टिस्ट, और अन्य लोगों ने श्लीथीम अंगीकार प्रस्तुत किया। इसके मुख्य बिंदु थे:

8. बपतिस्मा केवल विश्वासियों को दिया जाना था। शिशु बपतिस्मा, "पोप का सबसे बड़ा और पहला घृणित कार्य," का अभ्यास नहीं किया जाना चाहिए।
9. "प्रतिबंध" [बहिष्कार या वापसी] स्थानीय चर्चों द्वारा पहली और दूसरी निजी चेतावनी के बाद पाप में गिरने वालों के खिलाफ मनाया जाना चाहिए।
10. रोटी और दाख-मदिरा केवल बपतिस्मा प्राप्त विश्वासियों के साथ ही तोड़ी जानी चाहिए, और किसी के साथ नहीं।
11. सच्चे मसीहियों को विश्व व्यवस्था से अलग कर देना चाहिए, जिसमें इसकी "चर्च उपस्थिति", शपथ, तलवार आदि शामिल हैं।
12. झुंड में चरवाहे होने चाहिए, जो प्रचार करेंगे, आदि, और चर्च द्वारा समर्थित होंगे। यदि झुंड में से एक पादरी लिया जाता है, तो उसके स्थान पर दूसरे को नियुक्त किया जाना चाहिए।
13. "तलवार," अर्थात्, जादूगर या शासन, मसीह की पूर्णता के बाहर है और इसे व्यायाम करने के लिए दुनिया पर छोड़ दिया जाना है। ईसाइयों को आत्मरक्षा नहीं करनी चाहिए और न ही मजिस्ट्रेट बनना चाहिए, न ही आध्यात्मिक अपराधों के खिलाफ धर्मनिरपेक्ष तलवार का इस्तेमाल करना चाहिए [सरकार को गलत धर्म में होने के लिए सताया गया]।
14. ईसाइयों को शपथ नहीं लेनी चाहिए, लेकिन उनकी हाँ को हाँ और उनकी ना को ना होने दें। ritchies.net/p4wk4.htm

20 मई, 1527 को, एनाबैप्टिस्ट श्लीथीम कन्फेशन के लेखक माइकल सैटलर को कैथोलिक अधिकारियों द्वारा मार डाला गया था। भले ही कैथोलिक राजा फर्डिनेंड ने डूबने ("तीसरा बपतिस्मा") को अनाबपतिस्मा के लिए सबसे अच्छा मारक घोषित किया था। सैटलर को उसकी जीभ काट देने, उसके मांस को गर्म लोहे से काटने और फिर उसे दांव पर जलाने की

7. Christians should not make an oath, but let their
yes be yes and their no be no.
ritchies.net/p4wk4.htm

On May 20, 1527, Michael Sattler, the author of the Anabaptist *Schlietheim Confession*, was executed by Catholic authorities. Even though the Catholic King Ferdinand had declared drowning (the "third baptism") the best antidote to Anabaptism. Sattler had been sentenced to have his tongue cut out, his flesh cut with hot irons, and then to be burned at the stake. Others were burned or drowned by Catholic authorities. Burning seems to have been favored by Catholics, less by Protestants.

In addition to the above, Protestant and Catholic nations alike resorted to torture and other forms of abuse. Estep estimates that thousands died in Europe in the sixteenth century, but hard numbers will never be available.
ritchies.net/p4wk4.htm

In summary we see for over 400 years a few people scattered over Europe had a desire to use scripture alone and return to God; i.e.:

- | | |
|----------------------|---------------|
| a. Waldensians | – around 1179 |
| b. Albigenses | – around 1200 |
| c. Wycliffe | – 1328 - 1384 |
| d. Hus | – 1372 - 1415 |
| e. Chelčický | – 1374 - 1460 |
| f. Luther | – 1483 - 1546 |
| g. Zwingli | – 1484 - 1531 |
| h. Radical Reformers | – 1525 |

Another thing in common was that they were all persecuted. But that should not be any surprise for Jesus told his disciples:

This is my command: Love each other. If the world hates you, keep in mind that it hated me first. If you belonged to the world, it would love you as its own. As it is, you do not belong to the world, but I have chosen you out of the world. That is why the world hates you. Remember the words I spoke to you: 'No servant is greater than his master.' If they persecuted me, they will persecute you also. If they obeyed my teaching, they will obey yours also. They will treat you this way

सजा दी गई थी। दूसरों को कैथोलिक अधिकारियों द्वारा जला दिया गया या डूब गया। ऐसा प्रतीत होता है कि जलाने को कैथोलिक कम, प्रोटेस्टेंट कम पसंद करते थे।

उपरोक्त के अलावा, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक राष्ट्रों ने समान रूप से यातना और अन्य प्रकार के दुर्व्यवहार का सहारा लिया। एस्टेप का अनुमान है कि सोलहवीं शताब्दी में यूरोप में हजारों लोग मारे गए, लेकिन कठिन संख्या कभी उपलब्ध नहीं होगी। ritchies.net/p4wk4.htm

संक्षेप में हम देखते हैं कि 400 से अधिक वर्षों से यूरोप में बिखरे हुए कुछ लोगों में केवल शास्त्र का उपयोग करने और परमेश्वर के पास लौटने की इच्छा थी; अर्थात:

- | | |
|---------------------|---------------|
| a. वाल्डेंसियन | - लगभग 1179 |
| b. अल्बिगेंस | - लगभग 1200 |
| c. वाईक्लिफ | - 1328 - 1384 |
| d. हुस | - 1372 - 1415 |
| e. चेल्लिक्स्की | - 1374 - 1460 |
| f. लूथर | - 1483 - 1546 |
| g. ज्विनाली | - 1484 - 1531 |
| h. कट्टरपंथी सुधारक | - 1525 |

एक और बात समान थी कि वे सभी सताए गए थे। लेकिन इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि यीशु ने अपने शिष्यों से कहा:

यह मेरी आज्ञा है: एक दूसरे से प्रेम करो। यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो याद रखना कि उसने पहले मुझ से बैर रखा। यदि आप दुनिया के होते, तो यह आपको अपने जैसा प्यार करता। वैसे तो तुम संसार के नहीं, परन्तु मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है। इसलिए दुनिया आपसे नफरत करती है। उन शब्दों को याद रखो जो मैंने तुमसे कहे थे: 'कोई भी सेवक अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता।' यदि उन्होंने मुझे सताया, तो वे तुम्हें भी सताएंगे। यदि उन्होंने मेरी शिक्षा मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे। वे मेरे नाम के कारण तुम्हारे साथ ऐसा बर्ताव करेंगे, क्योंकि वे उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 15:17-21)

एक और सुधारक प्रकट होता है। एक जिसने अपने सिद्धांत के लिए अकेले धर्मग्रंथ का उपयोग नहीं किया बल्कि ऑगस्टाइन के सिद्धांतों को अपनाया।

जॉन केल्विन(1509-1564)

केल्विन को पेरिस विश्वविद्यालय में उनके आलोचनात्मक, दोष खोजने वाले रवैये के कारण "द एक्जेटिव केस" के रूप में

because of my name, for they do not know the One who sent me. (John 15:17-21)

Another reformer appears. One who did not use scripture alone for his doctrine but adopted those of the Augustine.

John Calvin (1509-1564)

Calvin was known at the University of Paris as "The Accusative Case" because of his critical, fault-finding attitude. He changed from the study of law to theology at his father's wish. Influenced by the humanists Erasmus and Lefevre, he began to study the Bible and Luther's writing. Sometime later, probably 1533, he had a "conversion experience" and began his religious career. In 1534 he left France due to persecution.

In 1541 he returned to Geneva where he became very powerful. "Virtually every breath and every heartbeat of its citizens was controlled by Calvin. Calvin was guilty of inflicting horrible tortures on those who opposed him. The most notorious case of this was Servetus, against whom Calvin served as prosecutor.

Servetus was condemned to death by slow burning. Calvin claimed to have sought to change the form of execution, but there is not a shred of evidence to show this, either in the minutes of the trial or elsewhere. He also accused a number of opponents of treason and put them on the rack [an engine of torture, consisting of a large frame, upon which the body was gradually stretched until, sometimes, the joints were dislocated (dictionary.die.net/to put to the rack)] to obtain proof of his accusations. To be fair, it should be pointed out that the Protestants were only following the age-old example of the Catholic Church in using civil power to enforce spiritual principles. Calvin ruled with an iron hand until his death." "Ism's" Calvinism, REW, pages 9-12

Calvin's Institutes of the Christian Religion³ reveals his theology. They did not originate with Calvin but merely systematized, arranged and developed by him. He borrowed frequently from Augustine, and

जाना जाता था। उन्होंने अपने पिता की इच्छा पर कानून के अध्ययन से धर्मशास्त्र में परिवर्तन किया। मानवतावादी इरास्मस और लेफ़ेवरे से प्रभावित होकर, उन्होंने बाइबल और लूथर के लेखन का अध्ययन करना शुरू किया। कुछ समय बाद, शायद 1533 में, उन्हें "परिवर्तन का अनुभव" हुआ और उन्होंने अपना धार्मिक जीवन शुरू किया। 1534 में उत्पीड़न के कारण उन्होंने फ्रांस छोड़ दिया।

1541 में वह जिनेवा लौट आया जहाँ वह बहुत शक्तिशाली हो गया। "लगभग हर सांस और इसके नागरिकों की हर धड़कन केल्विन द्वारा नियंत्रित की गई थी। केल्विन उन लोगों पर भयानक अत्याचार करने का दोषी था जिन्होंने उसका विरोध किया था। इसका सबसे कुख्यात मामला सेर्वेटस था, जिसके खिलाफ केल्विन ने अभियोजक के रूप में काम किया था।

धीमी गति से जलने से सेर्वेटस की मौत की निंदा की गई। केल्विन ने दावा किया कि उसने निष्पादन के रूप को बदलने की मांग की है, लेकिन यह दिखाने के लिए सबूत का एक टुकड़ा नहीं है, या तो परीक्षण के मिनटों में या कहीं और। उन्होंने कई विरोधियों पर राजद्रोह का भी आरोप लगाया और उन्हें रैक पर डाल दिया [यातना का एक इंजन, जिसमें एक बड़ा फ्रेम होता है, जिस पर शरीर को धीरे-धीरे खींचा जाता था, कभी-कभी, जोड़ों को अव्यवस्थित कर दिया जाता था (शब्दकोश.die.net/to रैक पर डाल दिया)] अपने आरोपों का सबूत प्राप्त करने के लिए। निष्पक्ष होने के लिए, यह बताया जाना चाहिए कि प्रोटेस्टेंट आध्यात्मिक सिद्धांतों को लागू करने के लिए नागरिक शक्ति का उपयोग करने में कैथोलिक चर्च के सदियों पुराने उदाहरण का ही अनुसरण कर रहे थे। केल्विन ने अपनी मृत्यु तक लोहे के हाथ से शासन किया। "इस्म" केल्विनवाद, REW, पृष्ठ 9-12

केल्विन के ईसाई धर्म के संस्थान¹¹ उनके धर्मशास्त्र को प्रकट करता है। वे केल्विन के साथ उत्पन्न नहीं हुए थे, बल्कि उनके द्वारा व्यवस्थित, व्यवस्थित और विकसित किए गए थे। उन्होंने अक्सर ऑगस्टाइन से उधार लिया था, और ऑगस्टाइन ने एम्ब्रोस और अन्य चर्च फादर्स से उधार लिया था।¹² इसमें कोई संदेह नहीं है कि पिता गूढ़ज्ञानवादी विधर्म से प्रभावित थे और यहाँ तक कि पदार्थ की पुरानी फारसी अवधारणाओं से भी कि वह अपने आप में स्वाभाविक रूप से दृष्ट है। केल्विन ने अपने सिस्टम को पहले के सुधारकों, विशेष रूप से लूथर और बोसर, और अन्य लोगों द्वारा रखी गई नींव पर बनाया था,

³ Refer to thebiblewayonline.com study - Institutes of the Christian Religion.

¹¹ thebiblewayonline.com अध्ययन का संदर्भ लें - ईसाई धर्म के संस्थान।

¹² ऑगस्टाइन की सोच और विश्वास पृष्ठ 31 का संदर्भ लें।

Augustine had borrowed from Ambrose and other church Fathers. ⁴ No doubt the Fathers were influenced by the Gnostic heresy and even by the old Persian concepts of matter being inherently evil within itself. Calvin built his system upon the foundation laid by the earlier reformers, especially Luther and Bucer, and others but his peculiar gifts of learning, of logic, and style made him pre-eminently the outstanding theologian of the Reformed movement. Underlying the whole system was the dominant thought of the infinite and transcendent sovereignty of God, to know whom man's supreme end is.

But not like prior reformers who desired to rely only on the Bible Calvin wrote his own doctrines in Institutes of the Christian Religion which are summarized below and are discussed individually later.

Sovereignty - God is ultimate; therefore, His will is ultimate and final.

Unconditional election - According to His sovereign will He foreordained all things. He foreordained sin itself. He did this for His own glory. To further enhance His own glory, He predetermined that of sinners, He would save some and condemn others. He did this according to His own will so that it has nothing to do with anything men do.

Limited Atonement - For His elect, God has provided atonement and salvation through the blood of His Son Jesus Christ.

Total hereditary depravity - The problem is that through Adam's sin, his nature was corrupted, and this nature has been passed down to his descendants.

Irresistible grace - Having this corrupt nature, men cannot come to the knowledge of God by themselves. Even the elect cannot respond to God, cannot have faith, until the Holy Spirit opens their hearts to believe and understand. The grace of God, exerted in behalf of His elect, and, according to His sovereign will, cannot be thwarted.

Perseverance of the saints - The elect will be saved. His grace will sustain the elect and will not be removed so that they cannot be lost. Their salvation is sure.

Jacobus Arminius (1560-1609)

लेकिन उनके सीखने, तर्क और शैली के विशिष्ट उपहारों ने उन्हें सुधारवादी आंदोलन के उत्कृष्ट धर्मशास्त्री बना दिया। पूरी व्यवस्था के नीचे ईश्वर की अनंत और पारलौकिक संप्रभुता का प्रमुख विचार था, यह जानने के लिए कि मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य कौन है।

लेकिन पूर्व सुधारकों की तरह नहीं, जो केवल बाइबिल पर भरोसा करना चाहते थे, कैल्विन ने अपने स्वयं के सिद्धांत लिखेईसाई धर्म के संस्थान जो हैं नीचे संक्षेप में और व्यक्तिगत रूप से बाद में चर्चा की जाती है।

संप्रभुता - ईश्वर परम है; इसलिए, उसकी इच्छा अंतिम और अंतिम है।

बिना शर्त चुनाव - अपनी संप्रभु इच्छा के अनुसार उसने सभी चीजों को पहले से ठहराया। उसने पाप को ही पहले से ठहराया। उसने यह अपनी महिमा के लिए किया। अपनी स्वयं की महिमा को और अधिक बढ़ाने के लिए, उसने पूर्वनिर्धारित किया कि पापियों के लिए, वह कुछ को बचाएगा और दूसरों की निंदा करेगा। उसने यह अपनी इच्छा के अनुसार किया ताकि इसका मनुष्य के किसी भी कार्य से कोई लेना-देना न हो।

सीमित प्रायश्चित - अपने चुने हुएों के लिए, परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह के लहू के द्वारा प्रायश्चित और उद्धार प्रदान किया है।

कुल वंशानुगत विकृति - समस्या यह है कि आदम के पाप के द्वारा, उसका स्वभाव भ्रष्ट हो गया था, और यह स्वभाव उसके वंशजों में चला गया है।

अथकसुंदर - इस भ्रष्ट स्वभाव के होने के कारण, मनुष्य स्वयं परमेश्वर के ज्ञान में नहीं आ सकते हैं। यहाँ तक कि चुने हुए भी परमेश्वर को जवाब नहीं दे सकते, विश्वास नहीं कर सकते, जब तक कि पवित्र आत्मा विश्वास करने के लिए उनके दिलों को नहीं खोलता और समझने। परमेश्वर का अनुग्रह, जो उसके चुने हुएों के लिए किया गया है, और उसकी प्रभुसत्ताक इच्छा के अनुसार, रोका नहीं जा सकता।

संतों की दृढ़ता - चुने हुएों का उद्धार होगा। उसका अनुग्रह चुने हुएों को सम्भालेगा और न हटाया जाएगा कि वे खो न सकें। उनकी मुक्ति निश्चित है।

जेकोबस आर्मिनियस (1560-1609)

इंग्लैंड ने कुछ हद तक आर्मिनियाईवाद के विचारों को रखा था। लेकिन आर्मिनियावाद की शुरुआत जेकोबस आर्मिनियस ने की थी जिसे कैल्विन के दामाद ने सिखाया था। कैल्विनवादी मान्यताओं का बचाव करने में असमर्थ, उन्होंने अपनी कैल्विनवादी पृष्ठभूमि को अस्वीकार कर दिया और कैल्विनवाद को संशोधित करने की मांग की ताकि "ईश्वर को

⁴ Refer to Augustine's Thinking and Beliefs page 31.

England had to some extent held Arminianism views. But Arminianism was started by Jacobus Arminius who was taught by Calvin's son-in-law. Unable to defend the Calvinistic beliefs he rejected his Calvinistic background and sought to modify Calvinism so that "God might not be considered the author of sin, nor man an automation in the hands of God." His modified beliefs caused much controversy among the Calvinist in Holland.

"His followers faced persecution from Calvinists; 200 pastors losing their posts, statesman John van Olden Barneveldt beheaded, Hugo Grotius imprisoned for life but escaping two years later. By 1635 the persecution had waned and followers began to return to Holland once again. They spread a principle of toleration throughout the churches in Holland so that there was much more religious toleration."

Adapted from

"selected quotes taken from [The Moody Handbook of Theology](#) by Paul Enns".

The *Reformation* sought, at least in some measure, to redirect the focus away from such legalistic ritualism, reintroducing the people to the joy of relationship with the Father by grace through faith, apart from such restrictive regulation. In 1647, for example, the Westminster Assembly completed and adopted the [Westminster Larger Catechism](#), which was a rather lengthy list of 196 questions and responses helping to define the significant aspects of one's faith and practice. Question #180 "What is it to pray in the name of Christ?" In the response it is noted that our Lord's injunction is NOT complied with "by bare mentioning of His name, but by drawing our encouragement to pray, and our boldness, strength, and hope of acceptance in prayer, from Christ and His mediation."

(Adapted from REFLECTIONS by [Al Maxey](#) Issue #405- July 27, 09)

Chapter 2

Restoration Movement

1648 – 1849 AD

The Reformation Movement ended and the Restoration Movement began with a [series of religious wars](#) that culminated in the [Thirty Years'](#)

पाप का लेखक न माना जाए, न ही मनुष्य को ईश्वर के हाथों में एक स्वचालन माना जाए।" उनके संशोधित विश्वासों ने हॉलैंड में कैल्विनिस्ट के बीच बहुत विवाद पैदा किया।

"उनके अनुयायियों ने कैल्विनिवादियों के उत्पीड़न का सामना किया; 200 पादरियों ने अपने पदों को खो दिया, राजनेता जॉन वैन ओल्डेन बार्नेवेल्ट का सिर कलम कर दिया गया, ह्यूगो ग्रोटीयस को आजीवन कारावास हुआ लेकिन दो साल बाद वे बच निकले। 1635 तक उत्पीड़न कम हो गया था और अनुयायी एक बार फिर हॉलैंड लौटने लगे। उन्होंने हॉलैंड के सभी चर्चों में सहनशीलता के सिद्धांत का प्रसार किया ताकि धार्मिक सहिष्णुता और भी अधिक हो जाए।" "पॉल एनन्स द्वारा धर्मशास्त्र की मूडी हैंडबुक से लिए गए चयनित उद्धरण" से अनुकूलित।

सुधार की मांग, कम से कम कुछ हद तक, इस तरह के कानूनी अनुष्ठानों से ध्यान हटाने के लिए, इस तरह के प्रतिबंधात्मक विनियमन के अलावा, लोगों को विश्वास के माध्यम से पिता के साथ रिश्ते की खुशी के लिए पुनः प्रस्तुत करना। उदाहरण के लिए, 1647 में, वेस्टमिंस्टर असेंबली ने वेस्टमिंस्टर लार्ज कैटेसिज्म को पूरा किया और अपनाया, जो 196 प्रश्नों और प्रतिक्रियाओं की एक लंबी सूची थी, जो किसी के विश्वास और अभ्यास के महत्वपूर्ण पहलुओं को परिभाषित करने में मदद करती थी। प्रश्न #180 "मसीह के नाम से प्रार्थना करना क्या है?" प्रतिक्रिया में यह उल्लेख किया गया है कि हमारे भगवान के निषेधाज्ञा का अनुपालन "उनके नाम का उल्लेख करने से नहीं, बल्कि प्रार्थना करने के लिए हमारे प्रोत्साहन, और हमारी निर्भिकता, शक्ति और प्रार्थना में स्वीकृति की आशा, मसीह और उनकी मध्यस्थता से किया जाता है।" (प्रतिबिंबों से अनुकूलित [अल मैक्सी](#) अंक #405-27 जुलाई, 09)

अध्याय दो

बहाली आंदोलन

1648 – 1849 ई

सुधार आंदोलन समाप्त हो गया और बहाली आंदोलन शुरू हुआ [धार्मिक युद्धों की श्रृंखला](#) जिसका चरमोत्कर्ष में हुआ [तीस साल का युद्ध](#). 1618 से 1648 तक कैथोलिक [हाउस ऑफ हैब्सबर्ग](#) और उसके सहयोगियों ने जर्मनी के प्रोटेस्टेंट राजकुमारों के खिलाफ कई बार समर्थन किया [डेनमार्क](#), [स्वीडन](#) और [फ्रांस](#). हैब्सबर्ग्स, जिन्होंने शासन किया [स्पेन](#), [ऑस्ट्रिया](#), [दस्पेनिश नीदरलैंड](#) और बहुत कुछ [जर्मनी](#) और [इटली](#), कैथोलिक चर्च के कट्टर रक्षक थे। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि सुधार का युग समाप्त हो गया जब कैथोलिक फ्रांस ने खुद को, पहले गुप्त रूप से और बाद

[War](#). From 1618 to 1648 the Catholic [House of Habsburg](#) and its allies fought against the Protestant princes of Germany, supported at various times by [Denmark](#), [Sweden](#) and [France](#). The Habsburgs, who ruled [Spain](#), [Austria](#), the [Spanish Netherlands](#) and much of [Germany](#) and [Italy](#), were staunch defenders of the Catholic Church. Some historians believe that the era of the Reformation came to a close when Catholic France allied itself, first in secret and later on the battlefields, with Protestant states against the Habsburg dynasty.^[1] For the first time since the days of Luther, political and national convictions again outweighed religious convictions in Europe.

The movement began as an attempt to reform the Catholic Church. Many western Catholics were troubled by what they saw as false doctrines and malpractices within the [Catholic] Church, particularly involving the teaching and sale of indulgences. Another major contention was the practice of buying and selling church positions (simony) and what was seen at the time as considerable corruption within the Church's hierarchy. This corruption was seen by many as systemic, even reaching the position of the Pope.

en.wikipedia.org/wiki/Protestant_Reformation#Conclusion_and_legacy

While the Middle Ages saw some calls for a restoration of a primitive form of Christianity, such as John Wycliffe and John Hus, these groups were driven underground. As a result, it is difficult to find any direct links between the restoration movement and these earlier dissenters.^{[3]:13}

For in 1229 Council of Toulouse in Canon 14 stated "We prohibit also that the laity should be permitted to have the books of the Old or New Testament; unless anyone from motive of devotion should wish to have the Psalter or the Breviary for divine offices or the hours of the blessed Virgin; but we most strictly forbid their having any translation of these books.

hol.com/~mikesch/banned.htm

Beginning with the Renaissance period [15th to 17th centuries] intellectual roots become easier to discern.^{[3]:11} At the heart of the Reformation there

में युद्ध के मैदान में, हैब्सबर्ग राजवंश के खिलाफ प्रोटेस्टेंट राज्यों के साथ गठबंधन किया।^[1] लूथर के दिनों से पहली बार, राजनीतिक और राष्ट्रीय विश्वासों ने फिर से यूरोप में धार्मिक विश्वासों को पछाड़ दिया।

कैथोलिक चर्च में सुधार के प्रयास के रूप में आंदोलन शुरू हुआ। कई पश्चिमी कैथोलिक [कैथोलिक] चर्च के भीतर झूठे सिद्धांतों और अनाचार के रूप में जो देखते थे, उससे परेशान थे, विशेष रूप से शिक्षण और भोग की बिक्री शामिल थी। एक अन्य प्रमुख विवाद चर्च पदों (सिमोनी) को खरीदने और बेचने का अभ्यास था और उस समय चर्च के पदानुक्रम के भीतर काफी भ्रष्टाचार के रूप में देखा गया था। इस भ्रष्टाचार को कई लोगों ने व्यवस्थित रूप से देखा, यहाँ तक कि पोप के पद तक भी पहुँच गया।

en.wikipedia.org/wiki/Protestant_Reformation#Conclusion_and_legacy

जबकि मध्य युग में जॉन विक्लिफ और जॉन हस जैसे ईसाई धर्म के एक आदिम रूप की बहाली के लिए कुछ कॉल देखी गईं, इन समूहों को भूमिगत कर दिया गया था। नतीजतन, बहाली आंदोलन और इन पहले के असंतुष्टों के बीच कोई सीधा संबंध खोजना मुश्किल है।^{[3]:13}

1229 मेंकैनेन 14 में टूलूज़ की परिषद ने कहा "हम यह भी निषेध करते हैं कि आम लोगों को पुराने या नए नियम की पुस्तकें रखने की अनुमति दी जानी चाहिए; जब तक कि भक्ति के उद्देश्य से किसी को दिव्य कार्यालयों या धन्य वर्जिन के घंटों के लिए स्तोत्र या ब्रेविरी की इच्छा नहीं करनी चाहिए; लेकिन हम सख्त मना करते हैं कि उनके पास इन पुस्तकों का कोई भी अनुवाद हो। hol.com/~mikesch/banned.htm

पुनर्जागरण काल [15^{वीं} से 17^{वीं} शताब्दी] के साथ बौद्धिक जड़ों को समझना आसान हो जाता है।^{[3]:11} रिफॉर्मेशन के केंद्र में "अकेले धर्मग्रंथ" [लूथर के बिंदुओं में से एक] के सिद्धांत पर जोर था।^{[3]:22-23} यह, संबंधित परंपरा-विरोधीवाद और व्यक्तियों के स्वयं के लिए बाइबिल को पढ़ने और व्याख्या करने के अधिकार पर जोर देने के साथ, प्रारंभिक बहाली आंदोलन के नेताओं की बौद्धिक पृष्ठभूमि का हिस्सा बन गया।^{[3]:32} उत्पीड़न सुधार के साथ समाप्त नहीं हुआ जैसा कि फॉक्स की शहीदों की पुस्तक में स्पष्ट रूप से प्रमाणित है।

1532 में, थॉमस हार्डिंग, जिन पर उनकी पत्नी के साथ विधर्म का आरोप लगाया गया था, को लिंकन, इंग्लैंड के बिशप के सामने लाया गया और यूचरिस्ट सैक्रामेंट में वास्तविक उपस्थिति से इनकार करने के लिए निंदा की गई। उसके बाद

was an emphasis on the principle of "scripture alone" [one of Luther's points]^{[3]:22-23} This, along with the related anti-traditionalism and insistence on the right of individuals to read and interpret the Bible for themselves, formed part of the intellectual background of early Restoration Movement leaders.^{[3]:32} Persecution did not end with the Reformation as clearly evidenced in Foxe's Book of Martyrs.

In 1532, Thomas Harding, who with his wife, had been accused of heresy, was brought before the bishop of Lincoln, England and condemned for denying the real presence in the Eucharist Sacrament. He was then chained to a stake, erected for the purpose, at Chesham in the Pell, near Botely; and when they had set fire to the fagots [a bundle of sticks bound together for fuel], one of the spectators dashed out his brains with a billet. The priests told the people that whoever brought fagots to burn heretics would have an indulgence to commit sins for forty days.

Also, John Tewkesbury, a plain, simple man, who had been guilty of no other offence against what was called the holy Mother Church, than that of reading Tyndale's translation of the New Testament. At first, he was weak enough to adjure, but afterward repented, and acknowledged the truth. For this he was brought before the bishop of London, who condemned him as an obstinate heretic. He suffered greatly during the time of his imprisonment, so that when they brought him out for execution, he was almost dead. He was conducted to the stake in Smithfield, where he was burned, declaring his utter abhorrence of popery, and professing a firm belief that his cause was just in the sight of God.

Thus, were Christ's people betrayed every way, and their lives bought and sold. For, in the said parliament, the king made this most blasphemous and cruel act, to be a law forever: that whatsoever they were that should read the Scriptures in the mother-tongue (which was then called "Wickliffe's learning"), they should forfeit land, cattle, body, life, and goods, from their heirs forever, and so be condemned for heretics to God, enemies to the crown, and most arrant traitors to the land.

There are countless examples of unspeakable and unimaginable torture during this period of English history. Many people fled England for the New

उन्हें एक दांव पर जंजीर से बांध दिया गया, इस उद्देश्य के लिए चेशम इन द पेल, बोटली के पास खड़ा किया गया; और जब उन्होंने फगोट्स [ईंधन के लिए एक साथ बंधी हुई लकड़ियों का एक बंडल] में आग लगा दी, तो दर्शकों में से एक ने अपने दिमाग को बिलेट से उड़ा दिया। पुजारियों ने लोगों से कहा कि जो कोई भी विधर्मियों को जलाने के लिए फगोट लाएगा, उसे चालीस दिनों तक पाप करने का भोग होगा।

इसके अलावा, जॉन टवेक्सबरी, एक सादा, सरल व्यक्ति, जो न्यू टेस्टामेंट के टिंडेल के अनुवाद को पढ़ने के अलावा पवित्र मंदर चर्च कहे जाने वाले के खिलाफ किसी अन्य अपराध का दोषी नहीं था। पहले तो वह शपथ ग्रहण करने के लिए काफी कमजोर था, लेकिन बाद में पछताया और सच्चाई को स्वीकार किया। इसके लिए उन्हें लंदन के बिशप के सामने लाया गया, जिन्होंने उन्हें एक जिद्दी विधर्मी के रूप में निंदा की। अपने कारावास के समय में उसे बहुत पीड़ा हुई, यहाँ तक कि जब वे उसे फाँसी के लिए बाहर लाए, तो वह लगभग मर चुका था। उन्हें स्मिथफील्ड में दांव पर लगा दिया गया था, जहाँ उन्हें जला दिया गया था, पोपरी के प्रति उनके घृणा की घोषणा करते हुए, और एक दृढ़ विश्वास को स्वीकार करते हुए कि उनका कारण सिर्फ भगवान की दृष्टि में था।

इस प्रकार, मसीह के लोगों को हर तरह से धोखा दिया गया, और उनका जीवन खरीदा और बेचा गया। उक्त संसद में, राजा ने इस सबसे निंदनीय और क्रूर कृत्य को हमेशा के लिए एक कानून बना दिया: कि वे जो कुछ भी थे, उन्हें मातृभाषा में शास्त्रों को पढ़ना चाहिए (जिसे तब "विक्लिफ की शिक्षा" कहा जाता था), उन्हें चाहिए भूमि, मवेशी, शरीर, जीवन, और माल, उनके उत्तराधिकारियों से हमेशा के लिए खो देते हैं, और इस प्रकार परमेश्वर के विधर्मियों, मुकुट के शत्रुओं, और भूमि के सबसे अभिमानी गद्दारों के लिए निंदा की जाती है।

अंग्रेजी इतिहास के इस दौर में अकथनीय और अकल्पनीय यातनाओं के अनगिनत उदाहरण हैं। बहुत से लोग गरीबी और उत्पीड़न से बचने के लिए नई दुनिया के लिए इंग्लैंड भाग गए। फॉक्स की शहीदों की पुस्तक से अनुकूलित

पुजारी के अलावा अन्य बाइबिल पढ़ने पर रोक लगाने की इस नीति की टेंट परिषद (1545-64) द्वारा पुष्टि की गई थी, जिसने बाइबिल को निषिद्ध किताबों की सूची में रखा था, और किसी भी व्यक्ति को लाइसेंस के बिना बाइबल पढ़ने से मना किया था। रोमन कैथोलिक बिशप या जिज्ञासु।jesus-is-lord.com/nobible.htm

जॉन लोके(1632 - 1704)

जॉन लोके ने शास्त्र को छोड़े बिना धार्मिक विभाजन और उत्पीड़न को संबोधित करने का तरीका खोजा।^{[3]:78}ऐसा करने

World to escape poverty and persecution.
Adapted from Foxe's Book of Martyrs

This policy of prohibiting the reading of the Bible other than by the priest was reaffirmed by the Council of Trent (1545-64) which placed the Bible on its list of prohibited books, and forbade any person to read the Bible without a license from a Roman Catholic bishop or inquisitor.
jesus-is-lord.com/nobible.htm

John Locke (1632 – 1704)

John Locke sought a way to address religious division and persecution without abandoning scripture.^{[3]:78} To do this, Locke argued against the right of government to enforce religious orthodoxy and turned to the Bible to supply a set of beliefs that all Christians could agree upon,^{[3]:78-79} that is to "reduce religion to a set of essentials upon which all reasonable persons might agree."^{[3]:80} The **core teachings** that he viewed as essential were:

a. The messiahship of Jesus

b. Jesus' direct commands.^{[3]:78-79}

Christians could be devoutly committed to other Biblical teachings but, in Locke's view, they were non-essentials over which Christians should never fight or try to coerce each other.^{[3]:79} Unlike the Puritans and the later Restoration Movement, Locke did not call for a systematic restoration of the early church.^{[3]:79}

John Wesley (1703 – 1791)

Wesley's contribution as a theologian was to propose a system of opposing theological stances. His greatest theological achievement was his promotion of what he termed "Christian Perfection", or holiness of heart and life. Wesley held that, in this life, Christians could come to a state in which the love of God, or perfect love, reigned supreme in their hearts. His evangelical theology, especially his understanding of Christian perfection, was firmly grounded in his sacramental theology. He continually insisted on the general use of the means of grace (prayer, scripture, meditation, Holy Communion, etc.) as the means by which God sanctifies and transforms the believer.

To be made perfect in love meant that a Christian could live with a primary guiding regard for others

के लिए, लोके ने धार्मिक रूढ़िवाद को लागू करने के सरकार के अधिकार के खिलाफ तर्क दिया और विश्वासों का एक समूह प्रदान करने के लिए बाइबिल की ओर रुख किया, जिस पर सभी ईसाई सहमत हो सकते हैं,^{[3]:78-79} वह है "धर्म को अनिवार्यताओं के एक समूह तक कम करना, जिस पर सभी उचित व्यक्ति सहमत हो सकते हैं।"^{[3]:80} मुख्य शिक्षाएँ जिन्हें वे आवश्यक मानते थे वे थीं:

b. The मसीहायीशु का

बी। यीशु की सीधी आज्ञा।^{[3]:78-79}

ईसाई भक्तिपूर्वक अन्य बाइबिल शिक्षाओं के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं, लेकिन लॉक के विचार में, वे गैर-जरूरी चीजें थीं जिनके लिए ईसाइयों को कभी भी लड़ना या एक-दूसरे को जबरदस्ती करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।^{[3]:79} प्यूरिटन और बाद के बहाली आंदोलन के विपरीत, लोके ने प्रारंभिक चर्च की व्यवस्थित बहाली की मांग नहीं की।^{[3]:79}

जॉन वेस्ले (1703 - 1791)

एक धर्मशास्त्री के रूप में वेस्ले का योगदान धार्मिक दृष्टिकोणों का विरोध करने की एक प्रणाली का प्रस्ताव करना था। उनकी सबसे बड़ी धर्मशास्त्रीय उपलब्धि उनका प्रचार था जिसे उन्होंने "ईसाई पूर्णता", या हृदय और जीवन की पवित्रता। वेस्ले ने माना कि, इस जीवन में, ईसाई एक ऐसी स्थिति में आ सकते हैं जिसमें ईश्वर का प्रेम, या पूर्ण प्रेम, उनके दिलों में सर्वोच्च शासन करता है। उनका इंग्लिश धर्मशास्त्र, विशेष रूप से ईसाई पूर्णता की उनकी समझ, अपने पवित्र धर्मशास्त्र में दृढ़ता से स्थापित थे। उन्होंने अनुग्रह के साधनों के सामान्य उपयोग पर लगातार जोर दिया (प्रार्थना, इंजील, ध्यान, पवित्र समन्वय, आदि) जिसके माध्यम से भगवान पवित्र और आस्तिक को बदल देता है।

प्रेम में सिद्ध होने का अर्थ था कि एक ईसाई दूसरों और उनके कल्याण के लिए प्राथमिक मार्गदर्शक संबंध के साथ जी सकता है। उन्होंने इसे मसीह के उद्धारण पर आधारित किया कि दूसरी बड़ी आज्ञा है "अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से प्रेम करते हो।" उनके विचार में, यह अभिविन्यास एक व्यक्ति को अपने पड़ोसी के खिलाफ किसी भी तरह के पापों से बचने का कारण बनेगा। यह प्रेम, साथ ही परमेश्वर के लिए प्रेम जो किसी व्यक्ति के विश्वास का मुख्य केंद्र हो सकता है, वह होगा जिसे वेस्ले ने "मसीह की व्यवस्था की पूर्णता" के रूप में संदर्भित किया।

वेस्ले का मानना था कि ईसाई धर्म के जीवित मूल को पवित्रशास्त्र में प्रकट किया गया था; और बाइबल धार्मिक या सैद्धान्तिक विकास का एकमात्र मूलभूत स्रोत थी। ... हालांकि,

and their welfare. He based this on Christ's quote that the second great command is "to love your neighbor as you love yourself." In his view, this orientation would cause a person to avoid any number of sins against his neighbor. This love, plus the love for God that could be the central focus of a person's faith, would be what Wesley referred to as "a fulfillment of the law of Christ."

Wesley believed that the living core of the Christian faith was revealed in Scripture; and the Bible was the sole foundational source of theological or doctrinal development. ... However, he believed that doctrine had to be in keeping with Christian orthodox tradition.

The doctrines which Wesley emphasized were [prevenient grace](#), personal salvation by faith, witness of the Spirit and sanctification. [Prevenient grace is [divine grace](#) which precedes human decision. It exists prior to and without reference to anything humans may have done. As humans are corrupted by the effects of [sin](#), preventient grace allows persons to engage their God-given [free will](#) to choose the salvation offered by God in Jesus Christ or to reject that salvific offer. [wikipedia.org/wiki/Prevenient_Grace](#)]

These views and beliefs were modified again and championed by John Wesley. These beliefs as stated in [The Moody Handbook of Theology](#) by Paul Enns are shown in the following table:

Election based on (fore) knowledge - God elected He knew would of their own free will believe i preserve in the faith.
Unlimited Atonement- In His atonement, Chr redemption for all mankind, making all mankind sav atonement becomes effective only to those who be
Natural Ability- Man cannot save himself; the Hol effect the new birth.
Prevenient Grace- Preparatory work of the Holy S the believer to respond to the gospel and coopera salvation.
Conditional Preservation- Believers have been er live a victorious life. But they are capable of turnir and losing their salvation.

उनका मानना था कि सिद्धांत को ईसाई रूढ़िवादी परंपरा के अनुरूप होना चाहिए।

वेस्ले ने जिन सिद्धांतों पर जोर दिया, वे थे [निवारक अनुग्रह](#), विश्वास के द्वारा व्यक्तिगत उद्धार, आत्मा की गवाही और पवित्रता। [निवारक कृपा है [परमात्मा की कृपा](#) जो मानवीय निर्णय से पहले होता है। यह मनुष्यों द्वारा किए गए किसी भी कार्य से पहले और बिना किसी संदर्भ के मौजूद है। जैसे मनुष्य के प्रभाव से भ्रष्ट हो जाते हैं [पाप](#), निवारक अनुग्रह व्यक्तियों को उनके ईश्वर प्रदत्त को संलग्न करने की अनुमति देता है [मुक्त इच्छा](#) परमेश्वर द्वारा यीशु मसीह में दिए गए उद्धार को चुनना या उस उद्धार के प्रस्ताव को अस्वीकार करना। [wikipedia.org/wiki/Prevenient_Grace](#)]

इन विचारों और विश्वासों को फिर से संशोधित किया गया और जॉन वेस्ली द्वारा इसका समर्थन किया गया। पॉल एनन्स द्वारा द मूडी हैंडबुक ऑफ थियोलॉजी में बताए गए ये विश्वास निम्नलिखित तालिका में दिखाए गए हैं:

(पूर्व) ज्ञान के आधार पर चुनाव - भगवान ने उन्हें चुना जिन्हें वे कि वे स्वयं स्वतंत्र रूप से मसीह में विश्वास करेंगे और विश्व रखेंगे।
असीमित प्रायश्चित- अपने प्रायश्चित में, मसीह ने समस्त मानव छुटकारे का प्रावधान किया, समस्त मानवजाति को बचाने के लिए मसीह का प्रायश्चित केवल उन लोगों के लिए प्रभावी होता है करते हैं।
प्राकृतिक क्षमता- मनुष्य स्वयं को नहीं बचा सकता; पवित्र अ जन्म अवश्य प्रभावित करना चाहिए।
निवारक अनुग्रह- पवित्र आत्मा का प्रारंभिक कार्य विश्वासी के प्रति प्रतिक्रिया करने और परमेश्वर के उद्धार में सहयोग के बनाता है।
सशर्त संरक्षण- विश्वासियों को एक विजयी जीवन जीने का अ गया है। परन्तु वे अनुग्रह से मुड़ने और अपने उद्धार को खोने

प्रीवेनिेंट ग्रेस उनके विश्वास का धार्मिक आधार था कि सभी व्यक्ति मसीह में विश्वास के द्वारा बचाए जाने में सक्षम थे। अपने समय के केल्विनवादियों के विपरीत, वेस्ली में विश्वास नहीं था [पूर्व गंतव्य](#). वह समझ गया कि ईसाई रूढ़िवाद इस बात पर जोर देता है कि मुक्ति केवल ईश्वर की सर्वोच्च कृपा से ही संभव है। उन्होंने ईश्वर के साथ मानवता के संबंध की अपनी समझ को ईश्वर की कृपा पर पूर्ण निर्भरता के रूप में व्यक्त किया। ईश्वर सभी लोगों को ईश्वर के प्रति प्रतिक्रिया की वास्तविक अस्तित्वगत स्वतंत्रता के लिए सशक्त बनाकर सभी लोगों को विश्वास में आने में सक्षम बनाने के लिए काम कर रहा था।

Prevenient grace was the theological underpinning of his belief that all persons were capable of being saved by faith in Christ. Unlike the Calvinists of his day, Wesley did not believe in [pre-destination](#). He understood that Christian orthodoxy insisted that salvation was only possible by the sovereign grace of God. He expressed his understanding of humanity's relationship to God as utter dependence upon God's grace. God was at work to enable all people to be capable of coming to faith by empowering humans to have actual existential freedom of response to God.

Wesley contended that a part of the theological method would involve experiential faith. In other words, truth would be vivified in personal experience of Christians (overall, not individually), if it were really truth. And every doctrine must be able to be defended rationally. He did not divorce faith from reason. Tradition, experience and reason, however, were subject always to Scripture, Wesley argued, because only there is the Word of God revealed 'so far as it is necessary for our salvation.'^[15]

In 1770 he wrote "There are many doctrines of a less essential nature ... In these we may think and let think; we may [agree to disagree](#).' But, meantime, let us hold fast the essentials..."^[20] [This sure sounds like Locke's core essentials 50 to 70 years earlier.]

Wesley promoted many social justice issues of the day, including the [prison reform](#) and [abolitionism](#) movement. He helped to organize and form societies of Christians throughout [England](#), [Scotland](#), [Wales](#) and [Ireland](#) as small groups that developed intensive, personal accountability, [discipleship](#) and religious instruction among members. His great contribution was to appoint itinerant, un-ordained preachers who travelled widely to [evangelize](#) and care for people in the societies. Young men who acted as their assistants were called "exhorters" who functioned in a similar fashion to the twelve [apostles](#) after [the ascension of Jesus](#).

Adapted from wikipedia.org/wiki/John_Wesley

Puritans – 16th – 17th Centuries

One of the basic goals of the English Puritans was to restore a pure, "primitive" church that would be a

वेस्ले ने तर्क दिया कि धार्मिक पद्धति के एक भाग में अनुभवात्मक विश्वास शामिल होगा। दूसरे शब्दों में, सत्य ईसाइयों के व्यक्तिगत अनुभव में जीवित होगा (कुल मिलाकर, व्यक्तिगत रूप से नहीं), यदि यह वास्तव में सत्य था। और हर सिद्धांत को तर्कसंगत रूप से बचाव करने में सक्षम होना चाहिए। उसने विश्वास को तर्क से अलग नहीं किया। परंपरा, अनुभव और कारण, हालांकि, हमेशा पवित्रशास्त्र के अधीन थे, वेस्ले ने तर्क दिया, क्योंकि केवल परमेश्वर का वचन प्रकट हुआ है 'जहाँ तक यह हमारे उद्धार के लिए आवश्यक है।'^[15]

1770 में उन्होंने लिखा "कम आवश्यक प्रकृति के कई सिद्धांत हैं ... इनमें हम सोच सकते हैं और सोचने दे सकते हैं; हम हो सकते हैं [सहमत से असहमत](#).' लेकिन, इस बीच, हम अनिवार्य रूप से उपवास रखें ..." ^[20] [यह निश्चित रूप से 50 से 70 साल पहले लॉक के मूल अनिवार्यताओं की तरह लगता है।]

वेस्ले ने उस समय के कई सामाजिक न्याय मुद्दों को बढ़ावा दिया, जिनमें शामिल हैं: [जेल सुधार](#) और [उन्मूलनवाद](#) आंदोलन। उन्होंने पूरे ईसाइयों के समाजों को संगठित करने और बनाने में मदद की [इंग्लैंड](#), [स्कॉटलैंड](#), [वेल्स](#) और [आयरलैंड](#) छोटे समूहों के रूप में जिन्होंने गहन, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व विकसित किया, [शागिर्दी](#) और सदस्यों के बीच धार्मिक शिक्षा। उनका महान योगदान घुमंतू, गैर-अभिषिक्त प्रचारकों को नियुक्त करना था जिन्होंने व्यापक रूप से यात्रा की [इंजील का प्रचार करना](#) और समाज में लोगों की देखभाल करते हैं। उनके सहायक के रूप में कार्य करने वाले युवकों को "प्रबोधक" कहा जाता था, जो बारह के समान कार्य करते थे [प्रेरितों बाद यीशु का स्वर्गारोहण](#).

wikipedia.org/wiki/John_Wesley से अनुकूलित

प्यूरिटन - 16वीं-17वीं शताब्दी

के मूलभूत लक्ष्यों में से एक है अंग्रेजी प्यूरिटन एक शुद्ध, "आदिम" चर्च को पुनर्स्थापित करना था जो एक सच्चा धर्मत्यागी समुदाय होगा।^{[3]: 40,41} में प्यूरिटन के विकास में इस मानसिकता का एक महत्वपूर्ण प्रभाव था औपनिवेशिक अमेरिका।^{[3]: 50-56}

अलग बैपटिस्ट (1730 - 1740)

प्रथम महान जागृति के दौरान बैपटिस्टों के बीच एक आंदोलन विकसित हुआ जिसे सेपरेट बैपटिस्ट के रूप में जाना जाता है। इस आंदोलन के दो विषय पंथों की अस्वीकृति और "आत्मा में स्वतंत्रता" थे। बाइबिल उचित चर्च आदेश के लिए एकमात्र नियम के रूप में बाइबिल के रूप के सटीक विवरण से बचने के दौरान सावधानी से पालन किया जाना चाहिए जो वैधानिक

true apostolic community.^{[3]:40,41} This mindset was a critical influence in the development of the Puritans in Colonial America.^{[3]:50-56}

Separate Baptists (1730 – 1740)

During the First Great Awakening a movement developed among the Baptists known as Separate Baptists. Two themes of this movement were the rejection of creeds and "freedom in the Spirit [The Bible as the only rule for proper church order to be followed carefully while avoiding precise details of biblical form which leads to legalist Biblicism].^{[3]:65} The Separate Baptists saw scripture as the "perfect rule" for the church [therefore, no need for a creed].^{[3]:66} However, while they turned to the Bible for a structural pattern for the church, they did not insist on complete agreement on the details of that pattern.^{[3]:67} This group originated in New England, but was especially strong in the South where the emphasis on a biblical pattern for the church grew stronger.^{[3]:67} In the last half of the 18th century it spread to the western frontier of Kentucky and Tennessee, where the Stone and Campbell movements would later take root.^{[3]:68} The development of the Separate Baptists in the southern frontier helped prepare the ground for the Restoration Movement, as the membership of both the Stone and Campbell groups drew heavily from among the ranks of the Separate Baptists.^{[3]:67}

Separate Baptist restorationism also contributed to the development of the Landmark Baptists in the same area at about the same time as the Stone-Campbell Restoration Movement. Under the leadership of James Robinson Graves, this group looked for a **precise blueprint** for the primitive church, believing that any deviation from that blueprint would keep one from being part of the true church.^{[3]:68} [Can they both be right, is either one right or are they both wrong?]

wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

James O'Kelly (1732 -1826)

O'Kelly was an early advocate of seeking unity through a return to New Testament Christianity.^{[4]:216} In 1792, dissatisfied with the role of bishops in the Methodist Episcopal Church, he separated from that body. O'Kelly's movement, centering in Virginia and North Carolina, was

बाइबिलवाद की ओर जाता है।^{[3]:65}सेपरेट बैपटिस्ट ने पवित्रशास्त्र को चर्च के लिए "सही नियम" के रूप में देखा [इसलिए, एक पंथ की कोई आवश्यकता नहीं]।^{[3]:66}हालाँकि, जब वे कलीसिया के लिए एक संरचनात्मक नमूने के लिए बाइबल की ओर मुड़े, तो उन्होंने उस नमूने के विवरण पर पूर्ण सहमति पर जोर नहीं दिया।^{[3]:67}में इस समूह की उत्पत्ति हुईनया इंग्लैंड, लेकिन में विशेष रूप से मजबूत थादक्षिणजहां चर्च के लिए बाइबिल के पैटर्न पर जोर दिया गया।^{[3]:67}18वीं शताब्दी के अंतिम भाग में यह की पश्चिमी सीमा तक फैल गयाकेंटकीऔरटेनेसी, जहां बाद में स्टोन और कैंपबेल आंदोलनों ने जड़ें जमा लीं।^{[3]:68}दक्षिणी सीमांत में अलग-अलग बैपटिस्टों के विकास ने बहाली आंदोलन के लिए जमीन तैयार करने में मदद की, क्योंकि स्टोन और कैंपबेल दोनों समूहों की सदस्यता अलग-अलग बैपटिस्टों के रैंकों में से भारी थी।^{[3]:67}

अलग बैपटिस्ट बहालीवाद ने भी इसके विकास में योगदान दिया।लैंडमार्क बैपटिस्टउसी क्षेत्र में लगभग उसी समय जब स्टोन-कैंपबेल रेस्टोरेशन मूवमेंट था। अध्यक्षता मेंजेम्स रॉबिन्सन कब्र, इस समूह ने आदिम चर्च के लिए एक सटीक ब्लूप्रिंट की तलाश की, यह विश्वास करते हुए कि उस ब्लूप्रिंट से कोई भी विचलन किसी को सच्चे चर्च का हिस्सा बनने से रोक देगा।^{[3]:68}[क्या वे दोनों सही हो सकते हैं, या तो एक सही है या वे दोनों गलत हैं?]

wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

जेम्स ओ'केली(1732 -1826)

ठीक हैन्यू टेस्टामेंट ईसाई धर्म में वापसी के माध्यम से एकता की तलाश के शुरुआती समर्थक थे।^{[4]:216}1792 में, बिशप की भूमिका से असंतुष्टमेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च, वह उस शरीर से अलग हो गया। ओ'केली का आंदोलन, में केंद्रितवर्जीनियाऔरउत्तरी केरोलिना, मूल रूप से रिपब्लिकन मेथोडिस्ट कहलाते थे। 1794 में उन्होंने क्रिश्चियन चर्च नाम अपनाया।^[5]

ओ'केली, राइस हैगार्ड और अन्य ने ईसाई चर्च के पांच प्रमुख सिद्धांतों को परिभाषित किया

6. कलीसिया का एकमात्र मुखिया मसीह है
7. ईसाई नाम ही एकमात्र स्वीकार्य नाम है
8. बाइबिल विश्वास का एकमात्र नियम है
9. ख्रीस्तीय चरित्र ही कलीसिया की संगति की एकमात्र कसौटी है
10. निजी निर्णय का अधिकार सभी का विशेषाधिकार है।
द इटरनल किंगडम, एफडब्ल्यू मैटॉक्स, पी। 312

originally called Republican Methodists. In 1794 they adopted the name Christian Church.^[5]

O'Kelly, Rice Haggard and others defined five cardinal principles of the Christian Church

1. Christ is the only head of the church
2. The name Christian is the only acceptable name
3. The Bible is the only rule of faith
4. Christian character is the only test of church fellowship
5. The right of private judgment is the privilege of all.

The Eternal Kingdom, F.W. Mattox, p. 312

Elias Smith (1764 – 1846) and Abner Jones (1767 – 1840)

Abner Jones a doctor left the Baptist church and formed a church he called the Christian Church in Lyndon, Vermont with the Bible as its only creed. The Eternal Kingdom, F.W. Mattox, p.313

Elias Smith of Vermont joined Dr. Jones in a movement espousing views similar to those of O'Kelly.^{[3]:68[6]:190} They believed that members could, by looking to scripture alone, simply be Christians without being bound to human traditions and the denominations that had been brought over from Europe.^{[3]:68[6]:190}

Barton W. Stone (1772 – 1844)

While attending Guilford Academy in North Carolina in 1790,^{[2]:71} Stone heard James McGready (a Presbyterian minister) speak.^{[2]:72} A few years later he became a Presbyterian minister himself.^{[2]:72} As Stone looked more deeply into the beliefs of the Presbyterians, especially the Westminster Confession of Faith, he doubted that some of the church beliefs were truly Bible-based.^{[2]:72,73} He was unable to accept the Calvinistic doctrines of total depravity, unconditional election and predestination.^{[2]:72, 73}

Cane Ridge Revival

In 1801, the Cane Ridge Revival in Kentucky would plant the seed for a movement in Kentucky and the Ohio River valley to disassociate from denominationalism and to become just Christians

इलियास स्मिथ(1764 - 1846) और अब्नेर जोन्स (1767 - 1840)

अब्नेर जोन्स एक डॉक्टर ने बैपटिस्ट चर्च को छोड़ दिया और एक चर्च का गठन किया जिसे उन्होंने लिंडन, वर्मोन्ट में क्रिश्चियन चर्च कहा, जिसमें बाइबिल इसका एकमात्र पंथ था। द इटरनल किंगडम, एफडब्ल्यू मैटॉक्स, पी.313

इलियास स्मिथ केवरमोंटमें शामिल हो गए। डॉ. जोन्स एक आंदोलन में ओ'केली के समान विचारों का समर्थन करता है।^{[3]:68[6]:190} उनका मानना था कि सदस्य अकेले शास्त्र को देखकर, मानव परंपराओं और यूरोप से लाए गए संप्रदायों से बंधे बिना केवल ईसाई हो सकते हैं।^{[3]:68[6]:190}

बार्टन डब्ल्यू स्टोन(1772 - 1844)

गिलफोर्ड अकादमी में भाग लेने के दौरान उत्तरी कैरोलिना 1790 में,^{[2]:71} पत्थर सुनाजेम्स मैकग्रेडी (एपुरोहितमंत्री) बोलो।^{[2]:72} कुछ साल बाद वे खुद प्रेस्बिटेरियन मंत्री बने।^{[2]:72} जैसा कि स्टोन ने प्रेस्बिटेरियन के विश्वासों में अधिक गहराई से देखा, विशेष रूप से विश्वास का वेस्टमिंस्टर अंगीकरण, उन्हें संदेह था कि चर्च की कुछ मान्यताएँ वास्तव में बाइबल पर आधारित थीं।^{[2]: 72,73} वह स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि अल्विनवादी के सिद्धांत कुल भ्रष्टता, बिना शर्त चुनाव और पूर्वनियति।^{[2]: 72, 73}

केन रिज रिवाइवल

1801 में, द केन रिज रिवाइवल में केंटकी में आंदोलन का बीजारोपण करेंगे केंटकी और यह ओहियो नदी घाटी से अलग होने के लिए संप्रदायवाद और केवल ईसाई बनने के लिए - न तो कैथोलिक, न ही प्रोटेस्टेंट और न ही यहूदी। 1803 में स्टोन और अन्य ने केंटकी प्रेस्बिटेरी से वापस ले लिया और स्पिंगफील्ड प्रेस्बिटेरी। आंदोलन के स्टोन विंग की निर्णायक घटना द लास्ट विल एंड टेस्टामेंट ऑफ द का प्रकाशन था *स्पिंगफील्ड प्रेस्बिटेरी*, 1804 में केन रिज, केंटकी में। द लास्ट विल एक संक्षिप्त दस्तावेज है जिसमें स्टोन और पांच अन्य लोगों ने प्रेस्बिटेरियनवाद से अपनी वापसी की घोषणा की और उनका इरादा पूरी तरह से मसीह के शरीर का हिस्सा बनने का था।^[7] लेखकों ने उन सभी की एकता की अपील की जो यीशु का अनुसरण करते हैं, सामूहिक स्वशासन के मूल्य का सुझाव दिया और परमेश्वर की इच्छा को समझने के स्रोत के रूप में बाइबिल को उठाया।

ईसाई कनेक्शन

एलियास स्मिथ ने 1804 तक स्टोन आंदोलन और 1808 तक ओ'केली आंदोलन के बारे में सुना था।^{[6]:190} 1810 तक तीनों

only - neither Catholic, Protestant nor Jew. In 1803 Stone and others withdrew from the Kentucky Presbytery and formed the Springfield Presbytery. The defining event of the Stone wing of the movement was the publication of *Last Will and Testament of The Springfield Presbytery*, at Cane Ridge, Kentucky, in 1804. The Last Will is a brief document in which Stone and five others announced their withdrawal from Presbyterianism and their intention to be solely part of the body of Christ.^[7] The writers appealed for the unity of all who follow Jesus, suggested the value of congregational self-governance and lifted the Bible as the source for understanding the will of God.

Christian Connection

Elias Smith had heard of the Stone movement by 1804, and the O'Kelly movement by 1808.^{[6]:190} The three groups merged by 1810.^{[6]:190} At that time the combined movement had a membership of approximately 20,000.^{[6]:190} This loose fellowship of churches was called by the names "Christian Connection/Connexion" or "Christian Church."^{[3]:68[6]:190}

Characteristics of the Stone movement

The cornerstone for the Stone movement was Christian freedom, which led them to a rejection of all the historical creeds, traditions and theological systems that had developed over time and a focus on a primitive Christianity based on the Bible.^{[3]:104,105}

While restoring primitive Christianity was central to the Stone movement, they saw restoring the lifestyle of the early church as essential, and during the early years "focused more . . . on holy and righteous living than on the forms and structures of the early church."^{[3]:103} The group did also seek to restore the primitive church.^{[3]:104} However, due to concern that emphasizing particular practices could undermine Christian freedom, this effort tended to take the form of rejecting tradition rather than an explicit program of reconstructing New Testament practices.^{[3]:104} The emphasis on freedom was strong enough that the movement avoided developing any ecclesiastical traditions, resulting in a movement

समूहों का विलय हो गया।^{[6]:190} उस समय संयुक्त आंदोलन की सदस्यता लगभग 20,000 थी।^{[6]:190} चर्चों की इस ढीली संगति को नामों से पुकारा जाता था "ईसाई कनेक्शन/कनेक्शन" या "ईसाई चर्च"।^{[3]:68[6]:190}

स्टोन आंदोलन की विशेषताएं

स्टोन आंदोलन के लिए आधारशिला ईसाई स्वतंत्रता थी, जिसने उन्हें समय के साथ विकसित हुए सभी ऐतिहासिक पंथों, परंपराओं और धर्मशास्त्रीय प्रणालियों को अस्वीकार करने और बाइबिल पर आधारित एक आदिम ईसाई धर्म पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया।^{[3]: 104,105}

जबकि आदिम ईसाई धर्म को बहाल करना स्टोन आंदोलन के लिए केंद्रीय था, उन्होंने प्रारंभिक चर्च की जीवन शैली को आवश्यक रूप से बहाल करते हुए देखा, और प्रारंभिक वर्षों के दौरान "प्रारंभिक चर्च के रूपों और संरचनाओं की तुलना में पवित्र और धर्मी जीवन पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।^{[3]:103} समूह ने आदिम चर्च को पुनर्स्थापित करने का भी प्रयास किया।^{[3]:104} हालाँकि, इस चिंता के कारण कि विशेष प्रथाओं पर जोर देना ईसाई स्वतंत्रता को कमजोर कर सकता है, इस प्रयास ने नए नियम की प्रथाओं के पुनर्निर्माण के एक स्पष्ट कार्यक्रम के बजाय परंपरा को अस्वीकार करने का रूप ले लिया।^{[3]:104} स्वतंत्रता पर जोर इतना मजबूत था कि आंदोलन ने किसी भी चर्च संबंधी परंपराओं को विकसित करने से परहेज किया, जिसके परिणामस्वरूप एक ऐसा आंदोलन हुआ जो "मोटे तौर पर हठधर्मिता, रूप या संरचना के बिना था।"^{[3]: 104,105} "एक साथ आंदोलन आदिम ईसाई धर्म के प्रति प्रतिबद्धता थी।"^{[3]:105}

एक और विषय था कि जल्दी करना सहस्राब्दी।^{[3]:104} इस अवधि के कई अमेरिकियों का मानना था कि सहस्राब्दी¹³ निकट था और सहस्राब्दी के लिए उनकी उम्मीदें उनके नए राष्ट्र पर आधारित थीं संयुक्त राज्य अमेरिका।^{[3]:104} स्टोन आंदोलन के सदस्यों का मानना था कि केवल एक एकीकृत ईसाई धर्म पर आधारित है देवदूत-संबंधी चर्च, एक देश या मौजूदा संप्रदायों के बजाय, सहस्राब्दी के आने का कारण बन सकता है।^{[3]:104} स्टोन के सहस्राब्दीवाद को अलेक्जेंडर कैम्बेल की तुलना में अधिक "सर्वनाश" के रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें उनका मानना था कि लोग मानव प्रगति के माध्यम से एक सहस्राब्दी युग की शुरुआत करने के लिए बहुत त्रुटिपूर्ण थे।^{[8]:6,7} बल्कि, उनका मानना था कि यह परमेश्वर की शक्ति पर निर्भर करता है, और यह कि परमेश्वर द्वारा अपना राज्य स्थापित करने की प्रतीक्षा करते

¹³Thebiblewayonline.com - मिलेनियम का संदर्भ लें

that was "largely without dogma, form, or structure."^{[3]:104,105} What held "the movement together was a commitment to primitive Christianity."^{[3]:105}

Another theme was that of hastening the millennium.^{[3]:104} Many Americans of the period believed that the millennium ⁵ was near and based their hopes for the millennium on their new nation, the United States.^{[3]:104} Members of the Stone movement believed that only a unified Christianity based on the apostolic church, rather than a country or any of the existing denominations, could lead to the coming of the millennium.^{[3]:104} Stone's millennialism has been described as more "apocalyptic" than that of Alexander Campbell, in that he believed people were too flawed to usher in a millennial age through human progress.^{[8]:6,7} Rather, he believed that it depended on the power of God, and that while waiting for God to establish His kingdom, one should live as if the rule of God were already fully established.^{[8]:6}

For the Stone movement, this had less to do with eschatological theories [the study of theology and philosophy concerned with the final or the ultimate destiny of humanity, commonly referred to as the end of the world.] ⁶ and more about a commitment to live as if the kingdom of God were already established on earth.^{[8]:6,7} This apocalyptic perspective or world view led many in the Stone movement to adopt pacifism, avoid participating in civil government, and reject violence, militarism, greed, materialism and slavery.^{[8]:6}

en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

Thomas Campbell (1763 – 1854)

Another restoration movement was launched when Thomas Campbell published the *Declaration and Address of the Christian Association of Washington* in 1809. In which he set forth some of his convictions about the church of Jesus Christ, as he organized the Christian Association of Washington, in Washington County, Pennsylvania, not as a church but as an association of persons seeking to grow in faith.^{[1]:108-}

समय, व्यक्ति को ऐसे जीना चाहिए जैसे कि परमेश्वर का शासन पहले से ही पूरी तरह से स्थापित हो चुका हो।^{[8]:6}

स्टोन आंदोलन के लिए, इसका इससे कम लेना-देना नहीं थायुगांत संबंधी सिद्धांत [की पढ़ाई धर्मशास्त्र और दर्शन अंतिम या परम से संबंधित तकदीर का इंसानियत, आमतौर पर के रूप में जाना जाता है दुनिया का अंत.]¹⁴ और जीने की प्रतिबद्धता के बारे में और अधिक जैसे कि परमेश्वर का राज्य पहले से ही पृथ्वी पर स्थापित हो चुका है।^{[8]:6,7} इस सर्वनाशवादी परिप्रेक्ष्य या विश्व दृष्टिकोण ने स्टोन आंदोलन में कई लोगों को शांतिवाद अपनाने, नागरिक सरकार में भाग लेने से बचने और हिंसा, सैन्यवाद, लालच, भौतिकवाद और गुलामी को अस्वीकार करने का नेतृत्व किया।^{[8]:6}

en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

थॉमस कैम्बेल (1763 - 1854)

एक और बहाली आंदोलन शुरू किया गया था जब थॉमस कैम्बेल ने 1809 में वाशिंगटन के क्रिश्चियन एसोसिएशन की घोषणा और पता प्रकाशित किया था।, पेंसिल्वेनिया, एक चर्च के रूप में नहीं बल्कि विश्वास में बढ़ने की मांग करने वाले व्यक्तियों के एक संघ के रूप में। [1]: 108-111 4 मई 1811 को, क्रिश्चियन एसोसिएशन ने खुद को एक सामूहिक रूप से शासित चर्च के रूप में गठित किया और ब्रश रन चर्च के रूप में जाना जाने लगा।^{[1]:117} जब न्यू टेस्टामेंट के उनके अध्ययन ने सुधारकों को विसर्जन द्वारा बपतिस्मा का अभ्यास शुरू करने के लिए प्रेरित किया, तो पास के रेडस्टोन बैपटिस्ट एसोसिएशन ने फेलोशिप के उद्देश्य से उनके साथ जुड़ने के लिए ब्रश रन चर्च को आमंत्रित किया। वे इस शर्त पर सहमत हुए कि उन्हें "धर्मग्रंथों से जो कुछ भी उन्होंने सीखा है उसका उपदेश देने और सिखाने की अनुमति दी जाएगी।"^{[9]:86}

अलेक्जेंडर कैम्बेल (1788 - 1866)

थॉमस का बेटासिकंदर 1809 में अमेरिका में उनके साथ शामिल हुए, और जल्द ही आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई।^{[3]:106} कैम्बेल्स ने 1815 से 1824 की अवधि के दौरान रेडस्टोन बैपटिस्ट एसोसिएशन के भीतर काम किया। सामूहिक राजनीति, [अक्सर मण्डलीवाद के रूप में जाना जाता है, की एक प्रणाली चर्च शासन जिसमें हरस्थानीय चर्च मण्डली स्वतंत्र है, उपशास्त्रीय रूप से सार्वभौम, यास्वायत्तशासी

- [wikipedia.org/wiki/कांग्रेगेशनलिस्ट_पोलिटी](http://en.wikipedia.org/wiki/कांग्रेगेशनलिस्ट_पोलिटी)] जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वह और उसके सहयोगी पारंपरिक बैपटिस्ट

⁵ Refer to thebiblewayonline.com - Millennium

⁶ <http://en.wikipedia.org/wiki/Eschatology>

¹⁴ <http://en.wikipedia.org/wiki/Eschatology>

¹¹¹ On May 4, 1811, the Christian Association constituted itself as a congregationally governed church and became known as Brush Run Church.^{[1]:117} When their study of the New Testament led the reformers to begin to practice baptism by immersion, the nearby Redstone Baptist Association invited Brush Run Church to join with them for the purpose of fellowship. They agreed provided that they would be "allowed to preach and to teach whatever they learned from the Scriptures."^{[9]:86}

Alexander Campbell (1788 – 1866)

Thomas' son Alexander joined him in the U.S. in 1809, and before long assumed the leading role in the movement.^{[3]:106} The Campbells worked within the Redstone Baptist Association during the period 1815 through 1824. While both the Campbells and the Baptists shared baptism by immersion and congregational polity, [often known as **congregationalism**, a system of [church governance](#) in which every [local church](#) congregation is independent, [ecclesiastically sovereign](#), or [autonomous](#) - [wikipedia.org/wiki/Congregationalist_polity](#)] it was soon clear that he and his associates were not traditional Baptists. Within the Redstone Association, the differences became intolerable to some of the Baptist leaders when Alexander Campbell began publishing a journal, *The Christian Baptist*, promoting reform. Campbell anticipated the conflict and moved his membership to a congregation of the Mahoning Baptist Association in 1824.^{[1]:131}

Alexander used *The Christian Baptist* to address what he saw as the key issue of reconstructing the apostolic Christian community in a systematic and rational manner. Part of this should be clearly distinguishing between essential and non-essential aspects of primitive Christianity.^{[3]:}

Things he identified as essential to apostolic Christianity were:

- congregational autonomy
- a plurality of elders in each congregation
- weekly communion and
- immersion [of believers] for the remission of sins."^{[3]:106}

नहीं थे। रेडस्टोन एसोसिएशन के भीतर, कुछ बैपटिस्ट नेताओं के लिए मतभेद असहनीय हो गए जब अलेक्जेंडर कैम्बेल ने सुधार को बढ़ावा देने के लिए एक पत्रिका, द क्रिश्चियन बैपटिस्ट प्रकाशित करना शुरू किया। कैम्बेल ने संघर्ष की उम्मीद की और 1824 में महोनिंग बैपटिस्ट एसोसिएशन की एक मण्डली में अपनी सदस्यता ले ली।^{[1]:131}

अलेक्जेंडर ने द क्रिश्चियन बैपटिस्ट का इस्तेमाल एक व्यवस्थित और तर्कसंगत तरीके से अपोस्टोलिक ईसाई समुदाय के पुनर्निर्माण के प्रमुख मुद्दे के रूप में देखा। इसका एक हिस्सा आदिम ईसाई धर्म के आवश्यक और गैर-आवश्यक पहलुओं के बीच स्पष्ट रूप से अंतर करना चाहिए।^{[3]:}

अपोस्टोलिक ईसाई धर्म के लिए आवश्यक चीजों की पहचान की गई थी:

- सामूहिक स्वायत्तता
- प्रत्येक मंडली में बड़ों की बहुलता
- साप्ताहिक भोज और
- विसर्जन [विश्वासियों का] पापों की क्षमा के लिए।"^{[3]:106}

उन चीजों में से जिन्हें उन्होंने गैर-जरूरी मानकर खारिज कर दिया था:

- पवित्र चुंबन
- deacons
- सांप्रदायिक जीवन
- पैर धोना और
- करिश्माई अभ्यास।"^{[3]:106}

वाल्टर स्कॉट (1796-1861)

1827 में महोनिंग एसोसिएशन ने वाल्टर स्कॉट को इंजीलवादी के रूप में नियुक्त किया। स्कॉट के प्रयासों से Mahoning Association का तेजी से विकास हुआ। 1828 में, थॉमस कैम्बेल ने स्कॉट द्वारा गठित कई मंडलियों का दौरा किया और उन्हें उपदेश सुना। कैम्बेल का मानना था कि स्कॉट इंजीलवाद के लिए अपने दृष्टिकोण के साथ आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण नया आयाम ला रहा था।^{[1]:132-133} 1830 में महोनिंग बैपटिस्ट एसोसिएशन भंग हो गया। अलेक्जेंडर ने क्रिश्चियन बैपटिस्ट का प्रकाशन बंद कर दिया और जनवरी 1831 में उन्होंने मिलेनियल हर्बिगर का प्रकाशन शुरू किया।^{[1]: 144-145}

[wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement](#)

ज्ञानोदय का प्रभाव

Among those things he rejected as non-essential were:

- the holy kiss
- deaconesses
- communal living
- foot washing and
- charismatic exercises."^{[3]:106}

Walter Scott (1796-1861)

In 1827, the Mahoning Association appointed Walter Scott as an evangelist. Through Scott's efforts, the Mahoning Association grew rapidly. In 1828, Thomas Campbell visited several of the congregations formed by Scott and heard him preach. Campbell believed that Scott was bringing an important new dimension to the movement with his approach to evangelism.^{[1]:132-133} In 1830, The Mahoning Baptist Association disbanded. Alexander ceased publication of the *Christian Baptist*, and in January 1831, he began publication of the *Millennial Harbinger*.^{[1]:144-145}

wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

Influence of the Enlightenment

Thomas Campbell was a student of the Enlightenment philosopher John Locke [1632-1674].^{[3]:82} Remember Locke had two core principles a) The messiahship of Jesus and b) Jesus' direct commands. Campbell proposed the same solution to religious division as had been advanced earlier by Herbert and Locke: "reduce religion to a set of essentials upon which all reasonable persons might agree."^{[3]:80} The essentials he identified were those things for which the Bible provided:

- Thus saith the Lord,
- Approved precedent"^{[3]:81}

He also argued for "a complete restoration of apostolic Christianity."^{[3]:82} Thomas believed that creeds served to divide Christians. He also believed that the Bible was clear enough that anyone could understand it and, as a result, that creeds were unnecessary.^{[11]:114}

Alexander Campbell was also deeply influenced by Enlightenment thinking, in particular the Scottish School of Common Sense of Thomas Reid and Dugald Stewart.^{[3]:84} This group saw the Bible as providing

थॉमस कैम्बेल प्रबोधन दार्शनिक जॉन लोके [1632-1674] के छात्र थे।^{[3]:82} याद रखें लॉक के दो मूल सिद्धांत थे a) दमसीहायीशु का और ब) यीशु की सीधी आज्ञाएँ। कैम्बेल ने धार्मिक विभाजन के लिए वही समाधान प्रस्तावित किया जो पहले हर्बर्ट और लोके द्वारा उन्नत किया गया था: "धर्म को अनिवार्य रूप से कम करें जिस पर सभी उचित व्यक्ति सहमत हो सकते हैं।"^{[3]:80} जिन आवश्यक बातों की उसने पहचान की वे वे चीजें थीं जिनके लिए बाइबल प्रदान करती है:

- इस प्रकार भगवान कहते हैं, '
- स्वीकृत मिसाल"^{[3]:81}

उन्होंने "प्रेरित ईसाई धर्म की पूर्ण बहाली" के लिए भी तर्क दिया।^{[3]:82} थॉमस का मानना था कि पंथ ईसाइयों को विभाजित करने का काम करते हैं। उनका यह भी मानना था कि बाइबल इतनी स्पष्ट थी कि कोई भी इसे समझ सकता था और परिणामस्वरूप, पंथ अनावश्यक थे।^{[11]:114}

अलेक्जेंडर कैम्बेल भी प्रबुद्धता की सोच से बहुत प्रभावित थे, विशेष रूप से थॉमस रीड और डगल्ड स्टीवर्ट के स्कॉटिश स्कूल ऑफ कॉमन सेंस।^{[3]:84} इस समूह ने बाइबल को अमूर्त सत्य के बजाय ठोस तथ्य प्रदान करने के रूप में देखा, और बाइबल की व्याख्या करने के लिए एक वैज्ञानिक या बेकनियन दृष्टिकोण की वकालत की जो उन तथ्यों से शुरू होगा, जो किसी दिए गए विषय पर लागू होते हैं, और फिर निष्कर्ष निकालने के लिए उनका उपयोग करते हैं।^{[3]:84} अलेक्जेंडर ने बार-बार यह तर्क देते हुए इस दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित किया कि "बाइबल तथ्यों की एक पुस्तक है, न कि विचारों, सिद्धांतों, अमूर्त सामान्यताओं, और न ही मौखिक परिभाषाओं की।"^{[3]:84} उनका मानना था कि यदि ईसाई खुद को बाइबल में पाए गए तथ्यों तक सीमित रखेंगे, तो वे अनिवार्य रूप से सहमत होंगे, और उन्होंने उन तथ्यों को चर्च के लिए एक खाका या संविधान प्रदान करने के रूप में देखा।^{[3]:84,}

विकी/रेस्टोरेशन_मूवमेंट

आंदोलन की विशेषताएं

थॉमस कैम्बेल के दृष्टिकोण ने बहाली के सुधारवादी और प्यूरिटन परंपराओं के साथ एकता के लिए प्रबुद्धता के दृष्टिकोण को जोड़ा।^{[3]:82,106} ज्ञानोदय ने कैम्बेल आंदोलन को दो तरह से प्रभावित किया। सबसे पहले, इसने यह विचार प्रदान किया कि ईसाई एकता आवश्यक चीजों का एक समूह खोजने के द्वारा प्राप्त की जा सकती है जिस पर सभी उचित लोग सहमत हो सकते हैं। दूसरा एक तर्कसंगत विश्वास की अवधारणा थी जिसे बाइबिल से प्राप्त तथ्यों के एक सेट के आधार पर तैयार और बचाव किया गया था।^{[3]:85,86}

concrete facts rather than abstract truths, and advocated a scientific or Baconian approach to interpreting the Bible that would begin with those facts, arrange the ones applicable to a given topic, and then use them to draw conclusions.^{[3]:84} Alexander reflected this approach arguing repeatedly that "the Bible is a book of facts, not of opinions, theories, abstract generalities, nor of verbal definitions."^{[3]:84} He believed that if Christians would limit themselves to the facts found in the Bible, they would necessarily come to agreement, and he saw those facts as providing a blueprint or constitution for the church.^{[3]:84,}

[wiki/Restoration_Movement](https://en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement)

Characteristics of the movement

Thomas Campbell's approach combined the Enlightenment approach to unity with the Reformed and Puritan traditions of restoration.^{[3]:82,106} The Enlightenment affected the Campbell movement in two ways. First, it provided the idea that Christian unity could be achieved by finding a set of essentials that all reasonable people could agree on. The second was the concept of a rational faith that was formulated and defended on the basis of a set of facts derived from the Bible.^{[3]:85, 86}

Like many others of his time, Alexander Campbell believed in the millennial ⁷theory. However, his was more optimistic than Stone's.^{[8]:6} He had more confidence in the potential for human progress and believed that Christians could unite to transform the world and initiate a millennial age.^{[8]:6} Alexander's approach was basically postmillennial, anticipating that the progress of the church and society would lead to an age of peace and righteousness before the return of Christ.^{[8]:6} This optimistic approach meant that, in addition to commitment to primitivism, there was also a progressive strand to his thinking.^{[8]:7}

en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

Chapter 3

अपने समय के कई अन्य लोगों की तरह, अलेक्जेंडर कैंपबेल सहस्राब्दी में विश्वास करते थे¹⁵लिखित। हालाँकि, उनका स्टोन की तुलना में अधिक आशावादी था।^{[8]:6} उन्हें मानव प्रगति की क्षमता में अधिक विश्वास था और उनका मानना था कि ईसाई दुनिया को बदलने और सहस्राब्दी की शुरुआत करने के लिए एकजुट हो सकते हैं।^{[8]:6} सिकंदर का दृष्टिकोण मूल रूप से पोस्टमिलेनियल था, यह अनुमान लगाते हुए कि चर्च और समाज की प्रगति मसीह की वापसी से पहले शांति और धार्मिकता के युग की ओर ले जाएगी।^{[8]:6} इस आशावादी दृष्टिकोण का मतलब था कि, आदिमवाद के प्रति प्रतिबद्धता के अलावा, उनकी सोच में एक प्रगतिशील पहलू भी था।^{[8]:7} en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

अध्याय 3

सहस्राब्दीवाद

शब्द "मिलेनियम" अंग्रेजी अनुवाद में नहीं होता है। यह एक लैटिन शब्द से है जिसका अर्थ है एक हजार वर्ष। विभिन्न व्याख्याएं हैं:

पूर्वसहस्राब्दीवादी मान लीजिए कि मसीह का राज्य अभी तक स्थापित नहीं हुआ है और उसका दूसरा शाब्दिक और शारीरिक रूप से धरती पर आना इसकी स्थापना से पहले होगा, जिसके बाद वह इतिहास के अंत से पहले एक हजार साल तक शासन करेगा।

व्यवस्थावादी विश्वास करें कि इज़राइल चर्च से अलग है, और यह कि ईश्वर इज़राइल में एक सहस्राब्दी राज्य स्थापित करेगा जहाँ मसीह, अपनी वापसी पर, एक हजार वर्षों तक यरूशलेम से दुनिया पर शासन करेगा

पोस्टमिलेनियलिस्ट विश्वास करें कि मसीह का राज्य उसके पहले आगमन की अगली कड़ी के रूप में स्थापित किया गया था, कि सहस्राब्दी इतिहास के अंत तक राज्य का स्वर्ण युग होगा और जिसके बाद इतिहास के अंत में मसीह दूसरी बार आएगा।

सहस्राब्दीवादी इनमें से किसी भी सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते, लेकिन विभिन्न कारणों से। उनमें से कुछ का मानना है

⁷ Refer to thebiblewayonline.com - Millennium

¹⁵ [Thebiblewayonline.com](https://thebiblewayonline.com) - मिलेनियम का संदर्भ लें

Millennialism

The term "millennium" does not occur in English translation. It is from a Latin word meaning a thousand years. The various interpretations are:

Premillennialists take it that Christ's kingdom has not yet been established and that his second literal and bodily coming to earth will precede its establishment, after which he will reign for a thousand years before the end of history.

Dispensationalists believe that Israel is distinct from the Church, and that God will establish a millennial kingdom in Israel where Christ, upon His return, will rule the world from Jerusalem for a thousand years

Postmillennialists believe Christ's kingdom was established as a sequel to his first coming, that the millennium will be a golden age of the kingdom lasting till near the end of history and after which Christ will come a second time at the end of history.

Amillennialists do not accept any of these theories, but for various reasons. Some of them believe that no time element at all is symbolized by the thousand years, but simply the completeness of the victory of Christ and his saints over Satan and all his agents. See comparison on the following page.

कि समय का कोई भी तत्व हजार वर्षों का प्रतीक नहीं है, बल्कि शैतान और उसके सभी एजेंटों पर मसीह और उसके संतों की जीत की पूर्णता है। अगले पेज पर तुलना देखें।

य
श
प
ह
ला
आ
ग
म
ना

✦ अंतिम निर्णय दूसरा आ रहा है
कलेश मिलेनियम एक्स

5. क्लेशोत्तर पूर्वसहस्राब्दीवाद

दूसरा आ रहा है या दूसरा कमिंग
चर्च जजमेंट के साथ चर्च रैप्चर
लेश सहस्राब्दी एक्स

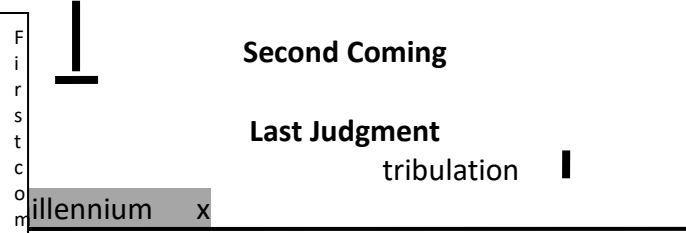
6. प्री-ट्रिबेशनल प्रीमिलेनियलिज्म (डिस्पेंसेशनल)

दूसरा आने वाला अंतिम निर्णय

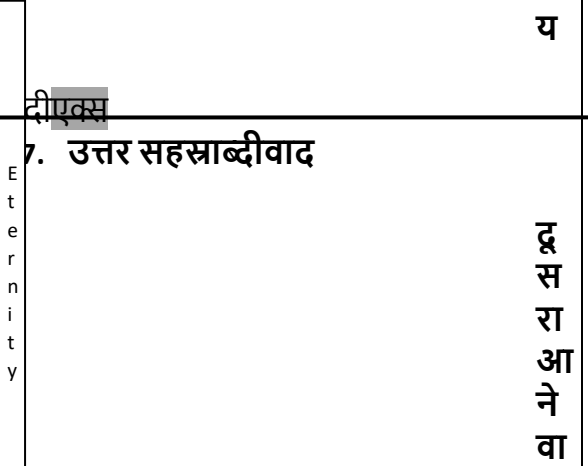
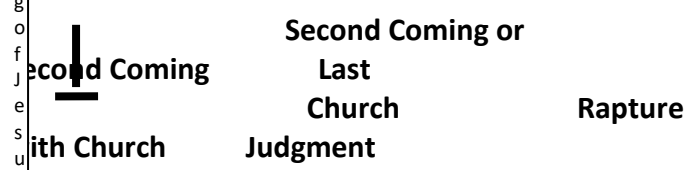
✦ सहस्राब्दी एक्स

7. उत्तर सहस्राब्दीवाद

दूसरा आने वाला



1. Post-tribulational Premillennialism



<p>millennium x</p>	<p>tribulation</p>	<p>ला अं ति म नि र्ण य</p>
<p>2. Pre-tribulational Premillennialism (dispensational)</p>	<p>Section 8. सहस्राब्दीवाद en.wikipedia.org/wiki/Postmillennialism</p> <p>ईसाई धर्म से जुड़े पूर्वसहस्राब्दीवाद का पहला स्पष्ट विरोधी मार्सियन (85-160 ईस्वी) था। मार्सियन ने पुराने नियम और नए नियम की अधिकांश पुस्तकों के उपयोग का विरोध किया जो कि प्रेरित पौलुस द्वारा नहीं लिखी गई थीं। वह पहला महान विधर्मी था जिसने मसीह के आसन्न, व्यक्तिगत वापसी के सिद्धांत को छोड़ने में प्रारंभिक चर्च के विश्वास के साथ भारी रूप से तोड़ दिया। मार्सियन एक वास्तविक अवतार में विश्वास नहीं करते थे, और फलस्वरूप उनके सिस्टम में वास्तविक दूसरे आगमन के लिए कोई तार्किक स्थान नहीं था। उसने पुराने नियम और उसके कानून की वैधता को नकारते हुए अधिकांश मानव जाति के खो जाने की अपेक्षा की। अन्य पूर्व-निकियन प्रीमिलेनियलिस्ट इरेनियस, जस्टिन, थियोफिलस, टर्टुलियन और रोम के हिप्पोलिटस थे। en.wikipedia.org/wiki/Preमिलेनियलिज़्म</p>	
<p>millennium x</p> <p>3. Postmillennialism</p>	<p>S Section सहस्राब्दीवाद मध्ययुगीन पारसी धर्म का एक सिद्धांत है, जो लगातार हज़ार साल की अवधि के बारे में है, जिनमें से प्रत्येक विधर्म और विनाश के प्रलय में समाप्त हो जाएगा, जब तक कि अंत में शांति के विजयी राजा द्वारा बुराई और बुराई की भावना का अंतिम विनाश न हो जाए। अंतिम सहस्राब्दी आयु (कुछ लोगों द्वारा वर्ष 2000 माना जाता है)। "फिर Saoshyant [फारसी पौराणिक कथाओं में Saoshyant वह है जो समय के अंत में सभी जीवन को नवीनीकृत करने के लिए आएगा।] जीवों को फिर से शुद्ध बनाता है, और पुनरुत्थान और भविष्य का अस्तित्व होता है" (ज़ंद-ए वोहुमन यश 3:62)।</p> <p>विभिन्न अन्य सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों, दोनों धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष, को सहस्राब्दीवादी रूपकों से भी जोड़ा गया है</p>	

बाइबल क्या कहती है? प्रकाशितवाक्य 20:1-15

- "और मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा,
- उसके पास रसातल की कुंजी है और उसके हाथ में एक बड़ी जंजीर है।
- उस ने उस अजगर, उस पुराने सांप को, जो इब्लीस या शैतान है, पकड़ लिया, और एक हजार वर्ष के लिथे बान्ध दिया।
- और उस ने उसे अथाह कुंड में डाल दिया, और उस पर बन्द करके उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगोंको फिर धोखा न दे।
- उसके बाद, उसे थोड़े समय के लिए आज़ाद किया जाना चाहिए।

symbolic

millennium

4. Amillennialism

en.wikipedia.org/wiki/Postmillennialism

The first clear opponent of premillennialism associated with Christianity was Marcion (85-160 AD). Marcion opposed the use of the Old Testament and most books of the New Testament that were not written by the apostle Paul. He was the first great heretic who broke drastically with the faith of the early church in abandoning the doctrine of the imminent, personal return of Christ. Marcion did not believe in a real incarnation, and consequently there was no logical place in his system for a real Second Coming. He expected the majority of mankind to be lost denying the validity of the Old Testament and its Law. Other pre-Nicean premillennialists were Irenaeus, Justin, Theophilus, Tertullian, and Hippolytus of Rome.

en.wikipedia.org/wiki/Premillennialism

Millennialism is also a doctrine of medieval Zoroastrianism concerning successive thousand-year periods, each of which will end in a cataclysm of heresy and destruction, until the final destruction of evil and of the spirit of evil by a triumphant king of peace at the end of the final millennial age (supposed by some to be the year 2000). "Then

- मैंने सिंहासन देखे जिन पर वे बैठे थे जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था।
- और मैंने उन लोगों की आत्माओं को देखा जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे। उन्होंने उस पशु या उसकी मूर्ति की पूजा नहीं की थी और न ही अपने माथे या अपने हाथों पर उसकी छाप ली थी।
- वे जी उठे और मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। (शेष मरे हुए हजार वर्ष के पूरे होने तक जीवित न हुए।) यह पहला पुनरुत्थान है।
- धन्य और पवित्र वे हैं जो पहले पुनरुत्थान के भागी हैं।
- दूसरी मृत्यु का उन पर कोई अधिकार नहीं, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे।
- जब हजार साल पूरे हो जाएँगे, तो शैतान को उसकी कैद से रिहा कर दिया जाएगा और वह चारों कोनों में जाकर राष्ट्रों को धोखा देगा च पृथ्वी - गोग और मागोग - उन्हें युद्ध के लिए इकट्ठा करने के लिए। वे गिनती में समुद्र के बालू के किनकोंके समान हैं। वे पृथ्वी भर में फैल गए, और परमेश्वर के लोगोंकी छावनी को जिस नगर से वह प्रेम रखता था, उसको घेर लिया। परन्तु आग स्वर्ग से उतरी और उन्हें भस्म कर डाला।
- और उनका भरमानेवाला शैतान उस जलती हुई गंधक की झील में, जहां वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता डाला गया था, फेंक दिया गया। वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।
- फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसे जो उस पर विराजमान है, देखा। पृथ्वी और आकाश उसके साम्हने से भाग गए, और उनके लिथे कोई स्थान न रहा।
- और मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुआँ को सिंहासन के साम्हने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं। एक और किताब

Saoshyant [In Persian mythology Saoshyant is the one who will come to renew all life at the end of time.] makes the creatures again pure, and the resurrection and future existence occur" (*Zand-i Vohuman Yasht 3:62*).

Various other social and political movements, both religious and secular, have also been linked to millennialist metaphors

What does the Bible state? Revelation 20:1-15

- "And I saw an angel coming down out of heaven,
- having the key to the Abyss and holding in his hand a great chain.
- He seized the dragon, that ancient serpent, who is the devil, or Satan, and bound him for a thousand years.
- He threw him into the Abyss, and locked and sealed it over him, to keep him from deceiving the nations anymore until the thousand years were ended.
- After that, he must be set free for a short time.
- I saw thrones on which were seated those who had been given authority to judge.
- And I saw the souls of those who had been beheaded because of their testimony for Jesus and because of the word of God. They had not worshiped the beast or his image and had not received his mark on their foreheads or their hands.
- They came to life and reigned with Christ a thousand years. (The rest of the dead did not come to life until the thousand years were ended.) This is the first resurrection.
- Blessed and holy are those who have part in the first resurrection.
- The second death has no power over them, but they will be priests of God and of Christ and will reign with him for a thousand years.
- When the thousand years are over, Satan will be released from his prison and will go out to deceive the nations in the four corners of the earth — Gog and Magog — to gather them for battle. In number they are like the sand on the seashore. They marched across the breadth of the earth and surrounded the camp of God's people, the city he loves. But fire came down from heaven and devoured them.

खोली गई, जो जीवन की किताब है। जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुएों का न्याय किया गया। समुद्र ने उन मरे हुएों को जो उस में थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुएों को जो उन में थे दे दिया, और हर एक के कामोंके अनुसार उसका न्याय किया गया। तब मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में डाल दिया गया। आग की झील दूसरी मौत है। जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

एक संक्षिप्त व्याख्या

- **स्वर्ग से एक परी**- यूहन्ना पृथ्वी पर है जब वह दर्शन के इस भाग को देखता है
- **रसातल की चाबी होना**- नौवें अध्याय में शैतान के पास यह कुंजी थी, इसलिए अब वह पराजित हो गया है।
- **1000 साल के लिए बंधे डैगन**- शैतान पूरी तरह से और पूरी तरह से [पूरी तरह से] हार गया है और रोम के माध्यम से चर्च के खिलाफ काम करने के संदर्भ में बाध्य है, (गवाह जंजीर, गड्डे और सीलिंग बंद)। यह रोमन साम्राज्य के इतिहास का अंत था लेकिन शैतान के लिए नहीं। उसे अन्य राष्ट्रों का उपयोग करके फिर से प्रयास करने के लिए छोड़ दिया जाएगा।
- **1000 साल के लिए**- 1000 साल एक समय अवधि नहीं बल्कि मामलों की स्थिति की बात करते हैं। शैतान पर लागू यह कुल हार है। संतों के लिए लागू यह कुल जीत है। 1000 की संख्या का अर्थ समग्रता है। भजन संहिता 50:10 कहता है कि परमेश्वर एक हजार पहाड़ियों पर मवेशियों का मालिक है। व्यवस्थाविवरण 7:9 कहता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को एक हजार पीढ़ियों तक पूरा करता है। भजन संहिता 105:8 और 1 इतिहास 16:15 कहता है कि परमेश्वर ने एक हजार पीढ़ियों तक अपने वचन की आज्ञा दी। विचार समग्रता है और सीमित समय अवधि नहीं है।

1000 वर्षों के बारे में कुछ अन्य विचारों या सिद्धांतों पर ध्यान दें:

1. 1000 वर्ष संपूर्ण ईसाई व्यवस्था है (तब से समय के अंत तक)। इस विचार के साथ समस्या यह है कि इसके लिए समय की समाप्ति के बाद पृथ्वी के इतिहास की थोड़ी सी अवधि की आवश्यकता होती है।
2. 1000 वर्ष मसीह के दूसरे आगमन से ठीक पहले तक का समय है। इस विचार के साथ समस्या यह है कि यह

- And the devil, who deceived them, was thrown into the lake of burning sulfur, where the beast and the false prophet had been thrown. They will be tormented day and night for ever and ever.
- Then I saw a great white throne and him who was seated on it. Earth and sky fled from his presence, and there was no place for them.
- And I saw the dead, great and small, standing before the throne, and books were opened. Another book was opened, which is the book of life. The dead were judged according to what they had done as recorded in the books. The sea gave up the dead that were in it, and death and Hades gave up the dead that were in them, and each person was judged according to what he had done. Then death and Hades were thrown into the lake of fire. The lake of fire is the second death. If anyone's name was not found written in the book of life, he was thrown into the lake of fire.

A brief explanation

- **An Angel from Heaven** - John is on earth when he sees this part of the vision
- **Having the key to the abyss** – In chapter nine Satan had this key, so now He has been defeated.
- **The dragon bound for 1000 years** - The devil is totally and perfectly [completely] defeated and bound with reference to his working through Rome against the church, (witness the chain, the pit and the sealing closed). This was the end of the history of the Roman Empire but not for Satan. He would be released to try again using other nations.
- **For 1000 years** - 1000 years does not speak of a time period but a state of affairs. Applied to Satan it is total defeat. Applied to the saints it is total victory. The number 1000 means totality. Psalm 50:10 says God owns the cattle on a thousand hills. Deuteronomy 7:9 says God keeps His promises for a thousand generations. Psalm 105:8 and 1 Chronicles 16:15 says God commanded His word for a thousand

ईसाइयों के शासनकाल को पूरे ईसाई युग से भी कम तक सीमित कर देगा।

3. रोम के विनाश के 1000 साल बाद जब ईसाई धर्म पनपा। इस विचार के साथ समस्या यह है कि इसमें मृत शहीदों को लगभग एक हजार साल पहले जीवित करने की आवश्यकता होगी।

- **सीलबंद रसातल में शैतान**- शैतान कार्रवाई में सीमित नहीं है, उसे रोक दिया गया है।
- **राष्ट्रों को धोखा देने के लिए शैतान थोड़े समय के लिए खुला**- यह कोई समय अवधि नहीं है बल्कि एक संदेश है जहां भगवान ईसाइयों से कहते हैं: "मैंने अतीत में आपकी रक्षा की और भविष्य में, कहीं भी, कभी भी, किसी भी दुश्मन के खिलाफ करूंगा। यह भविष्य के लिए भगवान की गारंटी है, जैसे यह जकेल 38-39 में।
- **तख्तों पर बैठने वाले**- सिंहासनों पर बैठने वाले ही राज्य करते हैं। ये वे हैं जिन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया था। कौन हैं वे? वे विजयी, विश्वासयोग्य संत, जीवित या मृत हैं। यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि विजेता राष्ट्रों पर शासन करने में उसके साथ भाग लेंगे (प्रकाशितवाक्य 2:26f; 3:21; 11:15-18; 18:20)। यह दानियेल 7:21, 22 के समान है।
- **उनमें से आत्माओं ने यीशु की खातिर सिर काट लिया**- ये हैं जुल्म में शहीद। वे जी उठे हैं (वे जीवित हैं) और मसीह के साथ राज्य करते हैं। प्रकाशितवाक्य 19 की लड़ाई के बाद युद्ध के मैदान की कल्पना कीजिए जहाँ मारे गए लोगों की लाशें बिछी हुई हैं। वे मारे गए जो ईसाई शहीद हैं, पुनर्जीवित होते हैं और परमेश्वर के साथ शासन करने के लिए जीवित संतों के साथ सिंहासन पर बैठते हैं। जो मारे गए वे हारे नहीं क्योंकि वे तुरंत मरने के लिए जी उठे थे। यह प्रथम पुनर्जीवन है।" ध्यान दें कि ये केवल प्रकाशितवाक्य के संघर्ष में शहीद हैं और वे ईसाई नहीं हैं जो पूरे इतिहास में मर गए थे। यह एक शाब्दिक पुनरुत्थान नहीं है जो यीशु के वापस आने पर होगा। यहाँ केवल यह कहने का एक प्रतीकात्मक तरीका है कि विश्वासी संत विजयी और सुरक्षित हैं।
- **बाकी मृतक**- क्या वे हैं जो पशु की सेवा में दृष्टि में मर गए और वे 1000 वर्षों तक (प्रतीकात्मक रूप से) मृत रहते हैं केवल फिर से उठाए जाने और नष्ट किए जाने के लिए। वे हारे हुए जी रहे थे। वे मरे हुए हारे हुए हैं और वे केवल हारे हुए होने के लिए फिर से जीवित रहेंगे। श्लोक 5 कोष्ठक है। समझ पाने के लिए v4 फिर v5b पढ़ें: ("ईसाई शहीद

generations. The idea is totality and not a limited time period.

Notice some other ideas or theories regarding the 1000 years:

1. 1000 years is the whole Christian dispensation (from then until the end of time). The problem with this idea is that it requires a little time period of earth history after the end of time.
 2. 1000 years is all of time until just before the second coming of Christ. The problem with this idea is that it would limit the reigning priesthood period of the Christians to less than the whole Christian era.
 3. 1000 years following the destruction of Rome when Christianity flourished. The problem with this idea is that it would require the dead martyrs to be raised about a thousand years ago.
- **Satan in the sealed abyss** - Satan is not limited in action, he is stopped!
 - **Satan loosed for a little time to deceive the nations** - This is not a time period but a message where God says to the Christians: "I protected you in the past and will do it in the future, anywhere, anytime, against any foe. This is God's guarantee for the future, just like in Ezekiel 38-39.
 - **Those sitting on thrones** - Those who sit on thrones are reigning. They are those to whom was given the authority to judge. Who are they? They are victorious, faithful saints, living or dead. Jesus had promised that the overcomers would share with Him in ruling over the nations (Revelation 2:26f; 3:21; 11:15-18; 18:20). This is the same as Daniel 7: 21, 22.
 - **Souls of them beheaded for Jesus' sake** - These are the martyrs in the persecution. They are resurrected (they live) and reign with Christ. Picture the battleground after the battle of Revelation 19 with the ground littered with the bodies of the slain. Those slain that are Christian martyrs are resurrected and join the living saints on thrones to rule with God. Those who were killed did not lose out because immediately they

एक हज़ार साल तक मसीह के साथ रहे और शासन किया। यह पहला पुनरुत्थान है।") कि यीशु के दुश्मन एक हज़ार साल तक मरे रहेंगे, इसका सीधा सा मतलब है कि वे पूरी तरह से हार गए थे मसीह और चर्च के खिलाफ उनके युद्ध में। यह एक शाब्दिक समय अवधि की बात नहीं कर रहा है।

- **पहला पुनरुत्थान**- यह यीशु के लिए शहीदों का पुनरुत्थान है। इसे "पहला" कहा जाता है क्योंकि यह दूसरा पुनरुत्थान देखेगा। परमेश्वर के सेवक और जानवर के सेवक दोनों ही पहली मृत्यु में मर गए लेकिन केवल अच्छे लोग ही पहले पुनरुत्थान में हैं। पहला पुनरुत्थान जीवन और शासन के लिए है लेकिन दूसरा पुनरुत्थान दूसरी मृत्यु के लिए है। संदेश यह है कि मसीह में मरे हुए जीत में वैसे ही भाग लेते हैं जैसे परमेश्वर के जीवित सेवक निश्चित रूप से करते हैं।
- **परमेश्वर के पुजारी ...1000 वर्ष शासन करते हैं**- यह इस बारे में बात नहीं करता है कि यीशु कितने समय तक शासन करेगा लेकिन संत कितने समय तक शासन करेंगे। यहाँ बात समय की नहीं बल्कि कुल विजय और आशीर्वाद की है। मरने से पहले जो उनके पास था (याजकों का राज्य), मरने के बाद भी जारी रहा। जीवन में और मृत्यु में भगवान के सेवक विजयी होते हैं।
- **शैतान ने राष्ट्रों को धोखा दिया और धोखा दिया (फिर से)**- भगवान के सेवकों के विश्वास को नष्ट करने के लिए शैतान दुनिया में काम करता रहेगा।
- **गोग और मागोग**- वे कोई भी हों फिर भी विशेष रूप से कोई नहीं जैसा कि यहजेकेल 38, 39 में उनका उपयोग किया गया था। संदेश दोनों स्थानों पर यह है: परमेश्वर अपने लोगों से कहता है: "मैंने पहले ही तुम्हारी रक्षा की है और इस वर्तमान संकट में तुम्हें विजयी बनाया है और मैं करूँगा जब भी आपको इसकी आवश्यकता हो, इसे फिर से करें।" जोर इस नए भविष्य के दुश्मन (जो भी हो) के आकार पर है और जिस आसानी से भगवान उन्हें हरा देंगे। ईसाई, अभी या भविष्य में किसी भी और सभी दुश्मनों से आपकी रक्षा करने की भगवान की इच्छा और क्षमता के बारे में चिंता न करें! पूर्व सहस्राब्दी सिद्धांतों के बारे में एक नोट: एक ऐसी दुनिया में ईश्वर से नफरत करने वालों की एक विशाल सेना बनाने के सभी प्रयास जहाँ शैतान कार्य नहीं करता है और केवल ईश्वर के सेवक रहते हैं, असफलता के लिए अभिशप्त है (विशेषकर यदि आप धर्मत्याग की असंभवता में विश्वास करते हैं)।

were raised to die no more. This is the "first resurrection." Notice that these are only the martyrs in the conflict of Revelation and not those Christians who had died all throughout history. This is not a literal resurrection that will happen when Jesus returns. Here is only a symbolic way of saying the faithful saints are victorious and secure.

- **The rest of the dead** - are those who died in the vision in service of the beast and they remain dead for 1000 years (symbolically) only to be raised up and destroyed again. They were living losers. They are dead losers and they will live again only to be losers. Verse 5 is parenthetical. To get the sense read v4 then v5b: ("The Christian martyrs lived and reigned with Christ for a thousand years. This is the first resurrection.") That the foes of Jesus remain dead for a thousand years simply means that they were totally defeated in their war against Christ and the church. It is not referring to a literal time period.
- **The first resurrection** - this is the resurrection of martyrs for Jesus. It is called "first" because John will see a second resurrection. Both God's servants and the beast's servants died in the first death but only the good guys are in the first resurrection. The first resurrection is to life and reigning but the second resurrection is to the second death. The message is that the dead in Christ share in the victory just as surely as do the living servants of God.
- **Priests of God ...reign 1000 years** - this doesn't talk about how long Jesus reigns but how long the saints would reign. The point here is not time but total victory and blessedness. What they had before they died (kingdom of priests), continued after they died. In life and in death the servants of God are victorious.
- **Satan loosed and deceives the nations (again)** - Satan will continue to operate in the world to destroy the faith of God's servants.
- **Gog and Magog** - They are anybody yet nobody in particular just as they were used in Ezekiel 38,

- **शैतान आग की झील में डाला गया**- आग की झील कुल हार का प्रतीक है। आग की झील में फेंके जाने के बाद कोई नहीं लौटता। यह शाश्वत दण्ड के बारे में नहीं है बल्कि परमेश्वर के लोगों की जीत और परमेश्वर के शत्रुओं की हार के बारे में है।
- **बड़ा सफेद सिंहासन**- शाब्दिक निर्णय का दिन नहीं है जिसके पहले सभी पुरुषों को एक दिन उपस्थित होना चाहिए। यह बिल्कुल दानियेल 7:9-12 की तरह है जहां रोम (चौथे राज्य) का न्याय किया जाता है।
- **दूसरा पुनरुत्थान**- पशु के उपासक उठाए जाते हैं। भगवान के सेवक इसलिए नहीं हैं क्योंकि वे 1000 साल पहले (दर्शन में) उठाए गए थे।

इस दृष्टि में शैतान को यह दिखाने के लिए 1000 साल का समय दिया गया है कि कैसे वह रोम का उपयोग करके चर्च के खिलाफ अपने युद्ध में पूरी तरह से हार गया था। वह थोड़ी देर के लिए ढीला हो गया क्योंकि रोम के बाद अन्य प्रयास होंगे और उनका वही हथ्र होगा। विजय को संतों (जीवित और जीवित लोगों) के राज्य करने और पूर्ण [पूर्ण] विजय में न्याय करने की दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है। यह अध्याय कहता है कि मसीह और उसकी कलीसिया की पूर्ण विजय और शैतान और रोमी साम्राज्य को सताने वाली कलीसिया की पूर्ण पराजय। जॉन द एपोस्टल, जो मैककिनी, TheBibleWay ऑनलाइन के रहस्योद्घाटन से रहस्योद्घाटन 20 स्पष्टीकरण

अध्याय 4

विलय और विभाजन

स्टोन और कैपबेल आंदोलनों का विलय

कैपबेल आंदोलन को शुरुआती चर्च के "व्यवस्थित और तर्कसंगत पुनर्निर्माण" की विशेषता थी, स्टोन आंदोलन के विपरीत, जो कट्टरपंथी स्वतंत्रता और हठधर्मिता की कमी की विशेषता थी।^{[3]:106-108}

अपने मतभेदों के बावजूद, दोनों आंदोलनों ने कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहमति व्यक्त की।^{[3]:108} दोनों ने अपोस्टोलिक ईसाई

39. The message is this in both places: God says to His people: "I have already defended you and made you victorious in this present crisis and I will do it again whenever you need it." The emphasis is on the size of this new future enemy (whatever) and the ease with which God will defeat them also. Christians, don't worry about God's desire and ability to protect you against any and all enemies, now or in the future! A note about pre-millennial theories: All attempts to create a huge army of God-haters in a world where Satan does not act and only God's servants live is doomed to failure (especially if you believe in the impossibility of apostasy).

- **The devil cast into the lake of fire** - The lake of fire symbolizes total defeat. Nobody returns after being thrown into the lake of fire. This is not about eternal punishment but victory of God's people and defeat of God's enemies.
- **Great white throne** - is not the literal judgment day before which all men must appear one day. This is just like Daniel 7:9-12 where Rome (the fourth kingdom) is judged.
- **Second resurrection** - the beast's worshippers are raised. The servants of God are not because they were raised 1000 years earlier (in the vision).

In this vision the devil is bound 1000 years to show how he was totally defeated in his war against the church using Rome. He is loosed a little while because after Rome there would be other attempts and they would meet the same fate. Victory is presented by the vision of saints (living ones and raised ones) reigning and judging in perfect [complete] victory. This chapter says complete victory of Christ and His church and complete defeat for Satan and the church persecuting Roman Empire. Revelation 20 explanation from [The Revelation of John The Apostle](#), Joe McKinney, TheBibleWay Online

धर्म को सहस्राब्दी को तेज करने के साधन के रूप में देखा।^{[3]:108}दोनों ने शुरुआती चर्च को ईसाई स्वतंत्रता के मार्ग के रूप में बहाल करने को भी देखा।^{[3]:108}और, दोनों मानते थे कि ईसाइयों के बीच एकता है¹⁶एपोस्टोलिक ईसाई धर्म को एक मॉडल के रूप में उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है।^{[3]:108}शुरुआती चर्च को बहाल करने और ईसाइयों को एकजुट करने के लिए दोनों आंदोलनों की प्रतिबद्धता दो आंदोलनों में कई लोगों के बीच एकता को प्रेरित करने के लिए पर्याप्त थी।^{[8]:} 8,

⁹en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

टिप्पणी: चूंकि दोनों चर्च की स्वायत्तता में विश्वास करते थे, विलय का उद्देश्य क्या था?

"रेकून जॉन" स्मिथ (1784-1868)

दो समूह हाई स्ट्रीट मीटिंग हाउस, लेक्सिंगटन, केंटकी में बार्टन डब्ल्यू स्टोन और "रेकून" जॉन स्मिथ, शनिवार, 31 दिसंबर, 1831 के बीच एक हाथ मिलाने के साथ एकजुट हुए।^{[9]: 116-120}कैपबेल के अनुयायियों की ओर से बोलने के लिए स्मिथ को उपस्थित लोगों द्वारा चुना गया था।^{[9]:116}

इकट्ठे हुए लोगों के दो प्रतिनिधियों को संघ की खबर को सभी चर्चों तक ले जाने के लिए नियुक्त किया गया था: ईसाइयों के लिए जॉन रोजर्स और सुधारकों के लिए "रेकून" जॉन स्मिथ। कुछ चुनौतियों के बावजूद विलय सफल रहा।^{[1]: 153-154}कई लोगों का मानना था कि संघ संयुक्त आंदोलन की भविष्य की सफलता के लिए बहुत बड़ा वादा रखता है, और इस समाचार को उत्साहपूर्वक बधाई दी।^{[8]:9}

विलय के साथ ही चुनौती थी कि नए आंदोलन को क्या नाम दिया जाए। स्पष्ट रूप से, एक बाइबिल, गैर-सांप्रदायिक नाम खोजना महत्वपूर्ण था। स्टोन "ईसाई" नाम का उपयोग जारी रखना चाहते थे। अलेक्जेंडर कैपबेल ने "मसीह के शिष्यों" पर जोर दिया। नतीजतन, दोनों नामों का इस्तेमाल किया गया।^{[1]:27-28}

आंदोलन की शुरुआत से, लोगों के बीच विचारों के मुक्त आदान-प्रदान को इसके नेताओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं द्वारा बढ़ावा दिया गया। अलेक्जेंडर कैपबेल ने द क्रिश्चियन बैपटिस्ट और द मिलेनियल हर्बिगर प्रकाशित किया। स्टोन ने द क्रिश्चियन मैसेंजर प्रकाशित किया।^{[12]:208}सम्मानजनक तरीके से, दोनों पुरुषों ने नियमित रूप से दूसरों के योगदान

Chapter 4

Mergers and Divisions

Merge of the Stone and Campbell movements

The Campbell movement was characterized by a "systematic and rational reconstruction" of the early church, in contrast to the Stone movement which was characterized by radical freedom and lack of dogma.^{[3]:106-108}

Despite their differences, the two movements agreed on several critical issues.^{[3]:108} Both saw restoring apostolic Christianity as a means of hastening the millennium.^{[3]:108} Both also saw restoring the early church as a route to Christian freedom.^{[3]:108} And, both believed that unity among Christians⁸ could be achieved by using apostolic Christianity as a model.^{[3]:108} The commitment of both movements to restoring the early church and to uniting Christians was enough to motivate a union between many in the two movements.^{[8]:8, 9}
en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

Note: Since both believed in church autonomy, what was purpose of merging?

"Raccoon John" Smith (1784-1868)

The two groups united at High Street Meeting House, Lexington, Kentucky with a handshake between Barton W. Stone and "Raccoon" John Smith, Saturday, December 31, 1831.^{[9]:116-120} Smith had been chosen, by those present, to speak in behalf of the followers of the Campbells.^{[9]:116}

Two representatives of those assembled were appointed to carry the news of the union to all the churches: John Rogers, for the Christians and "Raccoon" John Smith for the reformers. Despite some challenges, the merger succeeded.^{[1]:153-154} Many believed the union held great promise for the future success of the combined movement, and greeted the news enthusiastically.^{[8]:9}

को प्रकाशित किया, जिनकी स्थिति उनके अपने से मौलिक रूप से भिन्न थी।

जब पत्थर और अलेक्जेंडर कैंपबेल के सुधारकों (जिन्हें शिष्य और ईसाई बैपटिस्ट के रूप में भी जाना जाता है) 1832 में एकजुट हुए, स्मिथ/जोन्स और ओ'केली आंदोलनों के केवल अल्पसंख्यक ईसाइयों ने भाग लिया।^{[6]:190} जो लोग थे वे अप्पलाचियन पर्वत के पश्चिम की मंडलियों से थे जो स्टोन आंदोलन के संपर्क में आए थे।^{[6]:190} स्टोन और कैंपबेल समूह के साथ पूर्वी सदस्यों के कई महत्वपूर्ण अंतर थे: रूपांतरण अनुभव पर जोर, सांप्रदायिकता का त्रैमासिक पालन, और nontrinitarianism।^{[6]:190} जो लोग कैंपबेल के साथ एकजुट नहीं हुए, वे 1931 में कांग्रेसनल क्रिश्चियन चर्च बनाने के लिए कांग्रेसनल चर्चों में विलय हो गए।^{[6]: 191} 1957 में, कांग्रेसनल क्रिश्चियन चर्च का इवेंजेलिकल एंड रिफॉर्मड चर्च के साथ विलय हो गया और वह यूनाइटेड चर्च ऑफ क्राइस्ट बन गया।^{[6]: 191}

en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

युद्ध के तनाव, समाज और गायन/चर्च संगीत

एक बार बहाली आंदोलन के अग्रणी प्रचारकों, जैसे कि स्टोन और कैंपबेल, ने आंदोलन के मूल सिद्धांतों को तैयार किया था, उन्होंने एक जोश के साथ प्रचार करना शुरू किया जिसने चर्च को अभूतपूर्व विकास की अवधि के लिए प्रेरित किया। स्वयं शिष्यों के अनुमान के अनुसार 1836 में उनकी संख्या 100,000 और 1850 में 200,000 या 300,000 थी। 1850 की जनगणना के अनुसार शिष्यों ने देश में चौथा सबसे बड़ा धार्मिक निकाय गठित किया। 1870 की जनगणना ने इसे पांचवें स्थान पर रखा। अग्रणी प्रचारकों के उत्साही मजदूरों के साथ-साथ स्वतंत्रता-प्रेमी अमेरिकियों को बहाली द्वारा प्रदान किए गए सांप्रदायिक बंधनों से मुक्ति ने तेजी से प्रगति की इस अवधि को संचालित किया। हालाँकि, विघटनकारी प्रभाव क्षितिज पर थे, और उन्होंने इस पूरी प्रगति को बाधित करने, या यहाँ तक कि पूर्ववत करने की धमकी दी।

1. गृह युद्ध

अमेरिकी धार्मिक परिदृश्य के लिए गृहयुद्ध बहुत विघटनकारी था। कुछ चर्च विभाजित हो गए और अन्य इतने निराश हो गए कि उन्होंने मिलना बंद कर दिया। कई भाइयों सहित पूरा देश युद्ध के बुखार से इतना ग्रसित था कि आध्यात्मिक चिंता के लिए उनके दिलों में बहुत कम जगह बची थी। चर्च के युवा पुरुष ब्लू और ग्रे के रैंकों में शामिल होने के लिए चले गए, और उनमें से कुछ युद्ध में मारे गए। कुछ प्रचारकों ने एक-दूसरे के

⁸ Refer to thebiblewayonline.com - United In Christ

With the merger, there was the challenge of what to call the new movement. Clearly, finding a Biblical, non-sectarian name was important. Stone wanted to continue to use the name "Christians." Alexander Campbell insisted upon "Disciples of Christ". As a result, both names were used.^{[1]:27-28}

From the beginning of the movement, the free exchange of ideas among the people was fostered by the journals published by its leaders. Alexander Campbell published *The Christian Baptist* and *The Millennial Harbinger*. Stone published *The Christian Messenger*.^{[12]:208} In a respectful way, both men routinely published the contributions of others whose positions were radically different from their own.

When Stone and Alexander Campbell's Reformers (also known as Disciples and Christian Baptists) united in 1832, only a minority of Christians from the Smith/Jones and O'Kelly movements participated.^{[6]:190} Those that did were from congregations west of the Appalachian Mountains that had come into contact with the Stone movement.^{[6]:190} The eastern members had several key differences with the Stone and Campbell group: an emphasis on conversion experience, quarterly observance of communion, and nontrinitarianism.^{[6]:190} Those who did not unite with Campbell merged with the Congregational Churches in 1931 to form the Congregational Christian Churches.^{[6]:191} In 1957, the Congregational Christian Church merged with the Evangelical and Reformed Church to become the United Church of Christ.^{[6]:191}

en.wikipedia.org/wiki/Restoration_Movement

Strains of War, Societies and Singing/Church Music
Once the pioneer preachers of the Restoration Movement, such as Stone and the Campbell's, had formulated the basic principles of the Movement, they began to preach with a vigor that stimulated the church to a period of phenomenal growth. Estimates among the disciples themselves placed their numbers at 100,000 in 1836 and at 200,000 or even 300,000 in 1850. According to the census of 1850 the disciples constituted the fourth largest religious body in the nation. The census of 1870 placed it at fifth place. The zealous labors of the pioneer

खिलाफ हथियार उठाने वाले भाइयों की निन्दा की, जबकि अन्य ने उनकी बुलाहट को भूलकर और विरोधी वर्ग में अपने भाइयों को अस्वीकार करते हुए, स्वयं तलवार को खोल दिया। जेम्स ए गारफील्ड के नाम से एक उपदेशक और कॉलेज अध्यक्ष अपनी वीरता के लिए विख्यात हुए, ब्रिगेडियर-जनरल के पद पर पदोन्नत हुए, और अंततः संयुक्त राज्य अमेरिका के बीसवें राष्ट्रपति बने।

गृह युद्ध या इसके मुद्दों द्वारा ईसाइयों के ध्यान में दो प्रश्न लाए गए थे। एक गुलामी का सवाल था। क्या एक ईसाई शास्त्रीय रूप से दासों का स्वामी हो सकता है? यदि हां, तो उन्हें उनका इलाज करने की आवश्यकता कैसे थी? हालांकि सवाल के दोनों तरफ चरमपंथी थे, ऐसा लगता है कि ज्यादातर प्रचारक तटस्थ थे और उन्होंने उत्तर और दक्षिण में ईसाइयों को प्रोत्साहित किया कि वे इसे विभाजनकारी मुद्दा न बनने दें। ... भाइयों के बीच प्रचलित विचार यह प्रतीत होता था कि गुलामी नैतिक प्रश्न के बजाय एक राजनीतिक प्रश्न था। बाइबल स्पष्ट रूप से गुलामी की मनाही नहीं करती थी बल्कि इसे नियंत्रित करती थी (लैव्य 25:39-46; 1 कुरिन्थियों 7:17-24; इफि. 6:5-9; फिलेमोन)। अधिकांश भाइयों ने, इस मामले पर धार्मिक विभाजन और युद्ध को टालने की इच्छा रखते हुए, शायद उम्मीद की थी कि अंततः गुलामी को एक शांतिपूर्ण और कानूनी अंत तक लाया जाएगा।

ईसाइयों की चिंताओं को आकर्षित करने वाला दूसरा सवाल शारीरिक युद्ध में ईसाइयों की भागीदारी था। फिर से, सबसे धर्मपरायण और प्रभावशाली प्रचारक भाइयों के युद्ध में शामिल होने का विरोध कर रहे थे और भाइयों को शामिल न होने का वचन दिया था, हालांकि उनकी दलीलें अधिकांश भाग के लिए बहरे कानों पर पड़ी हैं।

द्वितीय। मिशनरी सोसायटी

चूंकि बहाली आंदोलन के दौरान अधिकांश मंडलियों ने खुद को किसी प्रकार के अंतर-सामूहिक संघों में गठित किया, "सहयोग" का सवाल जल्द ही भाइयों के बीच उठाया गया। जबकि स्टोन के अनुयायी इस तरह के आयोजन प्रयासों पर संदेह की दृष्टि से देखते थे, कैम्बेल के अनुसरण करने वालों को लगता था कि किसी प्रकार का अतिरिक्त-सामूहिक सहयोग या संगठन कारण की प्रगति के लिए आवश्यक था। नतीजतन, भाइयों ने सबसे पहले अनौपचारिक, जिला सभाओं में मिलना शुरू किया। हालांकि, जैसे-जैसे समय बीतता गया, इन "सहयोग बैठकों" की औपचारिकता और पैमाना बढ़ता गया। जिला बैठकें राज्य बैठकें बन गईं और राज्य बैठकें राष्ट्रीय बैठकें बन गईं। सबसे पहले, इस तरह की बैठकों का इस आधार पर बचाव किया गया था कि उनका उद्देश्य केवल

preachers, as well as the freedom from denominational shackles offered by the Restoration to liberty-loving Americans, powered this period of rapid progress. However, disruptive influences lay on the horizon, and they threatened to hamper, or even undo, all of this progress.

I. The Civil War

The Civil War was greatly disruptive to the American religious scene. Some churches were divided and others were so discouraged that they ceased to meet. The whole nation including many brethren were so caught up with war fever that little room was left in their hearts for spiritual concern. Young men of the church went off to join the ranks of the Blue and the Gray, and not a few of them died in battle. Some preachers deplored brethren taking up arms against one another, while others, forgetting their calling and disclaiming their brethren in the opposing section, themselves unsheathed the sword. One preacher and college president by the name of James A. Garfield became noted for his valor, was promoted to the rank of brigadier-general, and eventually became the twentieth president of the United States.

Two questions were brought to the attention of Christians by the Civil War or its issues. One was the slavery question. Could a Christian Scripturally own slaves? If so, how was he required to treat them? Though there were extremists on both sides of the question, it seems that most preachers were neutral and encouraged Christians in the North and South not to allow this to become a divisive issue. ... The prevailing view among brethren seemed to be that slavery was a political, rather than moral, question. The Bible did not expressly forbid slavery but rather regulated it (Lev. 25:39-46; I Cor. 7:17-24; Eph. 6:5-9; Philemon). Most brethren, while wishing to avert religious division and war over this matter, probably hoped that slavery would eventually be brought to a peaceable and legal end.

The other question to attract Christian's concerns was the Christian's participation in carnal warfare. Again, the most devout and influential preachers were opposed to brethren's involvement in warfare and pled with brethren not to become involved,

भाइयों को प्रोत्साहित करना, सूचित करना और एकजुट करना था, और प्रचार प्रसार करें। अलेक्जेंडर कैम्बेल ने स्थानीय चर्चों के बीच अधिक से अधिक संगठन के बचाव में बड़े पैमाने पर लिखा। भाई अंततः 1849 में ओहियो के सिनसिनाटी में मिले और अमेरिकन क्रिश्चियन मिशनरी सोसाइटी का गठन किया। अलेक्जेंडर कैम्बेल को चिंता थी कि सम्मेलन आयोजित करने से विभाजनकारी सांप्रदायिकता में आंदोलन का नेतृत्व होगा। वह सभा में शामिल नहीं हुए।^{[12]:245} हालाँकि, वे इसके पहले अध्यक्ष चुने गए थे। सोसायटी बनते ही इसका विरोध शुरू हो गया। गृहयुद्ध द्वारा अस्थायी रूप से बाधित, यह विरोध तब तक बढ़ता रहा जब तक कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अधिवक्ताओं और विरोधियों के बीच फेलोशिप के एक खुले ब्रीच में धीरे-धीरे जारी सोसायटी पर संघर्ष नहीं हुआ।

मिशनरी समाज के लिए आपत्तियों के आधार अलग-अलग हैं, लेकिन सबसे उल्लेखनीय लोगों को निम्नानुसार संक्षेपित किया जा सकता है:

- इसके लिए कोई शास्त्र सम्मत अधिकार नहीं है
- इसकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि चर्च आध्यात्मिक कार्य करने के लिए पर्याप्त है जिसे करने की आवश्यकता है
- यह चर्च की जगह लेता है, और
- यह स्थानीय चर्चों की स्वतंत्रता और स्वायत्तता का उल्लंघन करता है।

तृतीय। वाद्य संगीत

उस समय के बारे में जब अमेरिकन क्रिश्चियन मिशनरी सोसाइटी चल रही थी, चर्चों की पूजा में वाद्य संगीत का सवाल उठा। गृह युद्ध से बहुत पहले मिडवे में चर्च, केंटकी पूजा में वाद्य संगीत पेश करने वाला रिकॉर्ड पर पहला चर्च बन गया (माना जाता है कि उनके अपमानजनक गायन में सहायता करने के लिए)। व्यावहारिक रूप से हर चर्च और प्रभाव के उपदेशक, स्वयं कैम्बेल सहित, पूजा में वाद्य संगीत के विरोध में एकजुट हुए। हालाँकि, गृहयुद्ध के बाद चर्चों ने साधन का अधिक से अधिक उपयोग करना शुरू कर दिया और इस पर लड़ाई बढ़ती रोष के साथ जुड़ गई। पूजा में वाद्य संगीत पर आपत्तियां काफी हद तक हैं:

- यह न्यू टेस्टामेंट द्वारा निर्देशित गायन में एक अनधिकृत जोड़ है (इफि. 5:19; कुलु. 3:16)
- यह बुद्धि के लिए शिक्षाप्रद नहीं है (1 कुरिन्थियों 14:15), और
- यह चर्च की पूजा के आध्यात्मिक चरित्र के विपरीत है। मिशनरी समाज और साधन पर विवाद, साथ ही साथ छोटे लोग, अंततः चर्चों के बीच एक विभाजन में बढ़ गए,

though their pleas seem to have fallen on deaf ears for the most part.

II. The Missionary Society

Since most congregations during the Restoration Movement formed themselves into inter-congregational associations of some sort, the question of "cooperation" was soon raised among the brethren. While those in Stone's following looked with suspicion at such organizing efforts, those of Campbell's following seemed to think that some sort of extra-congregational cooperation or organization was well-nigh essential to the progress of the cause. Consequently, brethren at first began to meet in informal, district gatherings. However, as time went by these "cooperation meetings" increased in formality and scale. District meetings became state meetings, and state meetings became national meetings. At first, such meetings were defended on the basis that they were only intended to encourage, inform, and unify brethren, and promote evangelism. Alexander Campbell wrote extensively in defense of greater organization among local churches. Brethren finally met in Cincinnati, Ohio in 1849 and formed the American Christian Missionary Society. Alexander Campbell had concerns that holding conventions would lead the movement into divisive denominationalism. He did not attend the gathering.^{[12]:245} However, he was elected its first president. As soon as the Society was formed opposition to it began to mount. Interrupted temporarily by the Civil War, this opposition continued to increase until conflict over the Society gradually issued in an open breach of fellowship between the advocates and the adversaries in the latter half of the Nineteenth Century.

The bases of objections to the missionary society have varied, but the most notable ones may be summarized as follows:

- there is no Scriptural authority for it
- it is not needed, for the church is sufficient to do the spiritual work that needs to be done
- it supplants the church, and
- it infringes upon the independence and autonomy of the local churches.

III. Instrumental Music

जिसे 1906 में धार्मिक जनगणना द्वारा औपचारिक रूप से मान्यता दी गई थी।
bible.ca/history/eubanks/history-eubanks-42.htm

क्या ये वही आपत्तियाँ आज निम्नलिखित संगठनों या गतिविधियों के लिए मान्य हैं?

- आपदा राहत या वैश्विक सामग्री
- हीलिंग हैंड्स इंटरनेशनल
- विश्व ईसाई प्रसारण
- इंजील ब्रॉडकास्ट नेटवर्क
- भीतरी शहर मंत्रालयों
- बहाली रेडियो
- एक मंडली कई मंडलियों के मिशन कार्य की देखरेख करती है
- धार्मिक संगीत, रेडियो पर "सुसमाचार संगीत", एक सीडी या संगीत समूह जहां सभी मीडिया संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग करते हैं, के साथ भ्रद्धा और ईश्वर की स्तुति की गहरी भावना के साथ गाते हैं।
- एकाधिक गीत नेता या प्रशंसा दल।

बहाली की कुछ शिक्षाएँ (पत्थर - कैम्पबेल आंदोलन)

इन दो आंदोलनों ने कई प्रमुख मान्यताओं को साझा किया।

- d. उनका मानना था कि बाइबिल ईश्वर का प्रेरित वचन है और आस्तिक के जीवन में परम अधिकार है।
- e. उनका मानना था कि नए नियम में चर्च जीवन के मॉडल और पैटर्न युगों के माध्यम से चर्च के लिए भगवान की योजना को प्रदर्शित करने के लिए थे।
- f. उनका मानना था कि परमेश्वर अपने लोगों, कलीसिया को केवल एक सभा या मण्डली नहीं, एक करना चाहता था, विभाजित नहीं करना चाहता था। नए नियम के विश्वास की अनिवार्यताओं पर समझौता उस एकता का निर्माण कर सकता है जिसे परमेश्वर अपनी कलीसिया के लिए चाहता है।

कैम्पबेल की मृत्यु के बाद, आंदोलन में गलतियाँ बनने लगीं। समस्या संस्थापक सिद्धांतों के साथ नहीं थी, बल्कि उनके लागू होने के साथ थी। हर कोई न्यू टेस्टामेंट की अनिवार्यताओं के आसपास एकता के सिद्धांत पर सहमत था, लेकिन हर कोई इस बात पर सहमत नहीं था कि वे अनिवार्यताएँ क्या थीं या यह कैसे निर्धारित किया जाए कि किसे अनिवार्य माना जाना चाहिए।

पूजा में वाद्य संगीत के सवाल पर व्याख्या के दो प्राथमिक विद्यालयों ने अपनी युद्ध रेखाएँ बनाईं। वह समूह जो अंततः

About the time that the American Christian Missionary Society got underway the question of instrumental music in the worship of the churches arose. Not long before the Civil War the church at Midway, Kentucky became the first church on record to introduce instrumental music into worship (supposedly to aid their deplorable singing). Practically every church and preacher of influence, including Campbell himself, stood united in their opposition to instrumental music in worship. However, following the Civil War churches began to use the instrument more and more and the battle over it was joined with increasing fury. The objections to instrumental music in worship have substantially been:

- it is an unauthorized addition to the singing directed by the New Testament (Eph. 5:19; Col. 3:16)
- it is not instructive to the intelligence (I Cor. 14:15), and
- it is contrary to the spiritual character of the church's worship. The contentions over the missionary society and the instrument, as well as lesser ones, finally escalated into a division among the churches that was formally recognized by the Religious Census in 1906. bible.ca/history/eubanks/history-eubanks-42.htm

Are these same objections valid today for the following organizations or activities?

- Disaster relief or Global Samaritans
- Healing Hands International
- World Christian Broadcast
- Gospel Broadcast Network
- Inner City Ministries
- Restoration Radio
- One congregation overseeing multiple congregations mission work
- Singing along in deep feeling of reverence and praise to God with religious music, "gospel music" on the radio, a CD or music group where all media use musical instruments.
- Multiple song leaders or praise teams.

Some Teachings of the Restoration (Stone – Campbell Movement)

मसीह के गैर-वाद्य चर्च बन गए, ने एक ऐसा स्थान ले लिया जिसने पूजा में "नवाचारों" को प्रतिबंधित कर दिया था जो विशेष रूप से नए नियम में आदेशित नहीं थे। पूजा में उपकरणों का उपयोग करने के लिए एक नए नियम के आदेश की कमी के कारण, उन्होंने उनके निषेध के लिए तर्क दिया। अन्य व्याख्या की स्थिति यह थी कि चूंकि संगीत वाद्ययंत्र के उपयोग पर रोक लगाने वाला कोई विशिष्ट आदेश नहीं था, इसलिए यह स्वीकार्य था। कैम्पबेल की मृत्यु के चालीस साल बाद thebiblewayonline.com अध्ययन बाइबिल का संदर्भ लें, विभाजन को आधिकारिक तौर पर मान्यता दी गई थी और गैर-वाद्य चर्चों को हमने एक अलग समूह के रूप में मान्यता दी थी।

दुख की बात है कि इस विभाजन के साथ ही इस एकता आंदोलन के विभाजन समाप्त नहीं हुए। ईसाई चर्च आंदोलन में बपतिस्मा के मुद्दे में सतह के ठीक नीचे एक और मुद्दा सुलग रहा था। आरंभिक कैम्पबेल/स्टोन आंदोलन के सुखद पुनर्स्थापनों में से एक चर्च में विसर्जन द्वारा बपतिस्मा की बहाली थी। अमेरिकी सीमा पर प्रतिनिधित्व करने वाले ऐतिहासिक यूरोपीय चर्चों के बीच छिड़काव द्वारा शिशु बपतिस्मा एक वस्तुतः सार्वभौमिक अभ्यास था। जब वे मार्गदर्शन के लिए न्यू टेस्टामेंट की ओर मुड़े, तो सुधारकों ने पाया कि न्यू टेस्टामेंट चर्च में बपतिस्मा का तरीका लगभग निश्चित रूप से पूर्ण विसर्जन था, छिड़काव नहीं। उन्होंने आगे निर्धारित किया कि बपतिस्मा के लिए एकमात्र स्वीकार्य उम्मीदवार वह है जो अपने लिए बपतिस्मा लेने के लिए पर्याप्त उम्र का है।

फिर से, मुख्य मुद्दे पर आंदोलन लगभग एकमत था। विभाजक प्रश्न यह था कि उन लोगों के बारे में कैसे विचार किया जाए जो स्वयं को ईसाई मानते हैं लेकिन असंबद्ध थे। एक तरफ वे लोग थे जो विश्वास करते थे कि कलीसिया की सदस्यता और उद्धार का आश्वासन केवल उन्हीं को दिया जाना चाहिए जो डूबे हुए थे। दूसरी तरफ वे लोग थे जो वयस्क विसर्जन को आदर्श मानते थे लेकिन अन्य परंपराओं में अन्य तरीकों से बपतिस्मा लेने वालों के वास्तविक ईसाई धर्म को मान्यता देते थे। वास्तविक प्रश्न संगति है और परमेश्वर कैसे चाहता है कि इसका अभ्यास हो।

1920 के दशक के उत्तरार्ध में यह मुद्दा कैम्पबेल/स्टोन मिशनरियों और शिशुओं को बपतिस्मा देने वाली परंपराओं के बीच मिशन के क्षेत्र में सहयोग को लेकर बदसूरत झगड़ों की एक श्रृंखला में सामने आया। एक पक्ष यह मांग करना चाहता था कि कैम्पबेल / स्टोन मिशनरी विसर्जन का अभ्यास करने वाले संप्रदायों के मिशन क्षेत्र में किसी भी सहयोग को सीमित करें। अन्य लोगों ने देखा कि उनके बपतिस्मात्मक धर्मशास्त्र

These two movements shared several key beliefs.

- a. They believed the Bible was the inspired Word of God and the ultimate authority in the life of the believer.
- b. They believed the models and patterns of church life in the New Testament were meant to demonstrate God's plan for the church through the ages.
- c. They believed God intended His people, the church not just one assembly or congregation, to be united, not divided. Agreement on the essentials of the New Testament faith can create the unity God intended for His church.

After Campbell's death, fault lines began to form in the movement. The problem was not with the founding principles, but with their application. Everyone agreed on the principle of unity around New Testament essentials, but not everyone agreed on what those essentials were or how to determine what should be considered an essential.

Two primary schools of interpretation formed their battle lines over the question of instrumental music in worship. The group that eventually became the non-instrumental Churches of Christ took a position that prohibited "innovations" in worship that were not specifically commanded in the New Testament. Lacking a New Testament command to use instruments in worship, they argued for their prohibition. The other interpretation position was that since there was not a specific command prohibiting the use of a musical instrument then it was allowable. Refer to thebiblewayonline.com study Bible Forty years after Campbell's death, the split was officially recognized and the non-instrumental churches we recognized as a separate group.

Sadly, the divisions of this unity movement were not over with this division. The Christian Church movement had another issue simmering just below the surface in the issue of baptism. One of the joyful restorations of the early Campbell/Stone movement was the restoration of baptism by immersion to the church. Infant baptism by sprinkling was a virtually universal practice among the historic European churches represented on the American frontier. As they turned to the New Testament for guidance, the reformers discovered the mode of baptism in the New Testament church was almost certainly total

की परवाह किए बिना दूसरों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है।

thebiblewayonline.com का संदर्भ लें - बपतिस्मा

संघर्ष इतना तीव्र हो गया कि एक और विभाजन हो गया। हजारों कलीसियाओं ने आंदोलन छोड़ दिया और उत्तर अमेरिकी ईसाई सम्मेलन के आसपास केंद्रित अपने स्वयं के गैर-सांप्रदायिक समूह का गठन किया। इस समूह में वे लोग शामिल थे जिन्होंने निमज्जन द्वारा बपतिस्मा को एक निरपेक्ष मुद्दा पाया। जो लोग ईसाई चर्चों के पुराने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में रुके थे, वे वे थे जो अपने आप में ईसाईयों के रूप में डूबे हुए लोगों को स्वीकार करने के लिए अधिक खुले थे। विभाजन लगभग 70 वर्षों से धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है।

हाल के दशकों में, एक और विभाजन होना शुरू हो गया है। 1985 के बाद से शिष्य नवीकरण उस धर्मशास्त्रीय उदारवाद को चुनौती दे रहा है जो 1968 में ईसाई चर्चों के पुराने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन से बने क्रिश्चियन चर्च (डिसिपल्स ऑफ क्राइस्ट) संप्रदाय में विकसित हुआ है। शिष्य का नवीनीकरण परिवर्तन और आध्यात्मिक नवीनीकरण के लिए संप्रदाय के भीतर काम करने की प्रतिबद्धता के साथ शुरू हुआ। दुर्भाग्य से, जैसे-जैसे समय बीतता गया यह स्पष्ट हो गया कि संप्रदाय को बदलने या चुनौती देने के लिए पूरी तरह से बंद कर दिया गया था, और शिष्य नवीकरण ने उन लोगों के लिए एक सभा बिंदु के रूप में शिष्य विरासत फैलोशिप का गठन किया, जिन्होंने संप्रदाय को छोड़ दिया और इंजील के लिए जो अभी भी संप्रदाय में थे।

हालांकि कोई विभाजन नहीं देखना चाहता था, लेकिन विभाजन धीरे-धीरे हो रहा है। पहली बार, विभाजन आंदोलन के संस्थापक सिद्धांतों पर केंद्रित है, न कि केवल विवरणों पर काम करने पर।

ईसा के शिष्यों ने बाइबिल की प्रेरणा और विश्वसनीयता में अपने विश्वास को त्याग दिया है, इस बात से इनकार किया है कि एक सुसंगत नए नियम का विश्वास है जिस पर हम वापस लौट सकते हैं, और सांप्रदायिक निकायों के बीच बातचीत के द्वारा एकता के लिए बाइबिल की अनिवार्यताओं के आसपास एकता के विचार का व्यापार किया।

शिष्य-विरासत.org/downloads/10.pdf

बहाली समयरेखा

जॉन लोके	1632 - 1704
जॉन वेस्ले	1703 - 1791
जेम्स ओकेली	1732 - 1826
इलियास स्मिथ	1764 - 1846

immersion, not sprinkling. They further determined that the only acceptable candidate for baptism is someone of sufficient age to choose baptism for him or herself.

Again, the movement was nearly unanimous on the core issue. The divisive question was how to regard those who considered themselves to be Christian but were un-immersed. On one side were those who believed church membership and assurance of salvation should only be offered to those who were immersed. On the other side were those who regarded adult immersion as the ideal but recognized the genuine Christian faith of those baptized by other means in other traditions. The real question is fellowship and how does God want it practiced.

In the late 1920's this issue came to a head in a series of ugly fights over cooperation on the mission field between Campbell/Stone missionaries and those of traditions who baptize infants. One side wanted to demand that Campbell/Stone missionaries confine any cooperation the mission field to denominations that practiced immersion. Others saw the need to cooperate with others regardless of their baptismal theology.

Refer to thebiblewayonline.com - baptism

The struggle became so intense that another split ensued. Thousands of congregations left the movement and formed their own non-denominational group centered around the North American Christian Convention. This group consisted of those who found baptism by immersion to be an absolute issue. Those who stayed in the old International Convention of Christian Churches tended to be those who were more open to accepting the un-immersed as Christians in their own right. The split has been slowly progressing for about 70 years.

In recent decades, yet another division has begun to occur. Since 1985 Disciple Renewal has been challenging the theological liberalism that has grown up in the Christian Church (Disciples of Christ) denomination that formed in 1968 out of the old International Convention of Christian Churches.

अब्रेर जोन्स	1767 - 1840
बार्टन स्टोन	1772 - 1844
थॉमस कैम्बेल	1763 - 1854
अलेक्जेंडर कैम्बेल	1788 - 1866
वाल्टर स्कॉट	1796 - 1861
"एक प्रकार का जानवर" जॉन स्मिथ	1784 - 1868

मरम्मत

18वीं शताब्दी के अंत के बारे में कई धार्मिक नेता एक-दूसरे से स्वतंत्र होकर यह सवाल करना शुरू कर देते हैं कि उनके पंथों में इतने सारे संघों में इतने सारे अलग-अलग शिक्षण और प्रथाएं कैसे बाइबिल की चर्च हैं। उन्होंने तर्क दिया कि परमेश्वर एकता चाहता है तो क्यों हर कोई मनुष्य के लिए परमेश्वर के निर्देश को खोजने के लिए सिर्फ बाइबल और बाइबल की ओर ही नहीं मुड़ सकता। वास्तव में, यह लूका 8 में बोलने वाले के दृष्टान्त का अर्थ प्रतीत होता है। मनुष्यों और उनके पंथों और सिद्धांतों के नियंत्रण से मुक्त, यह आज्ञाकारी लोगों, ईसाइयों, यीशु द्वारा स्थापित चर्च का उत्पादन करेगा।

बहाली आंदोलन का मर्म विश्वासियों को एकजुट करना था:

7. धर्म को लागू करने के लिए सरकार का उपयोग करना बंद करें
8. शास्त्र का ही प्रयोग करें। सभी मानव पंथों और हठधर्मिता को अस्वीकार करें
9. ईश्वर और मनुष्य के प्रेम को प्राप्त करें और बनाए रखें

इस आन्दोलन के दौरान विभिन्न अगुवों ने मसीह में विश्वासियों के लिए उनमें एक होने की आवश्यकताओं की अपनी समझ की पेशकश की

लोके

- k. राज्य धर्म को स्थापित करने और लागू करने के लिए सरकार के माध्यम से चर्च के अधिकार को अस्वीकार कर दिया
- l. बाइबल आवश्यक मान्यताओं का एक समूह प्रदान करती है जिस पर सभी उचित लोग सहमत हो सकते हैं:
 - iii. यीशु का मसीहापन
 - iv. यीशु की सीधी आज्ञा
- m. गैर-जरूरी बातें जिन पर ईसाई असहमत हैं उन्हें दूसरों पर थोपा नहीं जाना चाहिए

वेस्ले

Disciple Renewal began with a commitment to work within the denomination for change and spiritual renewal. Unfortunately, as time went by it became clear that the denomination was totally closed to change or challenge, and Disciple Renewal formed Disciple Heritage Fellowship as a gathering point for those who left the denomination and for evangelicals who were still in the denomination.

Though no one wanted to see division, division is slowly taking place. For the first time, division is focused on the founding principles of the movement, not just the working out of the details.

The Disciples of Christ have abandoned their belief in the inspiration and reliability of the Bible, denied there is a consistent New Testament faith to which we can return, and traded the idea of unity around biblical essentials for unity by negotiation between denominational bodies.

disciple-

heritage.org/downloads/10.pdf

Restoration Timeline

John Locke	1632 - 1704
John Wesley	1703 – 1791
James O’Kelly	1732 – 1826
Elias Smith	1764 – 1846
Abner Jones	1767 – 1840
Barton Stone	1772 – 1844
Thomas Campbell	1763 – 1854
Alexander Campbell	1788 – 1866
Walter Scott	1796 – 1861
“Raccoon” John Smith	1784 – 1868

Restoration

About the turn of the 18th century several religious leaders independent of each other begin to question how so many differing teaching and practices set forth in so many associations in their creeds all be the church of the Bible. They reasoned that God wanted unity so why could not everyone just turn to the Bible and the Bible alone to find God’s instruction to man. In fact, this appears to be the meaning of the parable of the sower in Luke 8. By returning to the Word and planting it in good and honest hearts, free from control of men and, their creeds and doctrines, it will produce obedient people, Christians, the church Jesus established.

एक। गैर-आवश्यक सिद्धांत पर असहमत होने के लिए सहमत
बी। गैर-जरूरी चीजों के बारे में लड़ना और बहस करना बंद करें

अलग बैपटिस्ट

एक। सभी पंथों को अस्वीकार करें और केवल बाइबल को आदर्श नियम के रूप में उपयोग करें, लेकिन पैटर्न पर पूर्ण सहमति की आवश्यकता के बिना
बी। सटीक विवरण से बचें क्योंकि यह वैधानिकता और विभाजन की ओर ले जाता है

लैंडमार्क बैपटिस्ट

एक। बाइबिल बिना किसी विचलन की अनुमति के एक सटीक खाका है
बी। ब्लूप्रिंट से भटकाव व्यक्ति को सच्चे चर्च से दूर रखता है

ओ'केली/हैगार्ड

एक। कलीसिया का एकमात्र मुखिया मसीह है
बी। ईसाई नाम ही एकमात्र स्वीकार्य नाम है
सी। बाइबिल विश्वास का एकमात्र नियम है
n. ख्रीस्तीय चरित्र ही कलीसिया की संगति की एकमात्र कसौटी है
o. निजी निर्णय का अधिकार सभी का विशेषाधिकार है।

बार्टन स्टोन

एक। सामूहिक शासन
बी। प्रारंभिक चर्च की जीवन शैली को पुनर्स्थापित करना जो रूप और संरचनाओं के बजाय पवित्र और धर्मी जीवन है
सी। एक विशेष अभ्यास [एक अनुष्ठान के रूप में] के जोर से मसीह में स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है।

कैम्पबेल

- o. मूल / आवश्यक मान्यताओं में स्वीकृत उदाहरण जोड़ा गया।
- p. बाइबिल तथ्यों की एक पुस्तक (राय, सिद्धांत, अमूर्त सत्य या मौखिक परिभाषा नहीं) और इन तथ्यों पर एक तर्कसंगत विश्वास तैयार और परिभाषित किया जाना था।
- q. सामूहिक स्वायत्तता
- r. प्रत्येक मंडली में बड़ों की बहुलता
- s. साप्ताहिक कम्युनिकेशन और
- t. पापों की क्षमा के लिए विश्वासियों का विसर्जन
- u. इस प्रकार भगवान कहते हैं,

धर्मसंघों

एक। लोगों को रूपांतरण अनुभव की आवश्यकता थी

The heart of the restoration movement was to unite believers:

1. Cease to use government to enforce religion
2. Use scripture alone. Reject all human creeds and dogma
3. Obtain and retain love of God and man

During this movement various leaders offered their understanding of the requirements for believers in Christ to become united in Him

Locke

- a. Rejected the right of church through government to establish and enforce a state religion
- b. The Bible supplies a set of essential beliefs upon which all reasonable people can agree:
 - i. The messiahship of Jesus
 - ii. Jesus' direct commands
- c. Non essentials upon which Christians disagree should not be forced upon others

Wesley

- a. Agree to disagree on non-essential doctrine
- b. Cease fighting and arguing about the non-essentials

Separate Baptists

- a. Reject all creeds and use only the Bible as the perfect rule but without requiring complete agreement on pattern
- b. Avoid precise detail as it leads to legalism and division

Landmark Baptists

- a. The Bible is a precise blueprint without any deviations allowed
- b. Deviation from blueprint keeps one from true church

O'Kelly/Haggard

- a. Christ is the only head of the church
- b. The name Christian is the only acceptable name
- c. The Bible is the only rule of faith
- d. Christian character is the only test of church fellowship
- e. The right of private judgment is the privilege of all.

Barton Stone

- a. Congregational governance

इस लंबी अवधि के दौरान, वे कई मायनों में भिन्न थे, कुछ अतीत की शिक्षाओं और प्रथाओं के बंधनों को काटने के लिए अनिच्छुक थे, फिर भी उन्होंने माना कि उनका वर्तमान "चर्च" उस चर्च की तरह नहीं था जिसके बारे में वे अपनी बाइबिल में पढ़ते हैं।

बहुत से नहीं तो इनमें से अधिकांश सुधारकों और पुनर्स्थापनवादियों में एक बात समान थी कि वे या तो सुधार करना चाहते थे, बाइबिल के चर्च में पुनर्स्थापित करना या वापस लौटना चाहते थे और अन्य सभी विश्वासियों के साथ एकजुट होना और केवल ईसाई होना चाहते थे।

एक समय के लिए एकता थी, लेकिन विविध और ध्रुवीकरण करने वाली राय उभरी:

- बाइबिल एक ब्लूप्रिंट, संविधान या पैटर्न है जहां विवरण पर पूर्ण सहमति की आवश्यकता नहीं है। मसीह में उन लोगों के लिए जो मनुष्यों के बीच और परमेश्वर के सामने धार्मिक रूप से रह रहे हैं, रूप, संरचना और सटीक समझ का पालन करने से अधिक महत्वपूर्ण था।
- बाइबल एक सटीक खाका है जिसका पालन बिना किसी विचलन के किया जाना चाहिए। जो लोग सटीक ब्लूप्रिंट की नेताओं की व्याख्या से विचलित होते हैं, उनकी संगति नहीं की जानी चाहिए। नतीजतन, ब्लूप्रिंट की सटीकता को लगातार परिभाषित किया जाता है जो असहमति और अधिक अलगाव की ओर ले जाता है।

एकजुट रहना है और संगति में, मुद्दों को प्रार्थनापूर्वक हल किया जाना चाहिए:

11. समझ की सटीकता की डिग्री कौन तय करता है कि किसी को संगति में रहना चाहिए - भगवान या मनुष्य?
12. क्या कोई गैर-सुसमाचार शिक्षण पर व्याख्या करता है परमेश्वर या किसी अन्य ईसाई के साथ दूसरे की संगति निर्धारित करें?
13. क्या कोई परमेश्वर के साथ संगति में हो सकता है परन्तु मसीह में दूसरों के साथ नहीं?
14. यदि किसी विषय पर बाइबल मौन है तो क्या उस मौन के लिए किसी चीज़ की आवश्यकता है या इसे प्रतिबंधित करती है? इसी तरह, जब बाइबल कुछ निर्दिष्ट करती है तो उसे न तो किसी और चीज़ की आवश्यकता होती है और न ही उसे प्रतिबंधित करती है।
15. चर्च फादर, सुधारकों, पुनर्स्थापनवादियों या आज के लेखकों के लेखन भगवान या उनके बच्चों के साथ मनुष्य की संगति की स्थिति नहीं हो सकते।

- b. Restoring lifestyle of early church that is holy and righteous living rather than or over form and structures
- c. Freedom in Christ is more important than emphasis of a particular practice [as a ritual].

Campbell

- a. Approved precedent added to core /essential beliefs.
- b. Bible a book of facts (not opinions, theories, abstract truths or verbal definitions) and a rational faith was to be formulated and defined upon these facts.
- c. Congregational autonomy
- d. A plurality of elders in each congregation
- e. Weekly communion and
- f. Immersion of believers for the remission of sins
- g. Thus saith the Lord,

Congregationalists

a. People needed a conversion experience
During this long period of time, they differed in many ways some unwilling to cut the ties of past teachings and practices yet, they recognized their current "church" was not like the church they read about in their Bible.

Many if not most of these reformers and restorationists had one thing in common they wanted to either reform, restore or return to the church of the Bible and to be united with all other believers and to be Christians only.

There was unity for a time, but diverse and polarizing opinions emerged:

- The Bible is a blueprint, constitution or pattern where **complete agreement on details is not required**. For those IN CHRIST living righteously among men and before God was more important than adhering to form, structure and precise understanding.
- The Bible is a **precise blueprint that must be followed without deviation**. Those who deviate from the leaders' interpretation of the precise blueprint are not to be fellowshipped. Consequently, there is a continual defining the

कुछ सफलता प्राप्त करने के बाद भी, 100 ईस्वी के बाद उनके पूर्वजों की तरह, यह लंबे समय तक नहीं था कि वे अतीत के सिद्धांतों को स्वीकार करने और नए पंथों को स्थापित करने या पुराने को फिर से स्थापित करने लगे।

निष्कर्ष

ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे इतिहास में एक सामान्य सूत्र चल रहा है। प्रत्येक पीढ़ी पिछली पीढ़ी के विश्वासों और विचारों पर आधारित होती है। नेता और या लेखक अपने निष्कर्ष रिकॉर्ड करते हैं जो अगली पीढ़ी पर आधारित होते हैं। कुछ स्वीकार किए जाते हैं अन्य शायद उनकी पूर्व समझ और अवधारणाओं के आधार पर अस्वीकार करते हैं। यह प्रक्रिया चिकित्सा, कंप्यूटर, रसायन विज्ञान, भौतिकी और गणित जैसे अज्ञात दुनिया में नितांत आवश्यक है जहां न तो कोई मानक है और न ही कभी प्रकट हुआ है। इसलिए, ज्ञान का प्रत्येक भाग एक बिलिंग ब्लॉक है।

इस अध्ययन से पता चला है कि उनकी पीढ़ी के लोग और नेता परमेश्वर के वचनों के गहन अध्ययन पर भरोसा करने के बजाय अतीत के "विद्वान पुरुषों" के विचारों को स्वीकार करते हैं। अवलोकन करना।

19. जस्टिन शहीद सुकरात और प्लेटो के शिष्य थे और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि शास्त्रों के संबंध में उन्होंने स्वयं को बहुत अच्छी तरह से तैयार किया है।
20. लियोन्स के इरेनायस ने द शेफर्ड ऑफ हेर्मस पर धर्मग्रंथ के रूप में भरोसा किया।
21. ऑरिजन ने हिब्रू के अपने ज्ञान से सेप्टुआजेंट को सही किया। लेकिन उनके स्टोइक, नियो-पाइथागोरियन और प्लेटोनिक विश्वासों ने उनके तर्क को धूमिल कर दिया।
22. एम्ब्रोस का धर्मशास्त्र ओरिजन से काफी प्रभावित था।
23. ऑगस्टाइन ने सिसरो की प्रशंसा की और उन्हें अन्य सभी प्राचीन लेखकों से ऊपर रखा और आत्मा और शरीर विश्वास की अपनी दोहरी प्रणाली को बनाए रखा।
24. वाईक्लिफ ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद करने में जेरोम के त्रुटिपूर्ण लैटिन वल्गेट पर भरोसा किया, जो शायद उसके लिए उपलब्ध था।
25. लूथर को हर चीज़ पर शक करना और उसकी जाँच करना सिखाया गया था, लेकिन फिर भी उसने बहुत सी "चर्च फादर्स" की शिक्षाओं को स्वीकार किया।
26. जॉन कैल्विन अक्सर ऑगस्टाइन और एम्ब्रोस की शिक्षाओं को उद्धृत करते थे।

preciseness of the blueprint which leads to disagreement and more separation.

To remain united and in fellowship, issues must be prayerfully resolved:

1. Who decides the degree of preciseness of understanding one must have to remain in fellowship - God or Man?
2. Does one's interpretation on some non-gospel teaching determine another's fellowship with God or another Christian?
3. Can one be in fellowship with God but not with others in Christ?
4. If the Bible is silent on a subject does that silence require a thing or prohibit it? Likewise, when the Bible specifies something it neither requires or prohibits something else.
5. The writings of church fathers, reformers, restorationists or today's authors cannot be a condition of man's fellowship with God or His children.

Even after achieving some success, it was not long, like their forefathers after 100 AD, that they began to drift and accept doctrines of the past and establish new creeds or reestablish old ones.

Conclusion

There appears to be a common thread running throughout history. Each generation draws upon the beliefs and thoughts of past generation. Leaders and or writers record their conclusions which the next generation draws upon. Some are accepted others reject probably based upon their prior understandings and concepts. This process is absolutely necessary in the world of the unknown such as medicine, computers, chemistry, physics and math where there is not nor has ever been a revealed standard. Therefore, each piece of knowledge is a building block.

This study has shown that men and leaders of their generation tend to accept the opinions of "learned men" of the past rather than relying on a thorough study of the words from God. Observe.

27. जॉन लोके की शिक्षाओं ने थॉमस और अलेक्जेंडर कैंपबेल को प्रभावित किया।

मसीह में विश्वासियों को उनके द्वारा मसीह को नकारने और किसी अन्य सुसमाचार को स्वीकार करने या किसी अन्य धार्मिक सिद्धांत के अनुरूप होने के लिए सताया गया था, जैसे; ए) यहूदी धर्म, बी) इंपीरियल रोम के अधीन बुतपरस्त या सम्राट पूजा, सी) मध्य या अंधेरे युग के दौरान और बाद में कैथोलिक धर्म या डी) सुधार और बहाली युग में कैथोलिक धर्म और प्रोटेस्टेंटवाद।

ईश्वरीय रूप से प्रकट ज्ञान पर भरोसा करके कोई व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के बारे में अधिक सटीक ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकता है।

सैकड़ों वर्षों के दौरान उत्पीड़न के माध्यम से कई लोगों ने केवल बाइबल का उपयोग करके परमेश्वर के पास लौटने का प्रयास किया है। पिछले 200 वर्षों में राय या व्याख्या में कई मतभेद देखे गए हैं, जो कि प्रकट सत्य के रूप में एक ही स्थिति में रखे जाने पर नए धार्मिक संगठनों के रूप में सामने आए हैं। किसी को यह निर्धारित करने की आवश्यकता है कि क्या वे खुद से पूछकर समस्या का हिस्सा हैं "क्या मैंने व्यक्तिगत रूप से शास्त्रों को यह निर्धारित करने के लिए खोजा है कि यह मेरे निष्कर्ष पर पहुंचने में क्या कहता है? या, क्या मैंने यह देखने के लिए बाइबल की खोज की है कि क्या मेरा 'बाइबिल सिद्धांत' पाया जा सकता है और मेरे विश्वास और निष्कर्ष के अनुरूप व्याख्या की जा सकती है।

निम्नलिखित कुछ अपेक्षाकृत हालिया शिक्षाओं की सूची है जिन पर दृढ़ता से विश्वास किया गया और संगति का परीक्षण किया गया। उनमें से कई को पूरी तरह या आंशिक रूप से खारिज कर दिया गया है।

- प्रभु भोज के "प्रतीक" अवश्य ढके होने चाहिए।
- प्रभु-भोज में उपयोग की जाने वाली रोटी को प्रार्थना के बाद और सदस्यों को खाने के लिए बांटने से पहले, गेहूं के आटे से बनाया जाना चाहिए।
- प्याला, दाखलता का फल, किण्वित दाखरस होना चाहिए।
- केवल एक कप का उपयोग किया जा सकता है न कि अलग-अलग कपों का।
- बाइबिल कक्षाएं चर्च को विभाजित करती हैं, इसलिए अभ्यास नहीं किया जा सकता है।
- भगवान की पूजा के रूप में गायन में एक संगीत वाद्ययंत्र या सामंजस्य शामिल नहीं होना चाहिए बल्कि मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए।

1. Justin Martyr was a disciple of Socrates and Plato and did not appear to have prepared himself very well in regard to the scriptures.
2. Irenaeus of Lyons relied upon The Shepherd of Hermas as scripture.
3. Origen corrected the Septuagint from his knowledge of Hebrew. But his Stoic, Neo-Pythagorean and Platonic beliefs clouded his reasoning.
4. Ambrose's theology was significantly influenced by that of Origen.
5. Augustine admired Cicero and ranked him above all other ancient writers and retained his dual system of the soul and body belief.
6. Wycliffe relied upon Jerome's flawed Latin Vulgate in translating the Bible into English, which may have been all that was available to him.
7. Luther was taught to be suspicious of and to test everything but still accepted much of the "church fathers" teachings.
8. John Calvin often quoted the teachings of Augustine and Ambrose.
9. John Locke's teachings influenced Thomas and Alexander Campbell.

Believers in Christ were persecuted for their refusal to deny Christ and accept another Gospel or to conform to some other religious doctrine, such as; a) Judaism, b) Pagan or Emperor Worship while under Imperial Rome, c) Catholicism during and after the Middle or Dark ages or d) Catholicism and Protestantism in the Reformation and Restoration eras.

By relying upon divinely revealed knowledge one can obtain a more accurate knowledge and understanding of the will of God.

During hundreds of years through persecution many have attempted to return to God using only the Bible. The last 200 years or so has seen many differences in opinion or interpretation which when put on the same standing as revealed truth has resulted in new religious organizations. One needs to determine if they are part of the problem by asking themselves **"Have I personally searched the scriptures to determine what it states in reaching my conclusions? Or, have I searched the Bible to**

- इकट्ठे होने पर महिलाओं को अपने सिर को अपने बालों के अलावा किसी और चीज़ से ढकना चाहिए।
- महिलाएं अपने बालों को कट या ट्रिम नहीं कर सकती हैं।
- ईसाइयों की मंडलियां इमारतों का मालिक नहीं हो सकतीं।
- "चर्च भवन" के भीतर भोजन नहीं किया जा सकता है।
- जिम, पारिवारिक जीवन केंद्र और शिविरों का मालिक होना पाप है।
- ईसाई क्रिसमस में भाग नहीं ले सकते।
- मिश्रित तैराकी को सहन नहीं किया जा सकता क्योंकि यह पापपूर्ण है।
- किसी भी प्रकार का नृत्य करना पाप है।
- सरकार में भाग लेना, मतदान करना भी पाप है।
- सशस्त्र बलों में सेवा करना पाप है।
- चर्च से संबद्ध स्कूलों और कॉलेजों को दान देना पापपूर्ण है।
- बाइबल के अलावा किसी और साहित्य का इस्तेमाल करना गलत है।
- चर्च का नाम बिना किसी स्थान के " _____ " होना चाहिए।
- कोई भी मादक पेय पीना पाप है।
- किसी भी तरह के तंबाकू का सेवन पाप है।
- जातियों के बीच विवाह बाइबिल नहीं है।
- बाइबिल ईसाइयों को गुलाम रखने से मना करता है।
- चर्च किसी भी प्रयास में कॉर्पोरेट नहीं कर सकते।
- मण्डली नियमित रूप से एक उपदेशक को नियुक्त नहीं कर सकती है।
- एक समय में कई गाने वाले नेता मनोरंजन हैं इसलिए पापी हैं।

अतीत और वर्तमान के कई भक्त लोग मानते हैं कि उनकी व्याख्याएँ परमेश्वर की सटीक इच्छा थीं। फिर भी, कई को आगे के अध्ययन पर पूरी तरह या आंशिक रूप से खारिज कर दिया गया है। क्या बदल गया? यह बाइबिल थी या मनुष्य की व्याख्या? क्या अब हम पूरी सच्चाई जानते हैं? क्या हम आने वाली पीढ़ियों में परमेश्वर के साथ संगति की शर्तों को इतनी मजबूती से पकड़े हुए हैं कि गलत साबित होंगे? क्या हमारे विश्वास इतने अंतिम हैं कि हम सीखने से परे हैं? ईसा मसीह का सुसमाचार या सुसमाचार है:

एक। परमेश्वर, नासरत के यीशु के रूप में, मानव था लेकिन बिना पाप के, चढ़ाया गया

उसका भौतिक शरीर परमेश्वर को लहू के बलिदान, पाप-बलि के रूप में, पाप को हटाने के लिए।

बी। उसका दफनाना और बाद में पुनरुत्थान मृत्यु की जीत थी।

see if my 'Biblical doctrine' can be found and interpreted to conform to my belief and conclusion."

The following is a list of some relative recent teachings staunchly believed and made a test of fellowship. Many of them have been rejected in whole or in part.

- The "emblems" of the Lord's Supper must be covered.
- The bread used in the Lord's Supper must be made from wheat flour, broken after prayer and before distributing to the members to partake.
- The Cup, fruit of the vine, must be fermented wine.
- Only one cup can be used not individual cups.
- Bible classes divide the church, therefore cannot be practiced.
- Singing as worship to God must not include a musical instrument or in harmony but chants.
- Women must have their head covered with something other than their hair when assembled.
- Women cannot cut or trim their hair.
- Congregations of Christians cannot own buildings.
- Meals cannot be eaten within the "church building."
- Owning gym, family life centers and camps are sinful.
- Christians cannot participate in Christmas.
- Mixed swimming cannot be tolerated as it is sinful.
- Dancing of any kind is sinful.
- Participating in government, even voting is sinful.
- Serving in the armed forces is sinful.
- Donations to church affiliated schools and colleges are sinful.
- Using any literature other than the Bible is wrong.
- The name of the church must be " _____ " without any location.
- Drinking any alcoholic beverage is sinful.
- Using tobacco of any kind is sinful.
- Marriage among races is not biblical.
- The Bible prohibits Christians owning slaves.
- Churches cannot incorporate in any endeavor.

सी। उसका स्वर्गारोहण परमेश्वर, पिता के साथ अपने पिछले निवास स्थान पर वापस आ गया।

जो लोग उसकी मृत्यु में गाड़े जाने के द्वारा उस पर भरोसा रखते हैं वे नए आत्मिक प्राणियों के रूप में पुनरुत्थित होते हैं। वे केवल मसीह और उनके प्रेरितों की शिक्षाओं (सिद्धांतों) में रहने (चलने) के द्वारा भगवान की समानता, छवि और प्रकृति में विकसित होते हैं और मसीह में भगवान और अन्य सभी के साथ संगति में हैं, भले ही उनकी कुछ शिक्षाओं पर कुछ अलग समझ हो सुसमाचार की तुलना में।

हमें लगन से शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए, उनकी सच्चाइयों को स्वीकार करना चाहिए और जहां भी वह हमें ले जाए, उनका पालन करने के लिए तैयार रहना चाहिए.

अध्याय 7

सारांश

b.

सुधारकों की कुछ शिक्षाएँ और प्रथाएँ

4. वाईक्लिफ
 1. मसीह चर्च का प्रमुख है
 2. कलीसिया के अगुवों को नैतिक पुरुष होना चाहिए - पद खरीदना नहीं
 3. बाइबिल मनुष्य के लिए एकमात्र अधिकार है - कैथोलिक चर्च नहीं
 4. चर्च के नेताओं के केवल दो आदेश - बुजुर्ग और डीकन
5. लूथर
 1. केवल बाइबिल ही एक ईसाई के लिए अंतिम अधिकार है

मरम्मत

18वीं शताब्दी के अंत के बारे में कई धार्मिक नेता एक-दूसरे से स्वतंत्र होकर यह सवाल करना शुरू कर देते हैं कि उनके पंथों में इतने सारे संघों में इतने सारे अलग-अलग शिक्षण और प्रथाएं कैसे बाइबिल की चर्च हैं। उन्होंने तर्क दिया कि परमेश्वर एकता चाहता है तो क्यों हर कोई मनुष्य के लिए परमेश्वर के निर्देश को खोजने के लिए सिर्फ बाइबल और बाइबल की ओर ही नहीं मुड़ सकता। वास्तव में, यह लूका 8 में बोलने वाले के दृष्टान्त का अर्थ प्रतीत होता है। मनुष्यों और उनके पंथों और सिद्धांतों के नियंत्रण से मुक्त, यह आज्ञाकारी लोगों, ईसाइयों, यीशु द्वारा स्थापित चर्च का उत्पादन करेगा।

- Congregations cannot employ a preacher on a regular basis.
- Multiple song leaders at a time is entertainment therefore sinful.

Many devout people, past and present, believe their interpretations were the exact will of God. Yet, many have been rejected in whole or in part upon further study. What changed? Was it the Bible or man's interpretation? Do we NOW know ALL the TRUTH? Will what we so firmly hold as conditions of fellowship with God be proven wrong in generations to come? Are our beliefs so FINAL that we are beyond learning?

The Gospel or Gospel of Christ is:

- God, as Jesus of Nazareth, was human but without sin, offered His physical body to God as the blood sacrifice, sin-offering, for the removal of sin.
- His burial and subsequent resurrection was victory of death.
- His ascension back to His previous abode with God, the Father.

Those who put their trust in Him by being buried into His death are resurrected as new spiritual beings. They grow into the likeness, image and nature of God by living (walking in) the teachings (doctrines) of Christ and His Apostles only and are in fellowship with God and all others in Christ even if they have some different understanding on some teaching other than the Gospel.

We must diligently study scripture, accept its truths and be willing to follow it wherever it leads us.

Chapter 7

Summary

a.

Some Teachings and practices of Reformers

- Wycliffe
 - Christ is the head of the Church
 - Church Leaders must be moral men – not purchase position
 - Bible is sole authority for man – not Catholic Church
 - Only two orders of church leaders – elders and deacons

बहाली आंदोलन का मर्म विश्वासियों को एकजुट करना था:

- धर्म को लागू करने के लिए सरकार का उपयोग करना बंद करें
- शास्त्र का ही प्रयोग करें। सभी मानव पंथों और हठधर्मिता को अस्वीकार करें
- ईश्वर और मनुष्य के प्रेम को प्राप्त करें और बनाए रखें

इस आन्दोलन के दौरान विभिन्न अगुवों ने मसीह में विश्वासियों के लिए उनमें एक होने की आवश्यकताओं की अपनी समझ की पेशकश की

लोके

- राज्य धर्म को स्थापित करने और लागू करने के लिए सरकार के माध्यम से चर्च के अधिकार को अस्वीकार कर दिया
- बाइबल आवश्यक मान्यताओं का एक समूह प्रदान करती है जिस पर सभी उचित लोग सहमत हो सकते हैं:
 - यीशु का मसीहापन
 - यीशु की सीधी आज्ञा
- गैर-जरूरी बातें जिन पर ईसाई असहमत हैं उन्हें दूसरों पर थोपा नहीं जाना चाहिए

वेस्ले

एक। गैर-आवश्यक सिद्धांत पर असहमत होने के लिए सहमत
बी। गैर-जरूरी चीजों के बारे में लड़ना और बहस करना बंद करें

अलग बैपटिस्ट

एक। सभी पंथों को अस्वीकार करें और केवल बाइबल को आदर्श नियम के रूप में उपयोग करें, लेकिन पैटर्न पर पूर्ण सहमति की आवश्यकता के बिना
बी। सटीक विवरण से बचें क्योंकि यह वैधानिकता और विभाजन की ओर ले जाता है

लैंडमार्क बैपटिस्ट

एक। बाइबिल बिना किसी विचलन की अनुमति के एक सटीक खाका है
बी। ब्लूप्रिंट से भटकाव व्यक्ति को सच्चे चर्च से दूर रखता है

ओ'केली/हैगार्ड

एक। कलीसिया का एकमात्र मुखिया मसीह है
बी। ईसाई नाम ही एकमात्र स्वीकार्य नाम है
सी। बाइबिल विश्वास का एकमात्र नियम है

3. Luther

1. Bible alone constitutes final authority for a Christian

Restoration

About the turn of the 18th century several religious leaders independent of each other begin to question how so many differing teaching and practices set forth in so many associations in their creeds all be the church of the Bible. They reasoned that God wanted unity so why could not everyone just turn to the Bible and the Bible alone to find God's instruction to man. In fact, this appears to be the meaning of the parable of the sower in Luke 8. By returning to the Word and planting it in good and honest hearts, free from control of men and, their creeds and doctrines, it will produce obedient people, Christians, the church Jesus established.

The heart of the restoration movement was to unite believers:

4. Cease to use government to enforce religion
5. Use scripture alone. Reject all human creeds and dogma
6. Obtain and retain love of God and man

During this movement various leaders offered their understanding of the requirements for believers in Christ to become united in Him

Locke

- f. Rejected the right of church through government to establish and enforce a state religion
- g. The Bible supplies a set of essential beliefs upon which all reasonable people can agree:
 - i. The messiahship of Jesus
 - ii. Jesus' direct commands
- h. Non essentials upon which Christians disagree should not be forced upon others

Wesley

- a. Agree to disagree on non-essential doctrine
- b. Cease fighting and arguing about the non-essentials

Separate Baptists

- a. Reject all creeds and use only the Bible as the perfect rule but without requiring complete agreement on pattern

s. ख्रीस्तीय चरित्र ही कलीसिया की संगति की एकमात्र कसौटी है

t. निजी निर्णय का अधिकार सभी का विशेषाधिकार है।

बार्टन स्टोन

एक। सामूहिक शासन

बी। प्रारंभिक चर्च की जीवन शैली को पुनर्स्थापित करना जो रूप और संरचनाओं के बजाय पवित्र और धर्मी जीवन है

सी। एक विशेष अभ्यास [एक अनुष्ठान के रूप में] के जोर से मसीह में स्वतंत्रता अधिक महत्वपूर्ण है।

कैम्पबेल

v. मूल / आवश्यक मान्यताओं में स्वीकृत उदाहरण जोड़ा गया।

w. बाइबिल तथ्यों की एक पुस्तक (राय, सिद्धांत, अमूर्त सत्य या मौखिक परिभाषा नहीं) और इन तथ्यों पर एक तर्कसंगत विश्वास तैयार और परिभाषित किया जाना था।

x. सामूहिक स्वायत्तता

y. प्रत्येक मंडली में बड़ों की बहुलता

z. साप्ताहिक कम्युनिकेशन और

aa. पापों की क्षमा के लिए विश्वासियों का विसर्जन

bb. इस प्रकार भगवान कहते हैं,

धर्मसंघों

एक। लोगों को रूपांतरण अनुभव की आवश्यकता थी इस लंबी अवधि के दौरान, वे कई मायनों में भिन्न थे, कुछ अतीत की शिक्षाओं और प्रथाओं के बंधनों को काटने के लिए अनिच्छुक थे, फिर भी उन्होंने माना कि उनका वर्तमान "चर्च" उस चर्च की तरह नहीं था जिसके बारे में वे अपनी बाइबिल में पढ़ते हैं।

बहुत से नहीं तो इनमें से अधिकांश सुधारकों और पुनर्स्थापनवादियों में एक बात समान थी कि वे या तो सुधार करना चाहते थे, बाइबिल के चर्च में पुनर्स्थापित करना या वापस लौटना चाहते थे और अन्य सभी विश्वासियों के साथ एकजुट होना और केवल ईसाई होना चाहते थे।

एक समय के लिए एकता थी, लेकिन विविध और ध्रुवीकरण करने वाली राय उभरी:

- बाइबिल एक ब्लूप्रिंट, संविधान या पैटर्न है जहां विवरण पर पूर्ण सहमति की आवश्यकता नहीं है। मसीह में उन लोगों के लिए जो मनुष्यों के बीच और परमेश्वर के सामने धार्मिक रूप से रह रहे हैं, रूप, संरचना और सटीक समझ का पालन करने से अधिक महत्वपूर्ण था।
- बाइबल एक सटीक खाका है जिसका पालन बिना किसी विचलन के किया जाना चाहिए। जो लोग सटीक ब्लूप्रिंट

- b. Avoid precise detail as it leads to legalism and division

Landmark Baptists

- a. The Bible is a precise blueprint without any deviations allowed
- b. Deviation from blueprint keeps one from true church

O'Kelly/Haggard

- a. Christ is the only head of the church
- b. The name Christian is the only acceptable name
- c. The Bible is the only rule of faith
- i. Christian character is the only test of church fellowship
- j. The right of private judgment is the privilege of all.

Barton Stone

- a. Congregational governance
- b. Restoring lifestyle of early church that is holy and righteous living rather than or over form and structures
- c. Freedom in Christ is more important than emphasis of a particular practice [as a ritual].

Campbell

- h. Approved precedent added to core /essential beliefs.
- i. Bible a book of facts (not opinions, theories, abstract truths or verbal definitions) and a rational faith was to be formulated and defined upon these facts.
- j. Congregational autonomy
- k. A plurality of elders in each congregation
- l. Weekly communion and
- m. Immersion of believers for the remission of sins
- n. Thus saith the Lord,

Congregationalists

a. People needed a conversion experience
During this long period of time, they differed in many ways some unwilling to cut the ties of past teachings and practices yet, they recognized their current "church" was not like the church they read about in their Bible.

Many if not most of these reformers and restorationists had one thing in common they wanted to either reform, restore or return to the

की नेताओं की व्याख्या से विचलित होते हैं, उनकी संगति नहीं की जानी चाहिए। नतीजतन, ब्लूप्रिंट की सटीकता को लगातार परिभाषित किया जाता है जो असहमति और अधिक अलगाव की ओर ले जाता है।

एकजुट रहना है और संगति में, मुद्दों को प्रार्थनापूर्वक हल किया जाना चाहिए:

16. समझ की सटीकता की डिग्री कौन तय करता है कि किसी को संगति में रहना चाहिए - भगवान या मनुष्य?
17. क्या कोई गैर-सुसमाचार शिक्षण पर व्याख्या करता है परमेश्वर या किसी अन्य ईसाई के साथ दूसरे की संगति निर्धारित करें?
18. क्या कोई परमेश्वर के साथ संगति में हो सकता है परन्तु मसीह में दूसरों के साथ नहीं?
19. यदि किसी विषय पर बाइबल मौन है तो क्या उस मौन के लिए किसी चीज़ की आवश्यकता है या इसे प्रतिबंधित करती है? इसी तरह, जब बाइबल कुछ निर्दिष्ट करती है तो उसे न तो किसी और चीज़ की आवश्यकता होती है और न ही उसे प्रतिबंधित करती है।
20. चर्च फादर, सुधारकों, पुनर्स्थापनवादियों या आज के लेखकों के लेखन भगवान या उनके बच्चों के साथ मनुष्य की संगति की स्थिति नहीं हो सकते।

कुछ सफलता प्राप्त करने के बाद भी, 100 ईस्वी के बाद उनके पूर्वजों की तरह, यह लंबे समय तक नहीं था कि वे अतीत के सिद्धांतों को स्वीकार करने और नए पंथों को स्थापित करने या पुराने को फिर से स्थापित करने लगे।

निष्कर्ष

ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे इतिहास में एक सामान्य सूत्र चल रहा है। प्रत्येक पीढ़ी पिछली पीढ़ी के विश्वासों और विचारों पर आधारित होती है। नेता और या लेखक अपने निष्कर्ष रिकॉर्ड करते हैं जो अगली पीढ़ी पर आधारित होते हैं। कुछ स्वीकार किए जाते हैं अन्य शायद उनकी पूर्व समझ और अवधारणाओं के आधार पर अस्वीकार करते हैं। यह प्रक्रिया चिकित्सा, कंप्यूटर, रसायन विज्ञान, भौतिकी और गणित जैसे अज्ञात दुनिया में नितांत आवश्यक है जहां न तो कोई मानक है और न ही कभी प्रकट हुआ है। इसलिए, ज्ञान का प्रत्येक भाग एक बिल्डिंग ब्लॉक है।

इस अध्ययन से पता चला है कि उनकी पीढ़ी के लोग और नेता परमेश्वर के वचनों के गहन अध्ययन पर भरोसा करने के

church of the Bible and to be united with all other believers and to be Christians only.

There was unity for a time, but diverse and polarizing opinions emerged:

- The Bible is a blueprint, constitution or pattern where **complete agreement on details is not required**. For those IN CHRIST living righteously among men and before God was more important than adhering to form, structure and precise understanding.
- The Bible is a **precise blueprint that must be followed without deviation**. Those who deviate from the leaders' interpretation of the precise blueprint are not to be fellowshiped. Consequently, there is a continual defining the preciseness of the blueprint which leads to disagreement and more separation.

To remain united and in fellowship, issues must be prayerfully resolved:

6. Who decides the degree of preciseness of understanding one must have to remain in fellowship - God or Man?
7. Does one's interpretation on some non-gospel teaching determine another's fellowship with God or another Christian?
8. Can one be in fellowship with God but not with others in Christ?
9. If the Bible is silent on a subject does that silence require a thing or prohibit it? Likewise, when the Bible specifies something it neither requires or prohibits something else.
10. The writings of church fathers, reformers, restorationists or today's authors cannot be a condition of man's fellowship with God or His children.

Even after achieving some success, it was not long, like their forefathers after 100 AD, that they began to drift and accept doctrines of the past and establish new creeds or reestablish old ones.

Conclusion

बजाय अतीत के "विद्वान पुरुषों" के विचारों को स्वीकार करते हैं। अवलोकन करना।

28. जस्टिन शहीद सुकरात और प्लेटो के शिष्य थे और ऐसा प्रतीत नहीं होता था कि शास्त्रों के संबंध में उन्होंने स्वयं को बहुत अच्छी तरह से तैयार किया है।
29. लियोन्स के इरेनायस ने द शेफर्ड ऑफ हेर्मस पर धर्मग्रंथ के रूप में भरोसा किया।
30. ऑरिजन ने हिब्रू के अपने ज्ञान से सेप्टुआजेंट को सही किया। लेकिन उनके स्टोइक, नियो-पाइथागोरियन और प्लेटोनिक विश्वासों ने उनके तर्क को धूमिल कर दिया।
31. एम्ब्रोस का धर्मशास्त्र ओरिजन से काफी प्रभावित था।
32. ऑगस्टाइन ने सिसरो की प्रशंसा की और उन्हें अन्य सभी प्राचीन लेखकों से ऊपर रखा और आत्मा और शरीर विश्वास की अपनी दोहरी प्रणाली को बनाए रखा।
33. वाईक्लिफ ने बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद करने में जेरोम के त्रुटिपूर्ण लैटिन वर्गोट पर भरोसा किया, जो शायद उसके लिए उपलब्ध था।
34. लूथर को हर चीज़ पर शक करना और उसकी जाँच करना सिखाया गया था, लेकिन फिर भी उसने बहुत सी "चर्च फादर्स" की शिक्षाओं को स्वीकार किया।
35. जॉन केल्विन अक्सर ऑगस्टाइन और एम्ब्रोस की शिक्षाओं को उद्धृत करते थे।
36. जॉन लोके की शिक्षाओं ने थॉमस और अलेक्जेंडर कैंपबेल को प्रभावित किया।

मसीह में विश्वासियों को उनके द्वारा मसीह को नकारने और किसी अन्य सुसमाचार को स्वीकार करने या किसी अन्य धार्मिक सिद्धांत के अनुरूप होने के लिए सताया गया था, जैसे; ए) यहूदी धर्म, बी) इंपीरियल रोम के अधीन बुतपरस्त या सम्राट पूजा, सी) मध्य या अंधेरे युग के दौरान और बाद में कैथोलिक धर्म या डी) सुधार और बहाली युग में कैथोलिक धर्म और प्रोटेस्टेंटवाद।

ईश्वरीय रूप से प्रकट ज्ञान पर भरोसा करके कोई व्यक्ति ईश्वर की इच्छा के बारे में अधिक सटीक ज्ञान और समझ प्राप्त कर सकता है।

सैकड़ों वर्षों के दौरान उत्पीड़न के माध्यम से कई लोगों ने केवल बाइबल का उपयोग करके परमेश्वर के पास लौटने का प्रयास किया है। पिछले 200 वर्षों में राय या व्याख्या में कई मतभेद देखे गए हैं, जो कि प्रकट सत्य के रूप में एक ही स्थिति में रखे जाने पर नए धार्मिक संगठनों के रूप में सामने आए हैं।

There appears to be a common thread running throughout history. Each generation draws upon the beliefs and thoughts of past generation. Leaders and or writers record their conclusions which the next generation draws upon. Some are accepted others reject probably based upon their prior understandings and concepts. This process is absolutely necessary in the world of the unknown such as medicine, computers, chemistry, physics and math where there is not nor has ever been a revealed standard. Therefore, each piece of knowledge is a building block.

This study has shown that men and leaders of their generation tend to accept the opinions of "learned men" of the past rather than relying on a thorough study of the words from God. Observe.

10. Justin Martyr was a disciple of Socrates and Plato and did not appear to have prepared himself very well in regard to the scriptures.
11. Irenaeus of Lyons relied upon *The Shepherd of Hermas* as scripture.
12. Origen corrected the Septuagint from his knowledge of Hebrew. But his Stoic, Neo-Pythagorean and Platonic beliefs clouded his reasoning.
13. Ambrose's theology was significantly influenced by that of Origen.
14. Augustine admired Cicero and ranked him above all other ancient writers and retained his dual system of the soul and body belief.
15. Wycliffe relied upon Jerome's flawed Latin Vulgate in translating the Bible into English, which may have been all that was available to him.
16. Luther was taught to be suspicious of and to test everything but still accepted much of the "church fathers" teachings.
17. John Calvin often quoted the teachings of Augustine and Ambrose.
18. John Locke's teachings influenced Thomas and Alexander Campbell.

Believers in Christ were persecuted for their refusal to deny Christ and accept another Gospel or to conform to some other religious doctrine, such as; a) Judaism, b) Pagan or Emperor Worship while under Imperial Rome, c) Catholicism during and after the

किसी को यह निर्धारित करने की आवश्यकता है कि क्या वे खुद से पूछकर समस्या का हिस्सा हैं "क्या मैंने व्यक्तिगत रूप से शास्त्रों को यह निर्धारित करने के लिए खोजा है कि यह मेरे निष्कर्ष पर पहुंचने में क्या कहता है? या, क्या मैंने यह देखने के लिए बाइबल की खोज की है कि क्या मेरा 'बाइबिल सिद्धांत' पाया जा सकता है और मेरे विश्वास और निष्कर्ष के अनुरूप व्याख्या की जा सकती है।

निम्नलिखित कुछ अपेक्षाकृत हालिया शिक्षाओं की सूची है जिन पर दृढ़ता से विश्वास किया गया और संगति का परीक्षण किया गया। उनमें से कई को पूरी तरह या आंशिक रूप से खारिज कर दिया गया है।

- प्रभु भोज के "प्रतीक" अवश्य ढके होने चाहिए।
- प्रभु-भोज में उपयोग की जाने वाली रोटी को प्रार्थना के बाद और सदस्यों को खाने के लिए बांटने से पहले, गेहूं के आटे से बनाया जाना चाहिए।
- प्याला, दाखलता का फल, किण्वित दाखरस होना चाहिए।
- केवल एक कप का उपयोग किया जा सकता है न कि अलग-अलग कपों का।
- बाइबिल कक्षाएं चर्च को विभाजित करती हैं, इसलिए अभ्यास नहीं किया जा सकता है।
- भगवान की पूजा के रूप में गायन में एक संगीत वाद्ययंत्र या सामंजस्य शामिल नहीं होना चाहिए बल्कि मंत्रों का उच्चारण करना चाहिए।
- इकट्ठे होने पर महिलाओं को अपने सिर को अपने बालों के अलावा किसी और चीज़ से ढकना चाहिए।
- महिलाएं अपने बालों को कट या ट्रिम नहीं कर सकती हैं।
- ईसाइयों की मंडलियां इमारतों का मालिक नहीं हो सकतीं।
- "चर्च भवन" के भीतर भोजन नहीं किया जा सकता है।
- जिम, पारिवारिक जीवन केंद्र और शिविरों का मालिक होना पाप है।
- ईसाई क्रिसमस में भाग नहीं ले सकते।
- मिश्रित तैराकी को सहन नहीं किया जा सकता क्योंकि यह पापपूर्ण है।
- किसी भी प्रकार का नृत्य करना पाप है।
- सरकार में भाग लेना, मतदान करना भी पाप है।
- सशस्त्र बलों में सेवा करना पाप है।
- चर्च से संबद्ध स्कूलों और कॉलेजों को दान देना पापपूर्ण है।
- बाइबल के अलावा किसी और साहित्य का इस्तेमाल करना गलत है।
- चर्च का नाम बिना किसी स्थान के " _____ " होना चाहिए।

Middle or Dark ages or d) Catholicism and Protestantism in the Reformation and Restoration eras.

By relying upon divinely revealed knowledge one can obtain a more accurate knowledge and understanding of the will of God.

During hundreds of years through persecution many have attempted to return to God using only the Bible. The last 200 years or so has seen many differences in opinion or interpretation which when put on the same standing as revealed truth has resulted in new religious organizations. One needs to determine if they are part of the problem by asking themselves **“Have I personally searched the scriptures to determine what it states in reaching my conclusions? Or, have I searched the Bible to see if my ‘Biblical doctrine’ can be found and interpreted to conform to my belief and conclusion.”**

The following is a list of some relative recent teachings staunchly believed and made a test of fellowship. Many of them have been rejected in whole or in part.

- The “emblems” of the Lord’s Supper must be covered.
- The bread used in the Lord’s Supper must be made from wheat flour, broken after prayer and before distributing to the members to partake.
- The Cup, fruit of the vine, must be fermented wine.
- Only one cup can be used not individual cups.
- Bible classes divide the church, therefore cannot be practiced.
- Singing as worship to God must not include a musical instrument or in harmony but chants.
- Women must have their head covered with something other than their hair when assembled.
- Women cannot cut or trim their hair.
- Congregations of Christians cannot own buildings.
- Meals cannot be eaten within the “church building.”
- Owning gym, family life centers and camps are sinful.

- कोई भी मादक पेय पीना पाप है।
- किसी भी तरह के तंबाकू का सेवन पाप है।
- जातियों के बीच विवाह बाइबिल नहीं है।
- बाइबिल ईसाइयों को गुलाम रखने से मना करता है।
- चर्च किसी भी प्रयास में कॉर्पोरेट नहीं कर सकते।
- मण्डली नियमित रूप से एक उपदेशक को नियुक्त नहीं कर सकती है।
- एक समय में कई गाने वाले नेता मनोरंजन हैं इसलिए पापी हैं।

अतीत और वर्तमान के कई भक्त लोग मानते हैं कि उनकी व्याख्याएँ परमेश्वर की सटीक इच्छा थीं। फिर भी, कई को आगे के अध्ययन पर पूरी तरह या आंशिक रूप से खारिज कर दिया गया है। क्या बदल गया? यह बाइबिल थी या मनुष्य की व्याख्या? क्या अब हम पूरी सच्चाई जानते हैं? क्या हम आने वाली पीढ़ियों में परमेश्वर के साथ संगति की शर्तों को इतनी मजबूती से पकड़े हुए हैं कि गलत साबित होंगे? क्या हमारे विश्वास इतने अंतिम हैं कि हम सीखने से परे हैं? ईसा मसीह का सुसमाचार या सुसमाचार है:

एक। परमेश्वर, नासरत के यीशु के रूप में, मानव था लेकिन बिना पाप के, चढ़ाया गया

उसका भौतिक शरीर परमेश्वर को लहू के बलिदान, पाप-बलि के रूप में, पाप को हटाने के लिए।

बी। उसका दफनाना और बाद में पुनरुत्थान मृत्यु की जीत थी।

सी। उसका स्वर्गारोहण परमेश्वर, पिता के साथ अपने पिछले निवास स्थान पर वापस आ गया।

जो लोग उसकी मृत्यु में गाड़े जाने के द्वारा उस पर भरोसा रखते हैं वे नए आत्मिक प्राणियों के रूप में पुनरुत्थित होते हैं। वे केवल मसीह और उनके प्रेरितों की शिक्षाओं (सिद्धांतों) में रहने (चलने) के द्वारा भगवान की समानता, छवि और प्रकृति में विकसित होते हैं और मसीह में भगवान और अन्य सभी के साथ संगति में हैं, भले ही उनकी कुछ शिक्षाओं पर कुछ अलग समझ हो सुसमाचार की तुलना में।

हमें लगन से शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए, उनकी सच्चाइयों को स्वीकार करना चाहिए और जहां भी वह हमें ले जाए, उनका पालन करने के लिए तैयार रहना चाहिए.

- Christians cannot participate in Christmas.
- Mixed swimming cannot be tolerated as it is sinful.
- Dancing of any kind is sinful.
- Participating in government, even voting is sinful.
- Serving in the armed forces is sinful.
- Donations to church affiliated schools and colleges are sinful.
- Using any literature other than the Bible is wrong.
- The name of the church must be “ _____ ” without any location.
- Drinking any alcoholic beverage is sinful.
- Using tobacco of any kind is sinful.
- Marriage among races is not biblical.
- The Bible prohibits Christians owning slaves.
- Churches cannot incorporate in any endeavor.
- Congregations cannot employ a preacher on a regular basis.
- Multiple song leaders at a time is entertainment therefore sinful.

Many devout people, past and present, believe their interpretations were the exact will of God. Yet, many have been rejected in whole or in part upon further study. What changed? Was it the Bible or man’s interpretation? Do we NOW know ALL the TRUTH? Will what we so firmly hold as conditions of fellowship with God be proven wrong in generations to come? Are our beliefs so FINAL that we are beyond learning?

The Gospel or Gospel of Christ is:

- a. God, as Jesus of Nazareth, was human but without sin, offered
 His physical body to God as the blood sacrifice, sin-offering, for the removal of sin.
- b. His burial and subsequent resurrection was victory of death.
- c. His ascension back to His previous abode with God, the Father.

Those who put their trust in Him by being buried into His death are resurrected as new spiritual beings. They grow into the likeness, image and nature of God by living (walking in) the teachings (doctrines) of Christ and His Apostles only and are in fellowship with God and all others in Christ even if they have some different understanding on some teaching other than the Gospel.

We must diligently study scripture, accept its truths and be willing to follow it wherever it leads us.